وقف لله تعالى لا يجوز بيعه

مترجم إلى اللغة الهندية

شرح متن
الدُّروس المهمَّة لعامَّة الأمَّة
आम जनता के लिए महत्वपूर्ण पाठ

लेखक: शैख इमाम अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज (رحمه الله)

व्याख्याकर्ता:

शैख हैथम बिन मुहम्मद जमील सरहान (حفظه الله)

पूर्व शिक्षक अल-हरम शिक्षण संस्थान, मस्जिदे नबवी

हिंदी अनुवाद:

डॉ. मुजाहिदुल इस्लाम मदनी

شرح متن

الدُّروس المهمَّة لعامَّة الأمَّة

आम जनता के लिए महत्वपूर्ण पाठ

लेखक: शैख इमाम अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज(رحمه الله)

व्याख्याकर्ता:

शैख हैथम बिन मुहम्मद जमील सरहान(حفظه الله)

पूर्व शिक्षक अल-हरम शिक्षण संस्थान, मस्जिदे नबवी

हिंदी अनुवाद:

डॉ. मुजाहिदुल इस्लाम मदनी

الطَّبعة الأولى

جميع الحقوق محفوظةٌ

إلَّا من أراد طبعه أو ترجمته لتوزيعه مجَّانًا بعد مراجعة المؤلِّف

الرَّجاء التَّواصل على:

islamtorrent@gmail.com

mujahidulislam74@yahoo.com

लेखक के प्रस्तावना की व्याख्या

शैख व इमाम अब्दुल-अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज(رحمه الله)ने फरमाया:
सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहाँ का रब है। और अच्छा परिणाम उनके लिए जो परहेजगार हैं, और दुरूद व सलाम नाजिल हों उनके बन्दे और रसूल, हमारे नबी मोहम्मद(ﷺ)पर, और उनके परिवार व साथियों पर, इसके बाद..
ये कुछ संक्षिप्त बातें हैं, जिसमें उन चीजों की व्याख्या व वर्णन है, जिसे आम जनता को दीने इस्लाम के संबंध में जानना जरुरी है, इसी लिए हमने इसका नाम: "आम जनता के लिए महत्वपूर्ण पाठ" रखा है, अल्लाह से दुआ है कि इस किताब को मुसलमानों के लिए लाभकारी बनाए, और मेरी तरफ से इस विनम्र कार्य को कबूल फरमाये, बेशक वे उदारवादी और करम करने वाले हैं।

अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज।

हम यह किताब (महत्वपूर्ण पाठ) क्यों पढ़ें?

क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है, जैसे कि लेखक ने उसका नाम ही रखा है, और उलेमा ने उसे पढ़ने की नसीहत की है।
अगर कोई कहे कि यह किताब आम जनता के लिए है, और मैं तो तालिबे इल्म हुं, मेरा दर्जा उन से ऊपर है।
जवाब: हम उससे इस किताब में मौजूद ज्ञान के बारे में प्रश्न करेंगे, अगर उसे पता ना हो, तो मानना पड़ेगा कि आम जनता उस से बेहतर है। और तालिबे इल्म को चाहिए कि विनम्र रहे, और इल्म व उलेमा पर श्रेष्ठता ना दिखाए, और परहेजगार उलेमा के नक्शे कदम पर चले। सहीह बुखारी में आया है कि मुजाहिद(رحمه الله)ने फरमाया: शर्मीला और अहंकारी व्यक्ति ज्ञान अर्जित नहीं कर सकता।

इस किताब(महत्वपूर्ण पाठ) में किन चीजों का बयान है?

1- इस चीज का बयान है कि हमारे नेक पूर्वजों का बरताव कुरआन के साथ कैसा था, उसे पढ़ने, हिफ्ज करने, गौर व फिक्र, व अमल करने में।

2- इस किताब में इस्लाम, ईमान, इहसान, तौहीद और शिर्क के प्रकारों का व्याख्या व वर्णन है।

3- इसमें नमाज की व्याख्या व वर्णन है।

4- इसमें वुजू की व्याख्या व वर्णन है।

5- इसमें दीनी अख्लाक को अपनाने, और इसलामी स्वभाव में खुद को ढालने का बयान है।

6- इसमें शिर्क और तमाम प्रकार की बुराइयों से डराया गया है।

7- इसमें मृतकों के कफन दफन, नमाजे जनाजा, और दफनाने की विधि का बयान व वर्णन है।

उलेमा अपनी किताबों को बिस्मिल्लाह से क्यों आरंभ करते हैं

- कुरआने करीम और नबीयों व रसूलों के हुक्म का पालन करते हुए।
- उस हदीस का सहारा लेते हुए जिस में यह कहा गया, कि हर वह काम जो अल्लाह के नाम से शुरू ना किया जाए, वह अधूरा है। अगर चे हदीस जईफ है।
- नेक पूर्वज उलेमा का अनुसरण करते हुए।
- अल्लाह के नाम से बर्कत् व भलाई हासिल करते हुए।

पहला पाठ

सूरह फातिहा और छोटी सुरतों के बारे में

सूरह फातिहा और छोटी सुरतें (यानी सुरा जिल्जाल से सुरा नास् तक) जरुरी है इन को तल्कीन करना, पढ़ाई को शुद्ध कर लेना, हिफ्ज करना, और जहाँ जरुरी हो व्याख्या जान लेना ।

स्पष्टीकरण:

मुनासिब है कि नेक पूर्वजों का अनुसरण करते हुए, हर रोज दस आयतें हिफ्ज की जाएँ, साथ में उसकी व्याख्या किसी अच्छी संक्षिप्त तफ्सीर से पढ़ ली जाए, जैसे तफ्सीरे इब्ने सादी(رحمه الله)। और उस पर अमल करने के लिए आल्लाह से सहायता मांगी जाए।

तालिबे इल्म किस तफ्सीर से शुरु करे?

तालिबे इल्म के लिए मुनासिब है कि शैख अब्दुर रहमान बिन नासिर अस्-सादी की तफ्सीर जिसका पुरा नाम है (तैसीर अल-करीम अर-रहमान फी तफ्सीरे कलामिल-मन्नान) से शुरू करे, अल्लाह उन पर रहम करे और क्षमा प्रदान करे।

क्यों इस तफ्सीर से शुरू करे?

- उलेमाए किराम ने उसे पढ़ने की नसीहत की, और खुद भी उसका पालन किया।
- यह एक संक्षिप्त तफ्सीर है, जिसे पढ़ना एक आरंभिक छात्र के लिए मुनासिब है।
- उसकी इबारत् सहज और स्पष्ट है, जिस में किसी प्रकार की पेचीदगी नहीं है।
- कुरआने करीम पर अमल करने में मदद्गार साबित होगी।
- क्योंकि लेखक ने तौहीद के मुद्दे पर ज्यादा फोकस किया है

कुरआन के साथ बरताव में लोगों के प्रकार:
कुरआन के साथ बरताव में लोग तीन प्रकार के हैं। उग्र रवैया वाले, सुस्ती करने वाले, और बीच वाले

बीच का रवैया वाले:
इस प्रकार के लोग कुरआन को नियमित पढ़ते, हिफ्ज करते, समझते, और अमल करने में अल्लाह से मदद तलब करते हैं। यह नेक पूर्वजों और उनके मानने वालों का तरीका है।

उग्र रवैया वाले:
इस प्रकार के लोग कुरआन पढ़ते और हिफ्ज करते हैं, लेकिन बिना समझे और अमल किये।

सुस्ती करने वाले:
इस प्रकार के लोग कुरआन से दूर रहते हैं, और वह इस तरह होता है:

- कुरआन से शिफा हासिल ना करना
- कुरआन पर अमल ना करना
- कुरआन में गौर व फिक्र ना करना
- कुरआन का हिफ्ज ना करना
- कुरआन का ना पढ़ना

अल्लाह तआला ने फरमाया: (وَقَالَ الرَّسُولُ يَارَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا)
अनुवाद: और रसूल(ﷺ)कहेंगे कि ऐ मेरे पर्वरदिगार, बे शक मेरी कौम ने इस कुरआन को छोड़ रखा था(फुर्कान:30)। और नबी(ﷺ)ने एक शख्स के बारे में फरमाया था कि इस की नस्ल से ऐसे लोग निकलेंगे जो कुरआन की तिलावत् तो खूब करेंगे, लेकिन उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा, वे मुसल्मानों का कत्ल करेंगे, और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे, और इस्लाम से इस तरह दूर भागेंगे जैसे तीर कमान से भागता है,यदि मैंने उनको पा लिया, तो कौमे आद की तरह कत्ल करुंगा। (बुखारी:7432)

अल्लामा अब्दुर रहमान अस्-सादी की किताब (तैसीर अल-करीम अर-रहमान फी तफ्सीरे कलामिल-मन्नान) से चुना हुआ कुछ अंश, और इस पर आधारित प्रश्न व उत्तर।

○○○○○○○○○○

सूरह फातिहा की तफ्सीर, और यह मक्की सूरह है।

﴿ بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ١ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٢ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ٣ مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ٤ إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ ٥ ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ ٦ صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ غَيۡرِ ٱلۡمَغۡضُوبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا ٱلضَّآلِّينَ ٧ ﴾

अनुवाद: शुरु करता हुं अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपाशील तथा दयावान है। सारी प्रशंसाएँ अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारे संसार का रब है। बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है। बदला दिए जाने के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं। हमें सीधे मार्ग पर चला। उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपापात्र हुए, जो न प्रकोप के भागी हुए और न पथभ्रष्ट हुए।

व्याख्या:

(1)अर्थात मैं अल्लाह के हर नाम से शुरु करता हूँ,क्योंकि इस्म(اسم) एकवचन शब्द व मुजाफ है, इसलिए तमाम अस्माए हुस्ना को शामिल है। (الله)अर्थात पुजने व इबादत् करने के योग्य, जो अकेले ही सारी इबादतों का हक्दार है, क्योंकि सिर्फ वही दिव्यता व पूर्णता के गुण रखता है।

(ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ)यह दो नाम हैं, जो इस बात पर दलालत करते हैं, कि अल्लाह महान है, दया करुणा व रहमत का मालिक है, उसकी रहमत हर चीज को घेरा हुआ है। और यह दया, करुणा व रहमत, उसने अपने उन बन्दों के लिए लिख दिया है, जो नबियों व रसूलों का अनुसरण करते हैं। उन के लिए पूरी रहमत है, जबकि उन के सिवा दूसरों के लिए रहमत का कुछ अंश।

मालुम होना चाहिए कि अल्लाह के अस्मा(नामों) व सिफात(गुणों) और अहकामे सिफात पर ईमान लाना, दीन के उन नियमों में शुमार होता है, जिन पर उम्मत के सलफ्(नेक पूर्वजों)व इमामों का इत्तेफाक है। उदाहरण के लिए: वे ईमान रखते हैं कि अल्लाह रहमान है, रहीम है, और रहमत का मालिक है, जो उनकी विशेषता है, जो रहम किये हुए शख्स से जुड़ा है। तमाम नेमतें अल्लाह की रहमत की निशानियाँ हैं, और यही नियम तमाम अस्मा(नामों)पर लागु होता है। तो(العليم)के बारे में कहा जाएगा कि अल्लाह अलीम है, इल्म वाला है, और उस इल्म से हर चीज को जानता है। वह(قدير)है, कुदरत वाला है, और हर चीज पर कुदरत रखता है।

(2)(ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ)यह अल्लाह की प्रशंसा है, पूर्णता के गुणों के जरिए, और उनके उन कार्यों के जरिए, जो पुण्य और न्याय के बीच ही घूमता है। तो इसमें अल्लाह के लिए सभी पहलू से पूर्ण प्रशंसा है। (رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ) रब्ब वह हस्ती होता है जो तमाम जहानों(यानी अल्लाह के सिवा तमाम मख्लूक) की तर्बियत करता है, उन को पैदा करके, उनके लिए सारा सामान तैयार करके, और बड़ी नेमतों से नवाज् कर, जो अगर ना हो तो जीना मुश्किल हो जाए। तो मख्लुक के पास जो भी नेमतें हैं सब अल्लाह की तरफ से हैं। अल्लाह की तर्बियत व पर्वरिश् दो तरह की होती है। आम परवरिश् और खास परवरिश्

आम परवरिश् होती है मख्लूक को पैदा करना,आजीविका का प्रबंध करना, और उन चीजों की तरफ उनका मार्गदर्शन करना, जिनसे वे दुनिया में जीवित व बाकी रह सकें।

खास परवरिश् यह होती है कि अल्लाह अपने नेक बन्दों पर खास ध्यान दे। और ईमान के जरिए उनकी तर्बियत करे, ईमान की तौफीक से नवाजे, और उसे पूर्ण कराये। उन तमाम चीजों को उन से दुर रखे, जो सच्चे मार्ग पर चलने से उनको रोकता है, और अल्लाह व बन्दों के बीच रुकावट बनता है। उसकी हकीकत यह है कि हर भलाई की तौफीक के लिए और हर बुराई से हिफाजत के लिए अल्लाह उनकी पर्वरिश् करे।

शायद यही राज है कि नबियों की अधिकांश दुआएं (रब्ब)शब्द के साथ हैं, क्योंकि उनकी तमाम माँगें खास रुबूबियत(आधिपत्य) के तहत आती हैं। अल्लाह का कलाम(رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ)यह संदेश देता है कि वे अकेले ही निर्माण, प्रबंधन, व नवाजिश् का मालिक है। और वे पूर्ण बे नियाज, और पूरी दुनिया हर एतबार से उनका मोहताज है।

(4)(مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ)मालिक वह व्यक्तित्व है,जो मालिकाना गुणों से भरपूर हो, जिसकी ताकत यह हो कि वह आदेश दे, मना करे, दंडित करे, व इनाम से नवाजे, और अपने मातेहत् पर हर प्रकार का तसर्रुफ् कर सके। और मिल्कियत(स्वामित्व)को कयामत् के दिन के साथ जोड़ा गया, जिस दिन लोगों को अच्छे और बुरे का बदला दिया जायेगा, क्योंकि उस दिन बन्दों के सामने अल्लाह की पूर्ण बाद्शाहत्, इन्साफ्, बुद्धिमत्ता, और बन्दों की स्वामित्व का अंत, पुरी तरह जाहिर हो जाएगा। यहाँ तक कि उस दिन बादशाह, आम नागरिक, गुलाम व आजाद, सब बराबर होंगे। उस रोज तमाम मख्लूक उसकी महानता के सामने आज्ञाकारी बने रहेंगे, और बदले का इंतजार कर रहे होंगे, इनाम के उम्मीदवार, व सजा से भयभीत होंगे। इसी वजह से उस दिन की स्वामित्व का खास जिक्र हुआ, अगरचे अल्लाह कयामत के दिन और बाकी दिनों के भी मालिक हैं।

(5) إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ यानी इबादत् और सहायता माँगने में सिर्फ और सिर्फ तुझे खास करते हैं, क्योंकि नहवी व्याकरणानुसार मामूल का पहले आना सीमीत होने का फायदा देता है, यानी उल्लेखित के लिए हुक्म साबित करना, और दूसरों से संपूर्ण मनाही करना। गोया कि बन्दा कह रहा है, कि हम तेरी ही इबादत् करते हैं, और तेरे सिवा किसी और की इबादत् नहीं करते, और सिर्फ तुझ से ही मदद् माँगते हैं, और तेरे सिवा किसी और से मदद् नहीं माँगते। इबादत् को तलबे मदद् से पहले जिक्र करना, आम को खास से आगे करना है। और इसी तरह अल्लाह के हक् को बन्दे के हक् से पहले बयान करना है।

और इबादत कहते हैं उन तमाम जाहिरी और छिपे हूए कार्यों और बातों के समूह को, जिसे अल्लाह पसन्द करता और उससे राजी होता है। और(استعانة)कहते हैं, लाभ हासिल करने, और नुक्सान को दूर करने में अल्लाह पर पूरी तरह निर्भरता को, साथ में उसके हासिल होने का पूरा भरोसा हो। अल्लाह की इबादत् करना और उनसे मदद् तलब करना स्थायी खूशी की गारंटी, और सारी बुराई से बचने का एकमात्र साधन है, और इन दोनों से ही नजात का रास्ता हासिल किया जा सकता है। और इबादत् सिर्फ उसी वक्त इबादत् कहलाएगी, जब वह नबी(ﷺ)के बताए हुए विधिअनुसार किया गया हो,और अल्लाह की रजामंदी के लिए किया गया हो। इन दोनों शर्तों से ही इबादत् सही हो सकती है। इबादत के बाद मदद माँगने का जिक्र हुआ, जबकि वह उसी में दाखिल है, तो वह इसलिए हुआ कि बन्दे को हर इबादत् में मदद् माँगने की जरूरत पड़ती है, क्योंकि अगर अल्लाह उसकी मदद् ना करे, तो वह सब कुछ नहीं कर सकता, जो वह करना चाहता है, यानी नेकी के कार्य, और बुराई से परहेज।

(6)फिर अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया:(ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ)हम सबको सीधे मार्ग पर चला: अर्थात हमें सीधे पथ पर चलने का रास्ता दिखा, और उसकी तौफीक भी प्रदान कर। और(ٱلۡمُسۡتَقِيمَ)उस मार्ग को कहते हैं जो अल्लाह और उसकी जन्नत तक ले जाए। और यह हक को जानने और उस पर अमल करने का नाम है। सीधे मार्ग की तरफ हिदायत का मतलब इस्लाम धर्म को मजबूती से पकड़ना, और उसके सिवा अन्य धर्मों को छोड़ देना। मार्ग में हिदायत मिलना, तमाम दीनी मामलात में इल्म व अमल के एतबार से हिदायत को शामिल है। इसी लिए यह दुआ व्यापक और अधिक उपयोगी है। और इंसान पर वाजिब है कि नमाज की हर रकअत में इसके जरिए अल्लाह से दुआ माँगे, क्योंकि उसे इसकी सख्त जरूरत है।

(7)और यह सीधा रास्ता ही नबियों, सिद्दीकों, शहीदों, और नेकों का रास्ता है, जिन पर अल्लाह ने इनाम फरमाया है। और यह उन लोगों का रास्ता नहीं, जिन पर क्रोध नाजिल हुआ, और जिनहोंने हक को पहचान कर भी उसे छोड़ दिए,जैसे यहूद वगैरह, और पथभ्रष्ट लोगों का रास्ता भी नहीं, जिन्होंने अज्ञानता और गलत मार्गदर्शन के कारण हक को छोड़ दिया, जैसे ईसाई वगैरह। यह सूरह संक्षिप्त होने के बावजूद, इसमें ऐसी सामग्री मौजूद है, जो कुरआन के किसी दूसरे सूरह में नहीं है, यह तौहीद के तीनों प्रकार को शामिल है।

पहला तौहीद-ए-रुबूबियत (रब होने की तौहीद) यह अल्लाह के कलाम(رب العالمين) में पाया जाता है

दूसरा तौहीद-ए-उलूहियत (इबादत वाली तौहीद)यह शब्द(الله)और (إياك نعبد وإياك نستعين) में पाया जाता है

तीसरा तौहीद अल आस्मा वल सिफात(नामों और गुणों की तौहीद)। इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला के कुछ अच्छे नाम और उच्च गुण हैं। जिनका उल्लेख कुरआन व हदीस में हुआ है। इन सब को बिना समानता, कैफियत, निरस्तिकरण, और हेर-फेर के, मान लेना चाहिए। यह अल्लाह के कलाम(ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ)में पाया जाता है। इसी तरह अल्लाह के कलाम (ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ) में नबूवत् को साबित किया गया है। क्योंकि सीधे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन नबूवत के बिना मुमकिन नहीं। इंसान को उनके कर्मों का बदला देना, अल्लाह के इस कलाम(مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ)में मौजूद है, और निस्संदेह बदला इन्साफ के साथ ही दिया जाएगा, क्योंकि(الدين)का अर्थ है इन्साफ के साथ बदला देना। और यह सूरह तक्दीर को साबित करता है, और यह भी साबित करता है कि वास्तव में बन्दा ही कर्ता है, जो कद्रिया और जब्रिया के अकीदे के विपरीत है। बल्कि इस सूरह के इस आयत(ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ)में तमाम गुमराह फिर्कों और नवाचारों का रद्द है। क्योंकि सिराते मुस्तकीम से मुराद हक की जानकारी और उस पर अमल करना है। और हर गुमराह व नवाचारी हक का विरोधी है।

(إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ) इस बात को शामिल है कि इबादत् व मदद् माँगने में दीन को अल्लाह के लिए खालिस रखा जाए।

आयत अल-कुर्सी की तफ्सीर

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَاۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ٢٥٥﴾

अनुवाद: वह अल्लाह जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, वह जीवन्त-सत्ता है, सबको संभालने और कायम रखनेवाला है। उसे न ऊँघ लगती है और न निद्रा। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके ज्ञान में से किसी चीज पर हावी नहीं हो सकते, सिवाय उसके जो उसने चाहा। उसकी कुर्सी आकाशों और धरती को व्याप्त है और उनकी सुरक्षा उसके लिए तनिक भी भारी नहीं और वह उच्च व महान है।

व्याख्या: नबी करीम(ﷺ)के फरमान के मुताबिक यह आयत, कुरआन मजीद की सब से महान आयत है, इसमें आल्लाह तआला की तौहीद, महानता, और गुणों के व्यापक होने का अर्थ बयान किया गया है। अल्लाह तआला ने अपने बारे में फरमाया कि वे अल्लाह हैं,जिसके लिए उलूहियत(देवत्व) के तमाम अर्थ साबित हैं। और उलूहियत् व इबादत् का हकदार सिर्फ वह हैं, उसके सिवा हर एक की उलूहियत् व इबादत् बातिल है।

(ٱلۡحَيُّ)से मुराद वह हस्ती है जिसे पूर्ण जीवन की वास्तविकता हासिल हो, जैसे सुनना, देखना, जानना, और कुदरत रखना, इत्यादि। बिल्कुल उसी तरह जैसे(القيوم)में अल्लाह तआला के तमाम कार्यों की वास्तविकता मौजूद है। क्योंकि वह कय्युम है, जो खुद से कायम है, और अपनी तमाम मख्लुक से बे नियाज है, और उन से ही तमाम मौजूद चीजें कायम हैं। उसी ने उन्हें वजूद बख्शा, बाकी रखा, और बाकी रहने के लिए तमाम सहायता मुहैया किए।

अल्लाह के हयात व कय्युमियत के पूर्ण होने का प्रभाव यह भी है कि उनहें ऊँघ और नींद नहीं आती। क्योंकि ऊँघ और नींद मख्लूक को ही आती है, जो कमजोर और असहाय हैं, महानता अभिमान और पराक्रम वाले को नहीं आती। अल्लाह ने यह भी फरमाया कि वह आकाश और पृथ्वी के सब कुछ का मालिक है। और सब उनके बन्दे और दास हैं, कोई इस हैसियत से बाहर नहीं। अल्लाह तआला फरमाते हैं कि आसमानों और जमीनों में जो कुछ भी है, सब रहमान(अल्लाह)के पास बन्दा और दास बन कर आने वाले हैं।(मर्यम:93) वे मालिक हैं बाकी सब उनके आदेश के नीचे, उसी के लिए स्वामित्व, महानता व शक्ति के सारे गुण हैं। उनकी पूर्ण बादशाहत का परिणाम है कि उनकी अनुमति के बिना कोई शिफारिश नहीं कर सकता। तमाम गणमान्य व्यक्ति और शिफारिश करने वाले, उनके बन्दे और दास हैं, उनकी अनुमति के बिना शिफारिश के लिए कोई आगे बढ़ ही नही सकता। अल्लाह तआला फरमाते हैं कि आप कह दीजिए कि अल्लाह के लिए ही तमाम शिफारिशें हैं, उसी के लिए आस्मान व जमीन की बाद्शाहत है।(अज-जुमर:44)। और अल्लाह सिर्फ उसी को इजाजत देंगे जिस से वे प्रसन्न होंगे, और अल्लाह को सिर्फ तौहीद व नबी(ﷺ)की इत्तिबा ही प्रसन्न कर सकती है।जिसने यह दोनों कार्य ना किये हों,उस का शिफारिश में कोई हिस्सा नहीं होगा। फिर अल्लाह तआला ने अपने व्यापक इल्म व ज्ञान के बारे में खबर दिया कि वे उनके अतीत व भविष्य के पूरे हालात को जानते हैं। उन पर कोई चीज पोशीदा नहीं है, यहाँ तक कि आँख की खियानत व सीने में छिपे हूए भेद को भी जानता है। मख्लूक में से कोई भी अल्लाह तआला के इल्म पर हावी नहीं हो सकता, मगर अल्लाह जितना चाहे बता दे, जैसे कुछ शरई और तक्दीर की चीजें। और यह अल्लाह के महान ज्ञान के सामने एक छोटा सा अंशमात्र है। जैसे कि अल्लाह तआला के बारे में सबसे ज्यादा जानने वाले रसूलों और फरिश्तों ने अल्लाह से मुखातिब होकर कहा: आप पाक हैं, हमें उतना ही इल्म है

जितना आप ने हमें बताया।(अल-बकरह:32)। फिर अल्लाह तआला ने अपनी महानता के बारे में जानकारी दी, कि उसकी कुर्सी आस्मान व जमीन को समायी हुई है। और एक विशेष सिस्टम जिसे संसार के अन्दर बना के रखा गया, के जरिए आस्मान व जमीन और उसमें बसने वालों का संरक्षण करता है। उन दोनों की हिफाजत अल्लाह तआला को भारी नहीं पड़ती, क्योंकि वे अत्याधिक महान, ताकतवर, और अहकाम में व्यापक हिक्मत रखने वाले हैं। वे अपने आप में और महान गुणों में तमाम मख्लूक से ऊपर हैं। वे इतना सर्वश्रेष्ठ हैं कि, मख्लूकों पर गालिब, मौजूदात उनके फरमांबरदार और गर्दनें उसके अधीन हैं। (العظيم)का अर्थ है महानता अभिमान और महिमा के तमाम गुण एकत्र करने वाला, जिससे दिलें मुहब्बत करे, रूहें सम्मान करे। और जानने वाले जानते हैं कि, हर चीज की महानता चाहे वह कितनी हो, अल्लाह तआला की महानता के सामने बहुत कम है।

तो जो आयत इन तमाम सामग्री को समेटी हुई है, हकदार है कि पूरे कुरआन की सबसे महान आयत शुमार की जाए। और जो उसे समझकर और गौर करके पढ़े, उसका दिल यकीन, ज्ञान और ईमान से भर जाए, और वह शैतान की बुराइयों से बच जाए।

सूरह जिलजाल की तफ्सीर, और यह मदनी सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿إِذَا زُلۡزِلَتِ ٱلۡأَرۡضُ زِلۡزَالَهَا ۝١ وَأَخۡرَجَتِ ٱلۡأَرۡضُ أَثۡقَالَهَا ۝٢ وَقَالَ ٱلۡإِنسَٰنُ مَا لَهَا ۝٣ يَوۡمَئِذٖ تُحَدِّثُ أَخۡبَارَهَا ۝٤ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوۡحَىٰ لَهَا ۝٥ يَوۡمَئِذٖ يَصۡدُرُ ٱلنَّاسُ أَشۡتَاتٗا لِّيُرَوۡاْ أَعۡمَٰلَهُمۡ ۝٦ فَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرٗا يَرَهُۥ ۝٧ وَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ شَرّٗا يَرَهُۥ ۝٨﴾.

अनुवाद:जब धरती इस प्रकार हिला डाली जाएगी जैसा उसे हिलाया जाना है, और धरती अपने बोझ बाहर निकाल देगी, और मनुष्य कहेगा, उसे क्या हो गया है?

उस दिन वह अपनी खबरें सुनाएगी, इस कारण कि तुम्हारे रब ने उसे यही संकेत किया होगा, उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे, ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ। अतः जो कोई कणभर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा, और जो कोई कणभर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा।

व्याख्या:(1-2)अल्लाह तआला उन घटनाओं के बारे में बता रहे हैं जो कयामत के दिन होने वाले हैं, जैसे धरती में कंपन होना, काँपना थरथराना, यहाँ तक कि उस पर मौजूद तमाम इमारतों और स्थलों का गिर कर खत्म हो जाना, उस दिन जमीन पर मौजूद तमाम पहाड़ों के टुकड़े हो जाएँगे, उस के टीले बराबर कर दिये जाएँगे, जमीन समतल मैदान में परिवर्तित हो जाएगी, और ऊँच नीच नहीं रहेगी। (وَأَخْرَجَتِ ٱلْأَرْضُ أَثْقَالَهَا)जमीन अपना बोझ निकाल देगी, यानी जमीन के पेट में जो खजाने और मुर्दे हैं वह उन्हें निकाल फेंकेगी।

(3)(وَقَالَ ٱلْإِنسَٰنُ مَا لَهَا)जब इंसान भयंकर हालात को देखेगा तो कहेगा की इसे क्या हो गया, कोन सी चीज पेश आयी है।

(4-5)(يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا)उस दिन जमीन अपनी खबरें बयान करेगी,अर्थात कार्य करने वालों के अच्छे बुरे कार्यों की गवाही देगी। जो उन्होंने उसकी पीठ पर किये हैं। क्योंकि जमीन भी उन गवाहों में शुमार होगी, जो बन्दों के खिलाफ उन के कार्यों की गवाही देंगे। यह सब इस लिए होगा क्योंकि अल्लाह तआला उसको हुक्म देगा कि उन तमाम कार्यों के बारे में खबर दे, जो उसके ऊपर किये गए हैं, तब धर्ती नाफरमानी नहीं करेगी।

(6)(يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ)उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में कयामत के मैदान में आएँगे, जब अल्लाह उनके बीच फैसला करेंगे। ताकि अल्लाह उनको उन की बुराईयाँ और नेकियाँ दिखाएँ जो उन्होंने किये थे, और अपने कार्यों के बदले का दर्शन वह स्वयं करें।

(7-8) जिसने जर्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा, और जिसने

जर्रा बराबर गुनाह किया होगा उसे भी देखेगा। यह अच्छे और बुरे सारे कार्यों को शामिल है। क्योंकि जब वे जर्रा भर वजन को देख सकेगा जो कि सब से छोटी चीज है, और उसका बदला देगा तो वह कार्य जो उससे बड़ा हो उन को दिखाना ज्यादा आसान है। अल्लाह ने फरमाया: जिस दिन इंसान अपने अच्छे और बुरे कार्यों को मौजूद पायेगा और कामना करेगा कि काश उसके और बुराईयों के बीच बहुत लंबी दुरी होती। (आले-इमरान:30)। और उन्होंने जो कार्य किये थे उनको मौजूद पाएँगे।(अल-कहफ:49) इन आयात में भलाई के कार्य का प्रोत्साहन है अगरचे कम ही हो, और बुराई के कार्यों से डराया गया है अगरचे मामूली हो।

○○○○○○○○○○

सूरह आदियात की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ وَٱلۡعَٰدِيَٰتِ ضَبۡحٗا ١ فَٱلۡمُورِيَٰتِ قَدۡحٗا ٢ فَٱلۡمُغِيرَٰتِ صُبۡحٗا ٣ فَأَثَرۡنَ
بِهِۦ نَقۡعٗا ٤ فَوَسَطۡنَ بِهِۦ جَمۡعًا ٥ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٞ ٦ وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ
لَشَهِيدٞ ٧ وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ ٱلۡخَيۡرِ لَشَدِيدٌ ٨ أَفَلَا يَعۡلَمُ إِذَا بُعۡثِرَ مَا فِي ٱلۡقُبُورِ ٩
وَحُصِّلَ مَا فِي ٱلصُّدُورِ ١٠ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمۡ يَوۡمَئِذٖ لَّخَبِيرُۢ ١١ ﴾

अनुवाद: हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की कसम। फिर ठोकरों से चिन्गारियाँ निकालने वालों की कसम। फिर सुबह सवेरे धावा बोलने वालों की कसम। उसमें उन्होंने गर्द-गुबार उड़ाया, और फौज के दल में जा घुसा। निस्संदेह मनुष्य अपने रब का बड़ा अकृतज्ञ है। और निश्चय ही वह स्वयं इसपर गवाह है। और निश्चय ही वह धन के मोह में बड़ा सख्त है। तो क्या वह जानता नहीं कि जब उगलवा लिया जाएगा जो कब्रों में है। और जाहिर कर दी जाएगी जो बातें सीनों में हैं। निस्संदेह उनका रब उस दिन उनकी पूरी खबर रखता होगा।

व्याख्या: (1)अल्लाह तआला ने घोड़ों की कसम खाई क्योंकि उनके अन्दर अल्लाह तआला की प्रतिभाशाली निशानियाँ और स्पष्ट नेमतें हैं, जो तमाम इन्सानों को मालुम है। और घोड़े के उन गुणों की कसम खाई, जिनमें कोई भी जानवर उसकी बराबरी नहीं कर सकता। इसी लिए फरमाया हाँपते हूए दौड़ने वाले घोड़ों की कसम। यानी बड़ी कुव्वत के साथ दोड़ने वाले घोड़े, जब उन से हाँपने की आवाज आ रही हो। (الضبح)कहते हैं घोड़ों की साँस की आवाज को, जो तेज दोड़ते वक्त उनके सीनों से निकलती है।

(2)(فَٱلْمُورِيَٰتِ)अपने खुरों से पत्थरों पर चिंगारियाँ निकालने वाले। (قَدْحًا) यानी जब वह घोड़े दोड़ते हैं तो उन के खुरों की सख्ती और कुव्वत से आग निकलती है।

(3)(فَٱلْمُغِيرَٰتِ صُبْحًا) सुबह के वक्त दुश्मन पर हमला करने वाले की। क्योंकि अधिकतर आक्रमण सुबह के वक्त ही किया जाता है।

(4-5)(فَأَثَرْنَ بِهِۦ نَقْعًا)यानी अपने दौड़ने और हमला करने के जरिए गुबार उड़ाते हैं, फिर अपने सवार के साथ दुश्मन के जत्थों के बीच जा घुसते हैं।

(6)कसम का जवाब है अल्लाह तआला का यह कलाम(إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ) बेशक मानव अपने रब का ना शुकरा है।अर्थात वह उस भलाई को रोक लेता है जिससे अल्लाह ने उसे नवाजा, क्योंकि इंसान का स्वाभाव यह है कि उसका दिल उन हकों के बारे में जो उसके जिम्मा है उदारता नहीं दिखाता, कि उसे पूरा-पूरा अदा करदे, बल्कि उसके जिम्मे जो वित्तीय या शरीरीक कर्तव्य हैं, उनके बारे में वह सुस्ती करता है। सिवाय उस शख्स के जिसको अल्लाह ने हिदायत दी है, और उस ने बखीली को छोड़कर हकों की अदाइगी व उदारता को इख्तियार किया है।

(7)(وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ)अर्थात इंसान जो अनुमति ना देने और ना शुकरी करने में मशहूर है, बेशक वह स्वयं उस पर गवाह है,उसे ना झुठला सकता है, ना इंकार कर सकता है, क्योंकि यह स्पष्ट और जाहिर है।

और इसमें यह भी संभव है कि जमीर अल्लाह की तरफ लौटती हो, और अर्थ यह हो की बन्दा अपने रब का ना शुकरा है, और अल्लाह उस पर गवाह है, तब इस सूरत में जो अपने रब की ना शुकरी करे उस के लिए गंभीर चेतावनी है, क्योंकि अल्लाह उस को देख रहा है।

(8)और बेशक इंसान धन की मुहब्बत में बहुत सख्त है,अर्थात धन से अत्याधिक प्रेम करता है। और धन की मुहब्बत ही उस को उसके ऊपर वाजिब अधिकारों को अदा ना करने पर प्रेरित करता है। क्योंकि उसने नफ्स की चाहत को रब की खूशी पर तरजीह दी, यह सब इसलिए कि उसने अपनी नजर को इसी दुनिया पर केंद्रित किया और आखिरत से बेख़बर रहा।

(9-10)इसी लिए अल्लाह ने कयामत के दिन का खौफ दिलाते हुए फरमाया: कि अपने आप को धोखे में रखने वाला यह व्यक्ति क्या नहीं जानता कि जब कब्रों से मुर्दों को हश्र व नश्र के लिए निकाला जाएगा। और जो कुछ सीनों में है वह जाहिर और स्पष्ट हो जाएगा। अर्थात सीनों के अन्दर जो भलाई या बुराई है वह छिपी ना रहेगी, बल्कि हर भेद खुल जाएगा, और उन के कार्यों का नतीजा तमाम मख्लूक के सामने आ जाएगा।

(11)(إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ) निस्संदेह उनका रब उनके बाहरी तथा आंतरिक, छिपा और स्पष्ट, सब कार्यों से अवगत हैं, और उनके कर्मों का बदला देंगे। अल्लाह तआला ने अपनी जानकारी को उस दिन के साथ खास किया जब कि वे हर समय की खबर रखने वाले हैं, क्योंकि उस से मुराद उन कार्यों का बदला है जिसका कारण अल्लाह का इल्म और इत्तेला है।

सूरह अल-कारिआ की तफ्सीर, यह सूरह मक्की है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ٱلۡقَارِعَةُ ۝١ مَا ٱلۡقَارِعَةُ ۝٢ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا ٱلۡقَارِعَةُ ۝٣ يَوۡمَ يَكُونُ ٱلنَّاسُ كَٱلۡفَرَاشِ ٱلۡمَبۡثُوثِ ۝٤
وَتَكُونُ ٱلۡجِبَالُ كَٱلۡعِهۡنِ ٱلۡمَنفُوشِ ۝٥ فَأَمَّا مَن ثَقُلَتۡ مَوَٰزِينُهُۥ ۝٦ فَهُوَ فِي عِيشَةٖ رَّاضِيَةٖ ۝٧ وَأَمَّا مَنۡ
خَفَّتۡ مَوَٰزِينُهُۥ ۝٨ فَأُمُّهُۥ هَاوِيَةٞ ۝٩ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا هِيَهۡ ۝١٠ نَارٌ حَامِيَةُۢ ۝١١﴾

अनुवाद: खड़खड़ानेवाली! क्या है वह खड़खड़ानेवाली? और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है वह खड़खड़ानेवाली? जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएँगे, और पहाड़ धुने हुए रंग-बिरंगे ऊन के जैसे हो जाएँगे। फिर जिस किसी का वजन भारी होगा, वह मनभाते जीवन में रहेगा। और जिसका वजन हल्का होगा, उसका ठिकाना होगा गहरा गढ्ढा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है? दहकती हुई आग है।

व्याख्या: (1-3)अल-कारिआ कयामत के दिन के नामों में से एक नाम है, और उसको यह नाम इसलिए दिया गया, क्योंकि यह जोरदार दस्तक देगा, और अपनी भयावहता से परेशान करेगा, इसी लिए अल्लाह ने उसकी भीषणता को बयान करते हुए फरमाया: खड्खड़ानेवाली! क्या है वह खड्खड़ानेवाली? और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है वह खड़खड़ानेवाली? जिस दिन लोग सख्त घबराहट और हौलनाकी की वजह से बिखरे हुए पर्वानों की तरह हो जाएँगे, यानी बिखरे हुए टिड्डी दल की तरह जैसे मौजें मारता हुआ समुद्र हो। और(الفراش)कहते हैं उन पतंगों को जो रात के वक्त झुन्ड के रूप में मौज बन कर आते हैं, और वह नहीं जानते कि कहाँ जा रहे हैं, जब उनके सामने आग रौशन की जाती है, तो नासमझी की वजह से उस पर टूट पड़ते हैं, और उस में आ गिरते हैं। ठीक यही परिस्थिति बुद्धिमान लोगों की हो जाएगी।

(5)और रहे बड़े ठोस और सख्त पहाड़, तो वह धुनी हुई ऊन की तरह हो जाएँगे, जो बहुत कमजोर हो गई हो, और जिसे मामुली हवा भी उड़ा ले जाए। अल्लाह तआला ने फरमाया: और तुम पहाड़ों को देखते हो और समझते हो की यह कठोर है, लेकिन वह बादलों कि तरह चल रहे होंगे(अन-नमल:88)। फिर उसके बाद बिखरा हुआ धूल बन कर खत्म हो जाएँगे, और उनमें नजर आने लायक कुछ नहीं बचेगा। उस वक्त तराजू स्थापित किये जाएँगे, और लोग दो भागों में विभाजित हो जाएँगे, नेकबख्त और बदबख्त।

(6-7)फिर जिस का वजन भारी होगा,अर्थात जिनकी नेकियों का पलड़ा भारी होगा, और बुराईयों का पलड़ा हल्का होगा वह नेमतों वाली जन्नत में होगा।

(8-11)और जिसका नामा-ए-आमाल हल्का निकलेगा, यानी उसकी नेकियाँ इतनी ना हों जो उसकी बुराईयों का मुकाबला कर सकें, तो उस का ठिकाना जहन्नुम होगा, जिसके नामों में से एक नाम हाविया है, जो उसके लिए माँ की तरह होगा, जो हमेशा चिमटा रहेगा। जैसे कि अल्लाह ने फरमाया: बेशक जहन्नुम का अजाब तो चिमट जाने वाला है।(अल-फुर्कान:65)। यह भी अर्थ लिया गया है कि उसके दिमाग का ऊपरी भाग जहन्नुम में गिरेगा, यानी वह अपने सिर के बल जहन्नुम में गिराया जाएगा। وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا هِيَهْ और तुम क्या समझो कि हाविया क्या है? यह सवाल इस मामले को हौलनाक बना देता है, फिर आने वाले कलाम से उसकी व्याख्या की गई(نَارٌ حَامِيَةٌ)सख्त गर्मी वाली आग है, उसकी गर्मी दुनिया की आग से सत्तर गुना अधिक होगी, हम उस से अल्लाह की पनाह माँगते हैं।

सूरह अत-तकासुर की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿أَلۡهَىٰكُمُ ٱلتَّكَاثُرُ ١ حَتَّىٰ زُرۡتُمُ ٱلۡمَقَابِرَ ٢ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُونَ ٣ ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُونَ ٤ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُونَ عِلۡمَ ٱلۡيَقِينِ ٥ لَتَرَوُنَّ ٱلۡجَحِيمَ ٦ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ ٱلۡيَقِينِ ٧ ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ ٱلنَّعِيمِ ٨﴾

अनुवाद: ज्यादती की चाहत ने तुम्हें गफलत में डाल रखा है, यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तानों में पहुँच गए। कुछ नहीं, तुम शीघ्र ही जान लोगे। फिर कुछ नहीं, तुम्हें शीघ्र ही मालूम हो जाएगा। कुछ नहीं, अगर तुम विश्वसनीय ज्ञान के रूप में जान लो तो अवश्य ही तुम भड़कती आग को देख लोगे। फिर सुनो, उसे अवश्य देखोगे इस दशा में कि वह यथावत विश्वास होगा। फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।

व्याख्या:(1)अल्लाह तआला अपने बन्दों को डाँटते हुए फरमाते हैं, कि उन्होंने वह काम छोड़ दिया जिसके लिए वे पैदा किए गए थे, कि सिर्फ अल्लाह की ही इबादत करें, शिर्क ना करें, और अल्लाह के बारे में ज्ञान हासिल करें, और उनकी मुहब्बत को सब पर तरजीह दें। अल्लाह फरमाते हैं: वृद्धि के लालच ने तुमको इन सारी जिम्मेदारियों से गाफिल कर दिया। जिस चीज की वृद्धि की तलब है, उसका उल्लेख नहीं किया गया, ताकि हर उस चीज को शामिल हो जाए जिसके जरिए जियादती में मुकाबला करने वाले करते हैं, और घमंड करने वाले करते हैं। जैसे कि धन-दौलत, औलाद, सहायक, सेना, नौकर और पोजीशन इत्यादि, जिनको लोग एक दूसरे से जियादा हासिल करने में लगे रहते हैं, और अल्लाह की रजामंदी के तलबगार नहीं होते।

(2)तुम्हारी गफ्लत और जीवन का आनंद जारी रहा, यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तान जा पहूँचे। तब तुम्हारे सामने से पर्दा हटा, मगर उस वक्त जब तुम्हारा इस संसार में दोबारा आना मुम्किन नहीं रहा। अल्लाह तआला का यह कलाम(حَتَّىٰ زُرۡتُمُ ٱلۡمَقَابِرَ)दलालत करता है कि बर्जख् ऐसा घर है

जिसका लक्ष्य आखिरत के घर को पहूँचना है। क्योंकि अल्लाह ने उनको यात्री के नाम से पुकारा, निवासी के नाम से नहीं पुकारा, तो यह दलालत् करता है कि उठाये जाने और कार्मों का बदला दिये जाने के बाद, वे ऐसे घर में रहेंगे जो बाकी हो खत्म होने वाला ना हो।

(3-6)इसी लिए अल्लाह तआला ने चेतावनी दी कि हरगिज नहीं, तुम्हें जल्द मालुम हो जाएगा। हरगिज नहीं अगर तुम यकीनी तौर पर जान लो। यानी जो कुछ तुम्हारे सामने है, अगर तुम उसको जानते होते, ऐसा जानना जो दिल की गहराईयों तक पहूँचे, तो तुम्हें अधिक धन अर्जित करने की लालसा गाफिल ना करती, और तुम जल्दी से नेक कार्यों की तरफ बढ़ते, मगर सच्चा इल्म ना होने ने तुम्हें उस मुकाम पर पहूँचा दिया जहाँ पर तुम खुद को पाते हो।(لَتَرَوُنَّ ٱلْجَحِيمَ)तुम निस्संदेह उस जहन्नुम को देख लोगे, जिसे अल्लाह ने काफिरों के लिए तैयार कर रखा है।

(7)फिर तुम उस को यकीनी तौर पर देखोगे, अर्थात आखों की दृष्टि से देखोगे, जैसा कि अल्लाह ने फरमाया: और मुजरिम लोग जहन्नम को देख कर यकीन कर लेंगे कि वह उसमें झोंके जाने वाले हैं, और उस से बचने का कोई रास्ता नहीं पाएँगे। (अल-कहफ:53)।

(8)फिर तुमसे उन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा, जिनसे तुम दुनिया की जिन्दगी में आनंद लेते रहे, कि क्या तुमने उन नेमतों का शुक्रिया अदा किया, और उनमें अल्लाह के हक को अदा किया, और अल्लाह की नाफरमानी में उन नेमतों को उप्योग नहीं किया? ताकि वे तुम्हें उन नेमतों से उच्च व अच्छा प्रदान करे। या तुम उन नेमतों की वजह से धोखे में रहे, और शुक्र अदा नहीं किये। बल्कि कभी-कभार अल्लाह की नाफरमानी में उन नेमतों को उप्योग किया, तब अल्लाह उस पर सजा देंगे। जैसे कि अल्लाह फरमाते हैं:"जिस दिन उन लोगों को जिन्होंने कुफ्र किया जहन्नुम के सामने पेश किया जाएगा, तो उन से कहा जाएगा तुम अपना आनंद दुनिया की जिंदगी में खत्म कर चुके, और खूब फायदा उठा चुके, लो आज जिल्लत का अजाब चखो"। (अल-अहकाफ:20)।

सूरह अल-अस्र की तफ्सीर, यह सूरह मक्की है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ وَٱلۡعَصۡرِ ۝١ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَفِي خُسۡرٍ ۝٢ إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلۡحَقِّ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلصَّبۡرِ ۝٣ ﴾

अनुवाद: कसम है जमाने की। बेशक मनुष्य घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, और एक-दूसरे को हक की ताकीद की, और एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की।

व्याख्या: (1-3)अल्लाह तआला ने जमाने की कसम खाई (जो दिन व रात के गर्दिश का नाम है, और जिस के अन्दर बन्दों के सब कार्य होते हैं) कि सारे मानव घाटे में हैं। और घाटा लाभ का विपरित होता है। और घाटे के विभिन्न स्टेज होते हैं। कभी घाटा पूर्ण होता है। जैसे कि उस शख्स का हाल, जिसने दुनिया व आखिरत में घाटा उठाया, अर्थात जन्नत से महरूम हुआ और दोजख में दाखिल हुआ। और कभी इंसान एक पहलू से घाटे में रहता है, और दूसरे पहलू से नहीं। इस लिए अल्लाह ने नुक्सान को हर आदमी के साथ व्यापक किया है, सिवाय उनके जिनमें यह चार गुण मौजूद हैं।

पहला: उन चीजों पर ईमान लाना जिन पर ईमान लाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। और ईमान इल्म के बिना नहीं होता, क्योंकि इल्म ईमान ही का हिस्सा है। उसके बिना ईमान पूर्ण नहीं हो सकता।

दूसरा: नेक अमल करना, जो तमाम जाहिरी और छिपे हुए अच्छे कर्मों को शामिल है, जो अल्लाह और बन्दों के अधिकारों से जुड़े हुए हैं, चाहे वाजिब हो या मुस्तहब।

तीसरा: एक दूसरे को हक की वसीयत करना, हक ईमान व नेक कार्यों के समूह का नाम है।अर्थात ईमान वाले एक दूसरे को उन दोनों चीजों

की वसीयत करते हैं, और उन पर एक दूसरे को उभारते व प्रोत्साहित करते हैं।

चौथा: एक दूसरे को सब्र(धैर्य) की वसीयत करना, अल्लाह के आज्ञा का पालन करने में, अवज्ञा ना करने में, व कष्टदायक तक्दीर को बर्दाश्त करने में। इस तरह ईमान व नेक कार्य के द्वारा बन्दा अपने आप को पूरा करता है, और हक व सब्र की वसीयत करके दूसरों को पूर्ण बनाता है। इन चारों चीजों को पूरा करके इंसान घाटा से संरक्षित रह सकता है। और महान लाभ हासिल करने में सफल हो सकता है।

○○○○○○○○○○○

सूरह अल-होमाजा की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ وَيۡلٞ لِّكُلِّ هُمَزَةٖ لُّمَزَةٍ ١ ٱلَّذِي جَمَعَ مَالٗا وَعَدَّدَهُۥ ٢ يَحۡسَبُ أَنَّ مَالَهُۥٓ أَخۡلَدَهُۥ ٣ كَلَّاۖ لَيُنۢبَذَنَّ فِي ٱلۡحُطَمَةِ ٤ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا ٱلۡحُطَمَةُ ٥ نَارُ ٱللَّهِ ٱلۡمُوقَدَةُ ٦ ٱلَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى ٱلۡأَفۡـِٔدَةِ ٧ إِنَّهَا عَلَيۡهِم مُّؤۡصَدَةٞ ٨ فِي عَمَدٖ مُّمَدَّدَةِۭ ٩ ﴾

अनुवाद: तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए, जो माल इकट्ठा करता और उसे गिनता रहा। समझता है कि उसके माल ने उसे अमर कर दिया। कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली आग में फेंक दिया जाएगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है? वह अल्लाह की दहकाई हुई आग है, जो झाँक लेती है दिलों को। वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी गई होगी, लम्बे-लम्बे स्तम्भों में।

व्याख्या:(1)तबाही और सख्त अजाब है हर उस शख्स के लिए जो ऐब निकालनेवाले ताना देने वाला है। यानी जो अपने कार्य से तक्लीफ देता है, और बातों से ऐब निकालता है। (هماز)वह शख्स है

जो लोगों की ऐब निकालता और इशारा व कार्य से चोट पहूँचाता है। और(لمّاز)उस को कहते हैं जो बातों से ऐब निकालता है।

(2)इस ऐब निकालने वाले ताना देने वाले की पहचान यह है कि धन जमा करने, उसको गिनने, उस पर खूश होने के सिवा, उसका कोई लक्ष्य नहीं है। उस धन को भलाई के रास्ते व रिश्तेदारों की सहायता इत्यादि, में खर्च करने में उसे कोई शौक व उत्सुक्ता नहीं है।

(3)अपनी मुर्खता के कारण वह समझता है कि उसका धन उसको दुनिया में हमेशा जिंदा रखेगा। इसी लिए उसकी तमाम कोशिशें अपने धन को बढ़ाने में खर्च होती हैं। वह समझता है कि यह उसकी उम्र को बढ़ाएगा, मगर वह यह नहीं जानता कि बखीली उम्रों को तबाह और बस्तियों को बर्बाद कर देती है, और नेकी उम्र को बढ़ा देती है।

(4-7)उसे जरूर फेंका जाएगा होतामा में, और आप को क्या मालूम कि होतामा क्या है? यह प्रश्न उसकी भयावहता और हौलनाकी को उजागर करता है। फिर उसकी व्याख्या इस तरह की गई कि: वह अल्लाह की भड़काई हूई आग है जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं, जो अपनी तीव्रता के कारण शरीरों को छेदती हुई दिलों तक जा पहूँचेगी।

(8)इतनी गर्मियों के बावजूद वे आग में कैद होंगे, उससे बाहर निकलने से मायूस होंगे, इसी लिए फरमाया गया: वह आग उन पर हर तरफ से बंद कर दी जाएगी, दरवाजों के पीछे बड़े बड़े स्तंभों में, ताकि वे उस से बाहर ना निकल सकें। जब-जब वे उस आग से बाहर निकलने का प्रयास करेंगे उसी में लौटा दिए जाएँगे। हम उस से अल्लाह की पनाह माँगते हैं, और आफियत व माफी चाहते है।

सुरह अल-फील की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ أَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصۡحَٰبِ ٱلۡفِيلِ ۝١ أَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ فِي تَضۡلِيلٖ ۝٢ وَأَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا أَبَابِيلَ ۝٣ تَرۡمِيهِم بِحِجَارَةٖ مِّن سِجِّيلٖ ۝٤ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٖ مَّأۡكُولِۭ ۝٥ ﴾

अनुवाद: क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने हाथीवालों के साथ कैसा बर्ताव किया? क्या उसने उनकी चाल को बेकार नहीं कर दिया? और उनपर झुंड के झुंड पक्षी भेजे, जो उनपर कंकरीले पत्थर मार रहे थे। अन्ततः उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे खाया हुआ भूसा हो।

व्याख्या:(1-5)क्या आप ने अल्लाह की क्षमता, महानता, अपने बन्दों पर उनकी दया, उनकी एकता के सबूत, और उनके रसूल मुहम्मद(ﷺ)की सच्चाई को नहीं देखा? कि अल्लाह ने हाथी वालों के साथ क्या किया? जिन्होंने उनके पवित्र घर के साथ साजिश की, और उसे ढा देने का इरादा किया, उसके लिए तैयारी की, और हाथी साथ ले आए, और हब्शा व यमन के लोगों से गठित एक ऐसी फौज लेकर आए, जिसका मुकाबला करना अरबों के बस में नहीं था। जब वे मक्का के करीब पहूँचे, तो अरबों में रक्षा करने वाला कोई नहीं था। मक्का के लोग जान बचाने के लिए मक्का से भाग गये थे। तब अल्लाह ने उन के ऊपर पक्षियों का झुंड भेजा,जो गर्म की हूई मिट्टी की कंकरियाँ उठाये हुए थे, वे झुंड के झुंड आते गये, और कंकरियाँ उन पर बरसाते गए, दूर और नज्दीक सबको निशाना बनाया, फिर वे मर कर ठंडे, और खाए हुए भूसे की तरह हो गए, अल्लाह उनकी शैतानी के लिए खूद काफी हो गये, और उनकी चाल उनहीं पर लौटा दिया।

यह घटना बहुत मश्हूर और प्रसिद्ध है। और नबी(ﷺ)के जन्म के साल घटित हुआ था। यह घटना नबी(ﷺ)की दावत के लिए अग्रदूत बन कर, और उनकी रिसालत के लिए सबूत बन कर सामने आया। अंततः अल्लाह के लिए प्रशंसा और शुक्र है।

○○○○○○○○○○

सूरह कुरैश की तफ्सीर, यह सुरह मक्की है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ لِإِيلَٰفِ قُرَيۡشٍ ١ إِۦلَٰفِهِمۡ رِحۡلَةَ ٱلشِّتَآءِ وَٱلصَّيۡفِ ٢ فَلۡيَعۡبُدُواْ رَبَّ هَٰذَا ٱلۡبَيۡتِ ٣ ٱلَّذِيٓ أَطۡعَمَهُم مِّن جُوعٖ وَءَامَنَهُم مِّنۡ خَوۡفِۭ ٤ ﴾

अनुवाद: कुरैश को लगाए रखने के लिए। लगाए रखना उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा से। अतः उन्हें चाहिए कि इस घर(काबा) के रब की बन्दगी करें। जिसने उन्हें खिलाकर भूख से बचाया, और निश्चिन्तता प्रदान करके भय से बचाया।

व्याख्या:(1-4)बहुत से मुफस्सिरीन (व्याख्याकारों) ने कहा कि जार और मजरूर यानी(لِإِيلَٰفِ)का ताल्लुक पहले के सूरह से है। यानी हमने हाथी वालों के साथ जो कुछ किया, वह कुरैश की सुरक्षा, उनके हित की दुरुस्तगी के लिए था, व्यापार और लाभ कमाने के मक्सद से उनकी यात्रा को नियमित बनाया, सर्दियों में यमन की तरफ और गर्मियों में शाम की तरफ। फिर अल्लाह ने उन तमाम लोगों का विनाश कर दिया, जिन्होंने उनके बारे में बुरा इरादा किया था, और अरब के दिलों में हरम की महानता प्रदान की, यहाँ तक कि वे कुरैश का सम्मान करने लगे। और कुरैश जहाँ कहीं का यात्रा करते, उन्हें कोई स्पर्श तक नहीं करता। इसी लिए अल्लाह ने शुक्र करने का आदेश देते हुए फरमाया: فَلۡيَعۡبُدُواْ رَبَّ هَٰذَا ٱلۡبَيۡتِ तो वे इस घर के रब की इबादत करें, यानी उसे एक मान कर खालिस उसी

की इबादत करें, जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और भय से सुरक्षा प्रदान की। रिज्क में कुशाद्गी और डर से सुरक्षा मिलना दुनिया की सब से बड़ी नेमत है, जो अल्लाह के शुक्र को वाजिब करती है। ऐ अल्लाह तेरा ही प्रशंसा व शुक्र है जाहिरी व आंतरिक नेमतों पर। और अल्लाह ने काबा के साथ रबूबियत को खास किया, उसके सम्मान व महानता को बताने के लिए, वरना वे हर चीज के रब हैं।

○○○○○○○○○○

सूरह अल-माऊन की तफ्सीर, यह सूरह मक्की है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿أَرَءَيۡتَ ٱلَّذِي يُكَذِّبُ بِٱلدِّينِ ١ فَذَٰلِكَ ٱلَّذِي يَدُعُّ ٱلۡيَتِيمَ ٢ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلۡمِسۡكِينِ ٣ فَوَيۡلٞ لِّلۡمُصَلِّينَ ٤ ٱلَّذِينَ هُمۡ عَن صَلَاتِهِمۡ سَاهُونَ ٥ ٱلَّذِينَ هُمۡ يُرَآءُونَ ٦ وَيَمۡنَعُونَ ٱلۡمَاعُونَ ٧﴾

अनुवाद: क्या तुमने उसे देखा जो दीन को झुठलाता है? वही तो है जो यतीम को धक्के देता है, और मुहताज के खिलाने पर आग्रह नहीं करता। अतः तबाही है उन नमाजियों के लिए, जो अपनी नमाज से गाफिल हैं, जो दिखावे के लिए कार्य करते हैं, और साधारण बरतने की चीज भी किसी को नहीं देते।

व्याख्या:(1)अल्लाह तआला उस शख्स की भर्त्सना करते हुए जिसने उसके और बन्दों के हकों को अदा नहीं किया, फरमाते हैं कि: क्या तुमने उस शख्स को देखा जो मौत के बाद के जीवन को झुठलाता है,और नबीगण(عليهم السلام)जो लेकर आए उस पर ईमान नहीं लाता।

(2)यह वही शख्स है जो हिंसक रूप से यतीम को धक्के देता है। उसके दिल की क्रूरता की वजह से रहम भी नहीं करता। और कारण यह भी है कि ना वह नेकी की उम्मीद रखता है, ना सजा से डरता है।

(3)और दूसरों को मिस्कीन को खिलाने पर प्रेरित भी नहीं करता, और रहा खूद खिलाने का, तो इसका सवाल ही पैदा नहीं होता।

(4-5)तबाही है उन नमाजियों के लिए जो अपनी नमाज में सुस्ती करते हैं। अर्थात अपनी नमाज को बर्बाद करते हैं, सही वक्त पर पढ़ते नहीं हैं, और ना ही अरकान को अच्छी तरह अदा करते हैं। उसका कारण है अल्लाह के हुक्मों का पालन ना करना, जिसकी वजह से उन्होंने नमाज जैसी महत्वपूर्ण इबादत को छोड़ दिया। नमाज को भूल जाना इंसान को दोषी बनाता है, लेकिन नमाज में भूल हो जाना, तो यह हर शख्स से हो सकता है, यहाँ तक कि नबी(ﷺ)से भी।

(6-7)इसी लिए अल्लाह ने नमाज से गाफिल लोगों को दिखावा, क्रूरता, दयाहीनता, जैसे गुणों से वर्णित करते हुए फरमाया,कि वे लोगों को दिखाने के लिए नेक कार्य करते हैं। और किसी चीज को उधार या उपहार के तौर पर देने से रोकते हैं, जिसे देने से उसे कोई नुक्सान नहीं होता। जैसे कि बर्तन, बालटी, कुल्हाड़ी इत्यादी, जिनके उप्योग के लिए अनुमति देने की आदत लोगों में पायी जाती है। तो जब यह लोग अपनी लालच के कारण उप्योग की मामूली चीजें देने से मना करते हैं, तो बड़ी चीजें देने में उनका क्या हाल होगा।

तो इस सूरह में यतीमों और मिस्कीनों को खाना खिलाने, उसकी प्रेरणा बनने, नमाज का ध्यान रखने व हिफाजत करने, इन में और बाकी तमाम कार्यों में इख्लास अपनाने की प्रेरणा दी गई है। इसी तरह अच्छे कार्य करने, मामूली चीजें उप्योग के लिए देने के लिए प्रोत्साहित किया गया है, जैसे कि बर्तन, बालटी, और किताबें इत्यादि। क्योंकि अल्लाह तआला ने उन लोगों की भर्त्सना की है, जो ऐसा ना करें, और अल्लाह ज्यादा बेहतर जानने वाले हैं।

सूरह अल-कौसर की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿إِنَّآ أَعۡطَيۡنَٰكَ ٱلۡكَوۡثَرَ ١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنۡحَرۡ ٢ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلۡأَبۡتَرُ ٣﴾

अनुवाद: निश्चय ही हमने तुम्हें कौसर प्रदान किया, अतः तुम अपने रब ही के लिए नमाज पढ़ो और (उसी के लिए) कुर्बानी करो। निस्संदेह तुम्हारा दुश्मन ही लावारिस व बेनामी है।

व्याख्या: (1)अल्लाह तआला अपने नबी मुहममद(ﷺ)पर इहसान गिनाते हुए फरमाते हैं, कि हमने आपको कौसर अर्थात अत्याधिक भलाई और महानतम् फज्ल प्रदान किया, जिनमें से वह नहर भी है, जो अल्लाह उनको कयामत् के दिन प्रदान करेंगे, जिसका नाम कौसर होगा, और जिसकी लंबाई व चौड़ाई एक महीने का रास्ता होगा। उसका पानी दूध से अधिक सफेद, और शहद से अधिक मीठा होगा, उसके बर्तन चमक और गिनती में आकास के तारों के समान होंगे। जिस किसी ने एक बार उसमें से पी लिया, दोबारा कभी प्यासा नहीं होगा।

(2)अल्लाह तआला ने नबी(ﷺ)पर अपने इहसान गिनाने के बाद शुक्रिया अदा करने का हुक्म देते हुए फरमाते हैं कि, अपने रब के लिए नमाज पढ़ो और कुर्बानी करो। अल्लाह ने इन दो इबादतों का खास तौर पर जिक्र फरमाया, क्योंकि यह दोनों सर्वश्रेष्ठ इबादतें हैं, और अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का उत्तम साधन है। और उन दोनों का विशेष रूप से उल्लेख करने की एक कारण यह भी है,कि नमाज दिल व शरीर के अंगों की सुपुर्दगी को जाहिर करता है, और इंसान को अल्लाह की बन्दगी में दाखिल करता है। और कुर्बानी से अल्लाह की निकटता प्राप्त की जाती है, बन्दा के पास मौजूद सरवोत्तम चीज से। इसी तरह वह धन खर्च करना भी सिखाती है, जिससे प्रेम करना और उसमें

बखीली करना इंसान के स्वभाव में पाया जाता है।

(3)निस्संदेह आपके शत्रु, अर्थात आप से नफरत करने वाले,आपको बद्नाम व अपमान करने वाले, अब्तर हैं, अर्थात हर प्रकार की भलाई से महरूम हैं, उनका कार्य, उनका नाम व चर्चा, सब कटा हुआ है। रहे मुहम्मद(ﷺ)तो सच में वे पूर्ण हैं, इतना पूर्ण कि वहाँ तक पहुँचना किसी इंसान के बस की बात नहीं, जो ऊँची प्रतिष्ठा, अनगिनत समर्थक व सहायक उनको मिले हैं।

○○○○○○○○○○

सूरह अल-काफिरून की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿قُلۡ يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡكَٰفِرُونَ ١ لَآ أَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُونَ ٢ وَلَآ أَنتُمۡ عَٰبِدُونَ مَآ أَعۡبُدُ ٣
وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٞ مَّا عَبَدتُّمۡ ٤ وَلَآ أَنتُمۡ عَٰبِدُونَ مَآ أَعۡبُدُ ٥ لَكُمۡ دِينُكُمۡ وَلِيَ دِينِ ٦﴾

अनुवाद: आप कह दिजिए कि ऐ काफिरो। मैं वैसी बन्दगी नहीं करूँगा जैसी बन्दगी तुम करते हो, और न तुम वैसी बन्दगी करनेवाले हो जैसी बन्दगी मैं करता हूँ। और न मैं वैसी बन्दगी करनेवाला हूँ जैसी बन्दगी तुमने की है। और न तुम वैसी बन्दगी करनेवाले हुए जैसी बन्दगी मैं करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म।

व्याख्या:(1-6)आप काफिरों को स्पष्ट घोषणा करते हुए बता दीजिये, कि मैं वैसी बन्दगी नहीं करूँगा जैसी बन्दगी तुम करते हो। अर्थात आप बराअत् जाहिर कीजिये उन चीजों से, जिनकी वे अल्लाह के सिवा जाहिरी व पोशीदा इबादत् करते हैं। और जिसकी मैं इबादत करता हुँ तुम उसकी इबादत नहीं करते, क्योंकि अल्लाह के लिए तुम्हारी इबादत में इख्लास नहीं पाया जाता। अल्लाह के लिए तुम्हारी इबादत जो शिर्क से मिली हुई है इबादत नहीं कही जा सकती। इस जुमले को बार बार दोहराया गया ताकि पहला जुमला

काम के ना पाये जाने पर दलालत करे,और दुसरा जुमला इस बात पर दलालत करे कि यह उनकी आदत का अभिन्न अंग बन गया है। इसी लिए दोनों जमातों व समुदायों के बीच पृथक्करण किया गया और फरमाया गया: तुम अपने धर्म पर और मैं अपने धर्म पर। अल्लाह ने यह भी फरमाया: कह दीजिये कि हर शख्स अपने अपने तरीके के मुताबिक काम करता है।(अल-इसरा:84)। और फरमाया: जो कुछ मैं करता हूँ तुम उससे बरी हो, और जो कुछ तुम करते हो, मैं उससे बरी हूँ। (यूनुस:41)

○○○○○○○○○○○

सूरह अन-नस्र की तफ्सीर, यह मदनी सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ إِذَا جَآءَ نَصۡرُ ٱللَّهِ وَٱلۡفَتۡحُ ١ وَرَأَيۡتَ ٱلنَّاسَ يَدۡخُلُونَ فِي دِينِ ٱللَّهِ أَفۡوَاجٗا ٢ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَٱسۡتَغۡفِرۡهُۚ إِنَّهُۥ كَانَ تَوَّابَۢا ٣ ﴾

अनुवाद: जब अल्लाह की सहायता आ जाए, और विजय प्राप्त हो, और तुम लोगों को देखो कि वे अल्लाह के दीन में गिरोह के गिरोह प्रवेश कर रहे हैं, तो अपने रब की प्रशंसा करो और उससे क्षमा चाहो। निस्संदेह वह बड़ा तौबा कबूल करनेवाला है।

व्याख्या: (1-3)इस सूरह में एक खूश्खबरी है, उस खूश्खबरी के हासिल होने पर नबी(ﷺ)के लिए एक हुक्म है, और इस हुक्म के फलस्वरूप एक इशारा व चेतावनी है। **तो खुश्खबरी** है अल्लाह की तरफ से मदद मिलना, मक्का का विजय होना, लोगों का अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाखिल होना। इस तरह काफी लोग इस दीन के मददगार हो गए जबकि वे पहले इसके दुश्मन थे। और यह खूश्खबरी पूरी हो चुकी है। और रहा मदद व विजय मिलने के बाद **का हुक्म**, तो अल्लाह ने रसूल(ﷺ)को हुक्म दिया कि इस विजय पर अल्लाह का शुक्रिया अदा करें,और प्रशंसा के साथ तस्बीह

ब्यान करें व क्षमा माँगें। और रहा **इशारा** व चेतावनी तो उसमें दो इशारे हैं। पहला इशारा यह है कि दीने इस्लाम का विजय जारी रहेगा, और इसमें वृद्धि होती रहेगी, जब जब रसूल(ﷺ)अल्लाह की प्रशंसा व तस्बीह बयान करेंगे व क्षमा माँगेंगे। क्योंकि यह शुक्र है, और अल्लाह फरमाते हैः अगर शुक्र करोगे तो हम और ज्यादा देंगे।(इब्राहीम:7)। और यह विजय इस उम्मत में खुलफा-ए-राशिदीन के शासनकाल में, और उसके बाद हो चुका है। और अल्लाह की यह मदद जारी रही, यहाँ तक कि इस्लाम वहाँ तक पहूँच गया, जहाँ तक कोई भी धर्म नहीं पहूँच पाया। फिर इस उम्मत में अल्लाह के अहकाम का उल्लंघन होने लगा, तब वे आपसी फूट और विवाद के शिकार हो गये, फिर जो हुआ सब के सामने है। इन सब के बावजूद अल्लाह की रहमतें व दया इस उम्मत व इस धर्म पर इतना है जो किसी के दिमाग या कल्पना में ना आए।

और दूसरा इशारा यह है कि इस सूरह में संकेत है कि नबी(ﷺ)की मौत का समय नज्दीक आ चुका है। उसकी व्याख्या इस तरह है कि आप(ﷺ)की उम्र मुबारक व अच्छी चीज है, जिसकी अल्लाह ने कसम भी खाई है, और यह बात तैशुदा है कि अच्छी चीजें इस्तिगफार(क्षमा याचना)के साथ खत्म की जाती हैं। जैसे कि नमाज हज इत्यादि। तो इस हालत में अल्लाह का नबी(ﷺ)को हुक्म देना कि मेरी प्रशंसा और क्षमायाचना करो, यह इशारा देता है कि उनका समय समाप्त हो गया है। तो उनहें चाहिए कि अपने रब से मुलाकात की तैय्यारी करें, और अपने अंतिम समय में हरसंभव अच्छे कार्य करें। अल्लाह का दुरूद व सलाम उन पर नाजिल हों। इसी लिए आप(ﷺ)कुरआन की इस आयत का पालन करते हुए अपनी नमाज के अन्दर रुकू व सजदे में अक्सर पढ़ा करते थे(سبحانك اللهم ربنا وبحمدك، اللهم اغفر لي)अनुवाद: हे अल्लाह ऐ हमारे रब, हम तेरी प्रशंसा व स्तुति करते हुए तेरी पाकीजगी बयान करते हैं, ऐ अल्लाह मुझे क्षमा कर दे।(बुखारी हदीस नं :794)

सूरह अल-मसद की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿تَبَّتۡ يَدَآ أَبِي لَهَبٖ وَتَبَّ ١ مَآ أَغۡنَىٰ عَنۡهُ مَالُهُۥ وَمَا كَسَبَ ٢ سَيَصۡلَىٰ نَارٗا ذَاتَ لَهَبٖ ٣ وَٱمۡرَأَتُهُۥ حَمَّالَةَ ٱلۡحَطَبِ ٤ فِي جِيدِهَا حَبۡلٞ مِّن مَّسَدِۭ ٥﴾

अनुवाद: टूट गए अबू लहब के दोनों हाथ और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया। न उसका माल उसके काम आया और न वह कुछ जो उसने कमाया। वह शीघ्र ही भड़कती आग में पड़ेगा, और उसकी स्त्री भी लकड़ी उठानेवाली, उसकी गर्दन में खजूर के रेशों की बटी हुई रस्सी पड़ी है।

व्याख्या: अबू लहब नबी(ﷺ)का चाचा था, वह नबी(ﷺ)का परम शत्रु और सख्त तक्लीफ देने वाला था, अल्लाह उसे बर्बाद करे, उसमें जर्रा बराबर भी न दीन का हिस्सा था, न रिश्तेदारों के लिए सहानुभूति। अल्लाह ने उसे इस बड़े अपराध का आपराधि बताया जो क्यामत तक उसके लिए शर्म की बात बनी रहेगी। और यह फरमाया:
(1)उसके दोनों हाथ टूट गए,अर्थात दोनों हाथ बर्बाद हो गये, और वह बदबख्ती में पड़ गया अर्थात लाभांवित नहीं हो सका।
(2)उसका धन जो उसके पास जमा था, और उसे सरकश् बना दिया था, किसी काम ना आया। जो कमाया था वह भी काम ना आया, क्योंकि जब अल्लाह का अजाब नाजिल हुआ तो कोई चीज भी उसे रोक नहीं पाई।
(3-5)वह शीघ्र ही भड़कती हूई आग में डाला जाएगा,अर्थात आग उसे हर तरफ से घेर लेगा, और उसकी बीवी भी जो लकड़ी उठानेवाली थी। वह भी नबी(ﷺ)को सख्त तक्लीफ पहूँचाती थी। पति-पत्नि दोनों गुनाह व जुल्म में एक दूसरे की सहायता करते थे। वह तक्लीफ पहूँचाती और नबी(ﷺ)को कष्ट देने में कोई कमी नहीं करती। वह अपनी पीठ पर बोझ ढोती है उस व्यक्ति के मानिन्द जो लकड़ी जमा करता है।

और अपनी गर्दन में डालने के लिए खजूर के पेड़ के रेशों से बनी हूई एक रस्सी तैयार करता। या उसका अर्थ यह है कि जहन्नुम में वह ईंधन उठा-उठा कर अपने शौहर पर डालेगी, इस हाल में कि उसके गले में खजूर की बनी हूई रस्सी होगी। दोनो अर्थों के अनुसार इस सूरह में अल्लाह की निशानियों में से एक बड़ी निशानी यह है कि: अल्लाह ने जब यह सूरह नाजिल फरमाया था, तब अबू लहब और उसकी पत्नी का देहांत नहीं हुआ था, लेकिन इसमें खबर यह दी गई कि दोनों को जहन्नम में अजाब होगा, इस लिए जरूरी था कि दोनों इस्लाम कबूल किये बिना मर जाएं, और ऐसा ही हुआ, जैसे कि गायब और मौजूद के जानने वाले रब ने खबर दी थी।

○○○○○○○○○○○

सूरह इख्लास की तफ्सीर, यह मक्की सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُولَدۡ ۝٣ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ ۝٤﴾.

अनुवाद: आप कह दीजए कि वह अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज है, नहीं जना उसने किसी को, और न ही वह खूद जना गया, और न कोई उसका समकक्ष है।

व्याख्या: (1)आप कह दीजए, इस तथ्य पर विश्वास रखते हूए और उसके अर्थ को जानते हूए कि वह अल्लाह एक हैं। एकता उन में सीमीत है। वह एक हैं और पूर्णता में एकल। जिनके लिए अच्छे नाम, उच्च गुण, व पवित्र कार्य हैं। अद्वितीय हैं उनके जैसा कोई नहीं।
(2)अल्लाह बेनियाज हैं,अर्थात तमाम जरूरतों में वही अकेले आश्रय हैं, ऊपरी व निचली दुनिया वाले सब उनकी तरफ बेहद जरूरतमंद हैं। उसी से अपनी हाजतों का सवाल करते हैं, और महत्वपूर्ण समस्याओं में उसी की तरफ लोटते हैं, क्योंकि अल्लाह अपने गुणों में पूर्ण हैं

जानने वाले हैं और अपनी जानकारी में पूर्ण हैं। नम्र हैं जो अपनी नम्रता में पूर्ण हैं। रहीम हैं जिनकी रहमत हर चीज पर छाई हुई है। इसी प्रकार समस्त सिफतें(गुण)हैं।

(3)यह उनकी पूर्णता ही है कि ना उन्होंने किसी को जना ना उनसे कोई जना गया, क्योंकि वे पूर्ण तौर पर बे नियाज हैं।

(4)उनके नामों,गुणों व कार्यों में कोई उनके बराबर नहीं। उनका व्यक्तित्व बरकत वाला है। तो यह सूरह तौहीदुल अस्मा वस्सिफात (नामों व गुणों की तौहीद) पर आधारित है।

○○○○○○○○○○

सूरह अल-फलक की तफ्सीर, यह सुरह मक्की है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿ قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلۡفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي ٱلۡعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥ ﴾.

अनुवाद: आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की शरण लेता हूँ। हर उस चीज की बुराई से जो उसने पैदा किये। और अंधेरे की बुराई से जब वह फैल जाए। और गाँठों में फूँक मारने वालियों की बुराई से,और हसद् करने वाले की बुराई से जब वह हसद् करे।

व्याखाया: (1)आप पनाह माँगते हूए कहिये कि, मैं पनाह ढूँडता हूँ व अपना बचाव तलाश करता हूँ फलक के रब के जरिये, और फलक का अर्थ है जो दाना और गुठली को फाड़ कर पौधा निकालता है, और सुबह को रात से निकालता है।

(2)शरण माँगता हूँ हर उस चीज की बुराई से जो उसने पैदा किये। यह अल्लाह के तमाम मख्लूक को शामिल है। जैसे कि इंसान जिन्न तथा पशु-पक्षी। तो इन सब के पैदा करने वाले से इनके

भीतर की बुराई से शरण माँगी गई है।

(3)फिर अल्लाह ने आम चीजों का उल्लेख करने के बाद खास चीजों का उल्लेख किया और फरमाया: और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधेरा छा जाए। अर्थात मैं उस बुराई से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ जो रात के अंधेरे में होती है, जब अंधेरा छा जाता है, तब बुरी आत्माएँ और हानिकारक जानवर फैल जाते हैं।

(4)और गाँठों में फूँक मारने वालियों की बुराई से।अर्थात जादू करने वाली औरतों की बुराई से जो अपने जादू में गाँठों में फूँकों से काम लेती हैं जिन को वे जादू के लिए बाँधती हैं।

(5)और हसद् करने वाले की बूराई से जब वह हसद् करे। हसद करने वाला वह होता है जो दूसरों की नेमतों का विनाश चाहता है। तो वह अपनी पूरी ताकत से दूसरों की नेमतों को बर्बाद करना चाहता है। इसी लिए जरूरत पड़ती है कि उसकी बुराई व शाजिश से अल्लाह की पनाह माँगी जाए। और नजर लगाने वाला भी हासिद ही में ही शुमार होता है, क्योंकि नजरे बद सिर्फ हासिद, दुष्ट तबीयत, बुरी आत्मा वालों से ही लगती है।

तो इस सूरह में आम और खास समस्त प्रकार की बुराईयों से पनाह माँगा गया है। और यह सूरह इस बात को भी प्रमाणीत करती है कि जादू हकीकत में होती है, उसकी बुराई से डरना, और जादू व जादूगरों से अल्लाह की पनाह माँगना चाहिए।

सूरह नास की तफ्सीर, यह मदनी सूरह है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ٢ إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ٣ مِن شَرِّ ٱلۡوَسۡوَاسِ ٱلۡخَنَّاسِ ٤ ٱلَّذِي يُوَسۡوِسُ فِي صُدُورِ ٱلنَّاسِ ٥ مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ٦﴾

अनुवाद: आप कह दीजिए कि मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से। जो लोगो के दिलो में भ्रम डालता रहता है। जो जिन्नों में से भी होता है और मनुष्यों में से भी होता है।

व्याख्या: (1-6)इस सूरह में पनाह माँगा गया है लोगों के रब, उनके मालिक, उनके उपास्य का, उस शैताने रजीम से जो तमाम बुराइयों की जड़ व उत्पत्ति है, जिसकी बुराईयों व फितनों में से एक यह है, कि वह लोगों के दिलों में वसवसा डालता है। बुराई को सुंदर बना कर पेश करता है, बुराई के लिए सक्रिय बनाता है, और अच्छे कार्य से रोकता व सुस्ती पैदा कराता है, वह सर्वदा इस प्रयास में रहता है कि वसवसा डालकर पीछे हट जाए। जब मोमिन बन्दा अल्लाह को याद करता है, और शैतान से रक्षा के लिए रब की मदद चाहता है, तो शैतान पीछे हट जाता है। इस लिए बन्दे को चाहिये कि अल्लाह की रुबूबियत के द्वारा मदद माँगे, उसी की शरण में आकर अपना बचाव करे। याद रहे कि तमाम मख्लूक उसकी रुबूबियत व बाद्शाहत के अधीन हैं, वह हर जानदार की पेशानी को पकड़े हुए हैं। और इसी प्रकार लोग अल्लाह की उलूहियत की शरण हासिल करें, जिसके लिए ही उन्हें पैदा किया गया है। और यह उस वक्त तक पूरा नहीं होगा, जब तक कि उनके दुश्मन की बुराई को रोका ना जाए, जो दुश्मन

उन्हें सही रास्ते से हटाना चाहता है, और चाहता है कि अपने गिरोह में शामिल कर ले, ताकि वे जहन्नमी बन जायें। वसवसा जिस तरह जिन्नों की तरफ से होता है मनुष्यों की तरफ से भी हो सकता है, इसी लिए अल्लाह तआला ने फरमायाः जिन्नों में से और मनुष्यों में से।

अंत में अल्लाह की प्रशंसा करते हैं,जो संसार का पालनहार है, और दुआ करते हैं कि वह अपनी नेमतें हम पर पूरी करे, और गुनाहों को क्षमा करे, जो हमसे बहुत सारी बरकतों को रोकने का कारण है। और उन गलतियों व ख्वाहिशों को भी माफ करे, जो उसकी आयतों में विवेक उपयोग करने से हमारे दिलों को गाफिल कर देती है, और उम्मीद करते हैं कि हमारे बुरे कार्यों के कारण अल्लाह अपने खैर से हमें महरूम न करे, क्योंकि अल्लाह की जात से केवल काफिर लोग ही निराश हो सकते हैं। और दुरूद व सलाम नाजिल हों अल्लाह के रसूल मुहम्मद(ﷺ)पर, आप के परिवार व साथियों पर। और अल्लाह का शुक्र है जिसकी नेमत से तमाम नेक कार्य पूरे होते हैं।

○○○○○○○○○○○

प्रस्तावना और तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

1. महत्वपूर्ण पाठ(الدروس المهمة)के लेखक कौन हैं? O अब्दुल अजीज बिन बाज(رحمه الله) O मुहम्मद बिन उसैमीन(رحمه الله) O हैसम सरहान(حفظه الله)
2. हम महत्वपूर्ण पाठ क्यों पढ़ें?
   O क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण है। O इसलिए कि उलेमा ने उसे पढ़ने की वसीयत की है।
   O इसलिए कि इसमें वह लाभकारी बातें हैं जिसकी जरूरत मुसल्मानों को है।
   O इन तमाम कारणों से।
3. इस किताब में निम्नलिखीत विषयों का वर्णन है।
   O कुरआन और तौहीद के साथ मुसल्मानों का संबंध O नमाज और वजू।
   O इसलामी स्वभाव और नैतिकताएं। O पापों और गुनाहों से चेतावनी।
   O मृतकों के कफन दफन की विधि। O यह समस्त विषय।
4. सब से पहले किस सूरह की तिलावत और हिफ्ज व व्याख्या शुरू करे?
   O सूरह अलक। O सूरह फातिहा। O सूरह इख्लास।
5. मुसलमान कुरआन में गौर करने और उस पर अमल करने के एतबार से दो समूहों में बंटे हुए हैं, और एक समूह बीच का रासता अपनाया हुआ है। (सही- गलत)
6. तालिबे इल्म सर्वप्रथम कौन सी तफ्सीर पढ़े?
   O इब्ने कसीर। O इब्ने सादी। O कुरतुबी।
7. तालिबे इल्म बड़ी किताबों से पहले छोटी किताबों से आरम्भ करे। (सही- गलत)
8. तालिबे इल्म तफ्सीर की किताबों में ऐसे सूरतों से पढ़ना आरम्भ करे जो पढ़ाई जारी रखने के शौक को बढ़ाए, जैसे सूरह कसस, मरयम, कहफ। (सही- गलत)
9. अगर पढ़ना मुश्किल हो तो तफ्सीर के आडियो से फायदा उठाया जा सकता है, जैसे तफ्सीर सादी का आडियो प्रोग्राम। (सही- गलत)
10. नबी(ﷺ)ने ऐसे लोगों से सावधान किया जो कुरआन तो पढ़ते हैं लेकिन उसके अर्थ पर गौर नहीं करते। (सही- गलत)

सूरह फातिहा की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न:

11. सूरह को इसलिए सूरह कहा जाता है क्योंकि यह दिवारों से घिरा हुआ है ना कुछ निकल सकता है ना अन्दर जा सकता है। (सही- गलत)
12. इसे सूरह फातिहा इसलिए कहा गया क्योंकि:
---
13. सूरह फातिहा के नामों में से यह सब हैं: O उम्मुल कुरआन। O सबआ मसानी। O अर-रुकिया। O अस-सलात। O यह तमाम।
14. तिलावत प्रारंभ करने से पूर्व शैतान से पनाह माँगना क्यों जरूरी है, बावजूद इसके कि हम इबादत शुरू कर रहे हैं, गुनाह नहीं?

---
15. शब्द(أعوذ)का क्या अर्थ है?
---
16. शैतान को रजीम कहा गया है: O क्योंकि वह अल्लाह की रहमत से दूर किया गया है। O क्योंकि वह तारों से मारा जाता है। O क्योंकि वह आदमी के अन्दर इच्छाएँ और संदेह डालता है। O यह तमाम चीजें।
17. (بسم الله)में जार व मजरूर, उपयुक्त हटाई गई क्रिया से संबंधित है।(सही- गलत)
18. (الله)अल्लाह: O बतौर मुहब्बत और ताजीम वे पुज्य हैं। O यह नाम अल्लाह के सिवाय किसी और का नहीं है। O यह तमाम नामों का संदर्भ है। O कहा जाता है कि यह अल्लाह का इस्म-ए-आजम है। O पुकारने के वक्त अलिफ व लाम पोशीदा नहीं किये जाते। O यह तमाम बातें।
19. अल्लाह के दोनों अच्छे नामों(الرحمن الرحيم) के दरमियान क्या फर्क है?

---
20. बन्दों के लिए अल्लाह की तर्बियत दो प्रकार के हैं, वह दोनों क्या है? O आम और खास तर्बीयत। O मुत्लक और मुकय्यद तर्बियत।
21. अधिक्तर नबियों की दुआओं के शब्द होते थे: O (اللهم)ऐ अल्लाह। O (الرب)ऐ मेरे रब।
22. यौमुद्दीन(يوم الدين) का अर्थ है: O क्यामत का दिन। O वह दिन जब इंसान को कार्य का बदला दिया जाएगा। O यह तमाम चीजें।

23. (ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ)यह व्यापक और बन्दों के लिए लाभकारी दुवाओं में से एक है। (सही- गलत)

24. दीन का अर्थ होता है।

O बदला। O कार्य। O कभी बदला और कभी कार्य।

25. क्रिया को कर्ता से आगे करना फायदा देता है:

O सीमित होने का। O कोई फयदा नहीं।

26. इबादत् को तलबे मदद् से पहले उल्लेख करना किस प्रकार का है?

O आम को खास से आगे करना। O अल्लाह के हक को बन्दे के हक से आगे करना। O यह तमाम चीजें।

27. (إياك نعبد) बहुवचन के साथ क्यों आया है?

---

28. इबादत: O उन तमाम जाहिरी और छिपे हुए कार्यों और बातों के समूह को इबादत कहते हैं, जिन्हें अल्लाह पसन्द करता और उससे राजी होता है। O मुहब्बत और ताजीम के साथ हुक्मे इलाही का पालन करना। O कभी पहला अर्थ तो कभी दूसरा अर्थ।

29. अल्लाह के कलाम(ٱهۡدِنَا)में हिदायत से क्या मुराद है?

O मार्गदर्शन। O तौफीक। O दोनों।

30. अल्लाह का कलाम(صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ)का अर्थ है: O इस उम्मत के वे लोग जो ईमान लाए। O नबियों, सिद्दीकों, शहीदों, और नेकलोगों का वह समूह जिन पर अल्लाह ने इनाम किया।

31. (إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ)शरीअत व तकदीर दोनों को शामिल है। (सही- गलत)

32. निम्नलिखीत सूरतों में से कौन सा सूरह उन बातों को शामिल है जो दूसरे सूरह में नहीं है?

O सूरह फातिहा। O आयातुल कुर्सी। O सूरह इख्लास।

33. अल्लाह का कलाम(ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ)इन चीजों को शामिल है: O नबूवत को साबित करना। O तमाम पथभ्रष्ट व नवाचारी लोगों का जवाब देना। O दोनों चीजें।

34. अल्लाह का कलाम(مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ)इन चीजों को शामिल है:

O निस्संदेह बदला इंसाफ के साथ होगा। O वास्तव में बन्दा कर्ता है।

O पिछली तमाम बातें। O बदला सिर्फ कार्य का मिलेगा।

आयतुल कुर्सी की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न।

35. आयातुल कुर्सी को यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि उसमें कुर्सी का जिक्र है।(सही- गलत)

36. कुरआन में सबसे बड़ी आयत कौनसी है?
O ऋण वाली आयत। O दस हकों वाली आयत। O आयतुल कुर्सी।

37. कुरआन अर्थ के एतबार से महान है। (सही- गलत)

38. आयतुल कुर्सी में कितने अस्मा-ए-हुस्ना(अल्लाह के अच्छे नाम)मौजूद हैं:
O पाँच। O छह। O सात।

39. अल्लाह के नाम (الحي)में कौन सा कमाल मौजूद है।
O जाती। O सुलतानी।

40. अल्लाह के नाम (القيوم)में कौन सा कमाल मौजूद है।
O जाती। O सुलतानी।

41. जब(الحي) (القيوم) के साथ मिल कर आए तो जाती और सुल्तानी दोनों कमाल पर दलालत करता है। (सही- गलत)

42. अल्लाह के दोनों नाम(الحي)और(القيوم)एक साथ मिलकर कितनी जगह पर आया है।
O तीन जगह। O चार जगह। O दो जगह।

43. इंकार किये गये सिफतों में जरूरी है कि अल्लाह से उनका इंकार बिल्कुल उसी प्रकार किया जाए जिस प्रकार अल्लाह ने और रसूल(ﷺ)ने किया है। साथ में उसके विपरीत को साबित किया जाना जरूरी है, क्योंकि सिर्फ इंकार में खूबी नहीं है। उसका उदाहरण यह है कि हम अल्लाह से ऊँघ और नींद का इंकार करते हैं, तो यह उनके पूर्ण जिंदगी और पूर्ण कय्यूमियत को साबित करता है। (सही- गलत)

44. अल्लाह तआला शिफारिश की इजाजत सिर्फ उसी को देगा जिस से वे राजी होंगे, और वे राजी होंगे सिर्फ: O तौहीद से। O रसूल के अज्ञापालन से। O दोनों से।

45. शरीअत और तक्दीर से संबंधित जिन चीजों की जानकारी अल्लाह ने बन्दों को दी वह: O बहुत कम है। O ज्यादा है।

46. अल्लाह का कलाम(يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ)वर्तमान काल और भविष्य काल को सम्मिलित है। और(وَمَا خَلْفَهُمْ)अतीत काल को शामिल है। (सही- गलत)

47. अल्लाह का नाम(العلي)अल-अली, जिसका अर्थ है बुलंद, और वे बुलंद हैं:
O व्यक्तित्व के एतबार से। O गुणों के एतबार से। O तमाम मख्लूक पर नियंत्रण के एतबार से। O इन तमाम कारणों से।

48. जिसने इसे रात में पढ़ लिया अल्लाह की जानिब से उसकी हिफाजत होती रहेगी, और शैतान उसके करीब नहीं आएगा, यहाँ तक कि सुबह हो जाए। वह क्या है?
O सूरह बकरह की आखरी आयतें। O आयतुल कुर्सी।

49. आयतुल कुर्सी पढ़ी जाती है: O फर्ज नमाजों के बाद। O सोते समय।
O सुबह व शाम। O इन सभी समय में।

सूरह जलजला की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न:

50. सूरह जलजला: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

51. सूरह जलजला में: O चेतावनी है। O प्रेरना है। O दोनों है।

52. अल्लाह तआला का कलाम(إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا) बिल्कुल वैसा है जैसे अल्लाह का फरमान(﴿فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ١٠٦ لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَآ أَمْتًا ١٠٧﴾)। (सही- गलत)

53. अल्लाह तआला का कलाम कि जमीन अपना बोझ निकाल देगी उसका अर्थ है:
O पहाड़ और टीले। O मुर्दे और खजाने।

54. जमीन उन गवाहों में से एक है जो बन्दों के कार्यों की गवाही देगी। (सही- गलत)

55. अल्लाह का कलाम(أَشْتَاتًا)का अर्थ है: O हर शख्स अलग अलग। O विभिन्न समूह में।

56. अल्लाह का कलाम(فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ)बिल्कुल वैसी है जैसे अल्लाह का फरमान (وَوَجَدُوا۟ مَا عَمِلُوا۟ حَاضِرًا)है (अल-कहफ:49)। (सही- गलत)

सूरह अल-आदियात की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

57. सूरह अल-आदियात: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

58. अल-आदियात(العاديات)का शाब्दिक अर्थ है:
O घोड़ा। O हर चीज जो हरकत करे। O दोनों।

59. सूरह आदियात में वाजिब हकों को अदा ना करने पर चेतावनी दी गई है।(सही- गलत)

60. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बयान कीजिए:

(ضَبْحًا)----------

(قَدْحًا)----------

(نَقْعًا)----------

(لَكَنُودٌ)----------

सूरह अल-कारिआ की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

61. सूरह अल-कारिआ: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।
62. सूरह कारिआ का मक्सद है डराना: O क्यामत की भीषणता से। O दुनिया की आज्माइशों से।
63. अल-कारिआ से मुराद है: O चेतावनी की आयतें O क्यामत का दिन।
64. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बयान कीजिए:
(كَٱلْفَرَاشِ ٱلْمَبْثُوثِ)----------
-(كَٱلْعِهْنِ ٱلْمَنفُوشِ)----------
65. इस सूरह में उल्लेखित तराजू का अर्थ है: असली तराजू। इंसाफ की तरफ संकेत।
66. (عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ)खूशहाल जिंदगी अर्थात: O दुनिया में। O जन्नत में।
67. (فَأُمُّهُۥ هَاوِيَةٌ)का अर्थ है: O जहन्नुम उससे उसकी माँ की तरह चिमटा होगा। O उसके दिमाग की माँ यानी जड़ आग में होगी। O यह दोनों बातें।
68. अल्लाह के फरमान(وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا هِيَهْ)में: O जहन्नुम के भयावहता को दिखाया गया है। O उसके बारे में प्रश्न किया गया है।
69. जहन्नम के नामों में से(इससे अल्लाह की शरण चाहते हैं): O अल-हावियह है। O जहन्नम है। O अल-हुतमह है। O लजा है। O अस-सईर है। O सकर है। O यह तमाम नाम हैं।
70. (نَارٌ حَامِيَةٌ)गरम आग (हम इससे अल्लाह की शरण चाहते हैं)। उस की गर्मी दुनिया की आग से कितना गुना ज्यादा है?
O सत्तर गुना। O नव्वे गुना। O निन्यान्वे गुना।

सूरह अल-तकासुर की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

71. सूरह अल-तकासुर: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।
72. इस सुरह में: O लोगों के हालात की खबर दी गई है। O इंसान जिस मक्सद के लिए पैदा किये गये उसे भूलने पर चेतावनी दी गई है।
73. इस सूरह में ज्यादा तलब करने से मना किया गया है, अगरचे उससे इरादा अल्लाह को राजी करने का हो। (सही- गलत)
74. यह कहावत कि वह अपने आखरी ठिकाने को पहूँच गया: O इसमें मरने के बाद उठाये जाने का इंकार है। O ऐसा कहना जायेज है।

75. अल्लाह तआला के कलाम(حَتَّىٰ زُرۡتُمُ)में उनको यात्री के नाम से पुकारा गया और निवासी के नाम से नहीं पुकारा, क्यों? O क्योंकि बर्जख् ऐसा घर है जिसका लक्ष्य आखिरत के घर तक पहूँचना है। O क्योंकि वे दुनिया में अपने घरों से कब्र तक जा चुके हैं जो उनका अपना नहीं।

76. इल्म तीन प्रकार के हैं: O यकीनी इल्म। O यकीनी दर्शन। यकीनी हक। (सही- गलत)

सूरह अल-अस्र की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

77. सूरह अल-अस्र: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

78. सूरह अल-अस्र में चार चीजों के ऊपर दलील है: इल्म, अमल, दावत व सब्र। (सही- गलत)

79. गैरुल्लाह के कसम खाने के संबंध में निम्नलिखित कौन सा जुमला सही है?
O अल्लाह के लिए जायज है कि अपने मख्लूक में से जिस की चाहे कसम खाये।
O मख्लूक के लिए जायज नहीं कि अल्लाह को छोड़ कर किसी की कसम खाये।
O मख्लूक के लिए जायज है कि गैरुल्लाह की कसम खाये। O पहला और दूसरा उत्तर।

80. सब्र कितने प्रकार के हैं: O दो प्रकार। O तीन प्रकार। O चार प्रकार।

81. इस सूरह में चार महत्वपूर्ण बातें हैं, पहले के दो को पालन करके बन्दा खूद को पूर्ण कर लेता है, और बाद के दो के जरिए बन्दा दूसरे को पूर्ण बनाता है। (सही- गलत)

सूरह अल-होमजा की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

82. सूरह अल-होमजा: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

83. (ويل)शब्द का अर्थ है: O जहन्नम की एक वादी। O एक चेतावनी, जो जहन्नम की वादी और दूसरी चीजों को शामिल है।

84. (الهمز)बातों के जरिए और (اللمز)कार्यों के जरिए होता है। (सही - गलत)

85. (يَحۡسَبُ أَنَّ مَالَهُۥٓ أَخۡلَدَهُۥ) इस आयत से पता चलता है कि नेकी उम्र में वृद्धि करती है। (सही- गलत)

86. अल्लाह का फरमान(وَمَآ أَدۡرَىٰكَ)का अर्थ है कि आप(ﷺ)ने: O जाना। O नहीं जाना।

87. अल्लाह तआला के कलाम(نَارُ ٱللَّهِ ٱلۡمُوقَدَةُ)में आग के ईंधन का मतलब है: O इंसान। O पत्थर। O दोनों।

88. अल्लाह का फरमान(تَطَّلِعُ عَلَى ٱلْأَفْـِٔدَةِ)आग जो दिलों तक पहूँचती है, उसका अर्थ:
O जो धारणा तुम दिलों में पालते हो। O शरीरों से होते हुए दिलों को पहूँचेगी।

सूरह अल-फील की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

89. सूरह अल-फील: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।
90. इस सूरह में सबक यह है कि जब पृथ्वी का सबसे बड़ा जानवर अल्लाह के घर पर हमला करने से डरता है, तो इंसान को और ज्यादा डरना चाहिए। (सही- गलत)
91. नबी(ﷺ)पैदा हुए: O हाथी के साल। O गम के साल। O सूखे के साल।
92. यह सूरह नबी(ﷺ)की नबूवत के लिए अग्रदूत है। और यह सब असाधारण बातें हैं जो नबी(ﷺ)के लिए उनके मिशन से पहले जाहिर हुएँ। (सही- गलत)
93. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बयान कीजिए:

(طَيْرًا أَبَابِيلَ)यानी:----------

(كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ)यानी:----------

सूरह कुरैश की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

94. सूरह कुरैश: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।
95. इस सूरह का संबंध है: O सूरह फील से। O सूरह काफिरून से। O सूरह नास से।
96. सर्दी में कुरैश की यात्रा शाम की ओर होती थी, और गर्मी में यमन की ओर। (सही- गलत)
97. अल्लाह तआला ने मक्का व मक्का के वासियों की महानता अरब के दिलों में डाल दी, यहाँ तक कि वे उन का सम्मान करते, और कोई नुक्सान नहीं पहूँचाते थे:
O मक्का में। O मक्का में भी और सफर में भी।
98. अल्लाह तआला ने काबा के साथ अपनी रुबूबियत को खास किया, उसके सम्मान व महानता को बताने के लिए, वरना वे हर चीज के रब हैं। (सही- गलत)
99. (رَبَّ هَٰذَا ٱلْبَيْتِ) इसमें मख्लूक की इजाफत् खालिक की तरफ है उनके सम्मान को बताने के लिए। (सही- गलत)

सूरह अल-माऊन की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

100. सूरह अल-माऊन: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।
101. अल्लाह के कलाम(أَرَءَيْتَ ٱلَّذِى يُكَذِّبُ بِٱلدِّينِ)में(الدين)शब्द का अर्थ है:

O जी उठना और बदला दिया जाना। O कर्ज लेना और हकों का इंकार करना।

102. (يَدُعُّ)शब्द का अर्थ है: O छोड़ देना। O ताकत के साथ धक्के देना।

103. यतीम वह है जिस के: O पिता का देहांत हो गया हो। O माता का देहांत हो गया हो।

104. इसी तरह यतीम उसको कहते हैं जो: O बालिग ना हुआ हो। O बालिग हो गया हो।

105. नमाज में भूल होना इंसान को दोषी बनाता है, और नमाज को भुल जाना तो यह हर शख्स से हो सकता है। (सही- गलत)

106. दिखावा करने का हुक्म: O जायज है। O मकरूह है। O हराम है। O छोटा शिर्क है। O बड़ा शिर्क है।

107. इस सूरह में भलाई के काम पर उभारा गया है। (सही- गलत)

108. इस आयत में उल्लेख किये गए माऊन शब्द का अर्थ है: O बर्तन वगैरह। O हर वह चीज जिसके उपयोग की अनुमति देने की परंपरा लोगों में पायी जाती है।

सूरह अल-कौसर की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

109. सूरह अल-कौसर : O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

110. अल-कौसर नाम है: O एक नहर का। O बहुत सारी भलाईयों का।

111. अल्लाह ने इन दो इबादतों यानी नमाज और कुर्बानी को खास करके जिक्र किया, क्योंकि यह दोनों सर्वश्रेष्ठ इबादत हैं। (सही- गलत)

112. (شَانِئَكَ)यानी: O आप से नफरत करने वाले। O आप को बद्नाम करने वाले। O आप का अपमान करने वाले। O उपरोक्त सभी।

113. अल्लाह का कलाम(هُوَ ٱلْأَبْتَرُ)अपने अर्थ से दलालत करता है कि नबी(ﷺ)से मुहब्बत करने वाले की प्रशंसा व जिक्र बाकी रहने वाली है। (सही- गलत)

114. इस सूरह में आप(ﷺ)के असंख्य समर्थक व मदद्गार होने के सबूत हैं। (सही- गलत)

सूरह अल-काफिरून की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

115. सूरह अल-काफिरून: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

116. सूरह काफिरून किस नमाज की पहली रकात में सूरह फातिहा के बाद पढ़ी जाती है: O फज्र की सुन्नत में। O मगरिब की सुन्नत में। O तवाफ की सुन्नत में। O वित्र में। O इन तमाम नमाजों में।

117. शिर्क की मिलावट वाली इबादत: O अपूर्ण इबादत है। O इबादत है ही नहीं।

118. (قُلْ) में संबोधन: O नबी(ﷺ)को है। O नबी(ﷺ)और हर उस शख्स को जिसे संबोधित किया जा सके।

119. इस सूरह में काफिरों से मुराद: O वे लोग जिन्हें नबी(ﷺ)की दावत पहूँची और वे ईमान नहीं ले आए,जैसे यहूदी व ईसाई। O मक्का के काफिरगण।

120. इस सूरह में शिर्क और शिर्क वालों से, दिल जुबान और शरीर के अंगों के द्वारा, बराअत् का इजहार किया गया है। (सही- गलत)

121. इस सूरह में शब्दों का दोहराया जाना: O ताकीद के लिए है। O इसलिए कि पहला जुमला काम के ना पाये जाने पर दलालत करे, और दुसरा जुमला इस बात पर दलालत करे कि यह उनकी लाजिमी आदत बन गयी है।

सूरह अन-नस्र की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

122. सूरह अन-नस्र: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

123. इस सूरह में एक खूश्खबरी, एक समाचार, एक हुक्म, एक चेतावनी है। (सही- गलत)

124. इस उम्मत व इस धर्म पर अल्लाह की रहमतें व दया इतनी हैं जो किसी के मस्तिष्क व कल्पना में ना आए। (सही- गलत)

125. इस सूरह में इस बात का इशारा है कि आप(ﷺ)के देहांत का समय करीब आ चुका है। (सही- गलत)

126. इस सूरह पर अमल करते हूए आप(ﷺ)अक्सर रुकू व सजदे में पढ़ा करते थे: (سبحانك اللهم ربنا وبحمدك، اللهم اغفر لي)। (सही- गलत)

सूरह अल-मसद की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

127. सूरह अल-मसद यह: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

128. अबूलहब: O आप(ﷺ)के चाचा थे। O उसका आप(ﷺ)से कोई रिश्ता नहीं था।

129. क्यामत के दिन तक भर्त्सना की जाएगी: O अबूलहब की। O हर उस शख्स की जो नबी(ﷺ)से दुशमनी रखे।

130. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बयान कीजिए:

(تَبَّتْ)----------

(وَمَا كَسَبَ)----------

(حِيدِهَا)----------

(مَّسَدٍ)----------

131. इस सूरह में अल्लाह की निशानियों में से एक प्रभावशाली निशानी यह है कि अबूलहब व उसकी बीवी इसलाम कबुल नहीं करेंगे। (सही- गलत)

सूरह अल-इख्लास की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

132. सूरह अल-इख्लास यह: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

133. सूरह इख्लास को यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि: O यह अल्लाह के गुणों को बयान करने में खालिस है। O अपने पढ़ने वाले को शिर्क से नजात दिलाता है। O यह दोनों बातें।

134. नेकी में यह सूरह बराबर है: O आधे कुरआन के। O एक चौथाई कुरआन के। O एक तिहाई कुरआन के।

135. दूसरी रकात में सूरह फातिहा के बाद यह सूरह पढ़ी जाती है: O फज्र की सुन्नत में। O मगरिब की सुन्नत में। O तवाफ की सुन्नत में। O वित्र की नमाज में। O फर्ज नमाजों के बाद। O सोते समय। O उपरोक्त सभी।

136. सूरह काफिरून और सूरह इख्लास दिन व रात पढ़ी जाती है, ताकि तौहीद के तीनों किस्मों का पूर्ण पालन हो सके। (सही- गलत)

137. सूरह इख्लास में: O तौहीदे उलूहीयत है। O तौहीदे रबूबियत व तौहीदे अस्मा व सिफात है।

138. (قل)का वास्तविक अर्थ है कि: O सिर्फ जुबान से हो। O जुबान दिल और अमल से।

139. अल्लाह का फरमान(هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ)अल्लाह एक है, यानी अपनी रुबूबीयत, उलूहियत, अस्मा व सिफात में अकेला है। (सही - गलत)

140. अल्लाह का फरमान(ٱلصَّمَدُ)बेनियाज का अर्थ है: O जो समस्त जरूरतों में आश्रय हैं। O जो खूद कायम हैं और दूसरे भी उनकी वजह से कायम हैं। O वह सरदार जो सरदारी,उलूहीयत,रुबूबियत,और अस्मा व सिफात में पूर्ण हैं। O उपरोक्त सभी।

141. अल्लाह की जानिब औलाद या बाप की निस्बत करना बड़ा कुफ्र है। (सही- गलत)

सूरह अल-फलक की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

142. सूरह अल-फलक यह: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

143. सूरह फलक पढ़ी जाती है:

O फर्ज नमाजों के बाद। O सोते समय। O दोनों समय।

144. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बयान कीजिए:

(أَعُوذُ)----------

(ٱلْفَلَقِ)----------

(غَاسِقٍ)----------

(وَقَبَ)----------

(ٱلنَّفَّٰثَٰتِ)----------

(ٱلْعُقَدِ)----------

(حاسدٍ)----------

145. इस सूरह में: O आम और खास रूप से पनाह माँगने का बयान है।

O इस चीज का बयान है कि जादू की वास्तविकता है। O यह दोनों बातें।

सूरह अन-नास की तफ्सीर से संबंधित प्रश्न

146. सूरह अन-नास यह: O मक्की सूरह है। O मदनी सूरह है।

147. सूरह अन-नास पढ़ी जाती है: O फर्ज नमाजों के बाद। O सोते वक्त। O दोनों समय।

148. (ٱلْخَنَّاسِ)शब्द का क्या अर्थ है: ----------

दूसरा पाठ

दूसरा पाठ: इसलाम के अरकान

इसलाम के पाँच अरकान हैं: सबसे पहला और बड़ा हैःलाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की गवाही देना उसके अर्थों एवं शर्तों समेत।

अर्थ: (لا إله)में अल्लाह के सिवा समस्त माबूद(आराध्य)जिनकी पूजा की जाती है सबका इंकार है। (إلا الله)में सिर्फ अल्लाह के लिए समस्त इबादत का इकरार है।

लाइलाहा इल्लल्लाह की शर्तें:

1.ऐसा इल्म जो अज्ञानता के विपरीत हो। 2.ऐसा यकीन जो शक के विपरीत हो। 3.ऐसा इख्लाल जो शिर्क के विपरीत हो। 4.ऐसी सच्चाई जो झूठ के विपरीत हो। 5.ऐसी मुहब्बत जो नफरत के विपरीत हो। 6.ऐसा आज्ञा जो नाफरमानी के विपरीत हो। 7.ऐसा कबूल जो इंकार के विपरीत हो। 8.अल्लाह के सिवा जिनकी पूजा की जाती है सबका इंकार हो। इन तमाम शर्तों को इन पंक्तियों में जमा कर दिया गया है।

علم يقين وإخلاص وصدقك مع ... محبة وانقياد والقبول لها

وزيد ثامنها الكفران منك بما ... سوى الإله من الأشياء قد ألها

मुहम्मद रसूलुल्लाह(ﷺ)की गवाही और उसके तकाजे का बयान:

आप(ﷺ)की बताई हुई खबर को सच्चा मानना, आप के आदेश का पालन करना, आप की मना की हूई चीजों से रुक जाना, और आप की लाई हूई शरीअत के मुताबिक आल्लाह की इबादत करना।

फिर तालिबे इल्म के सामने बाकी अरकान का जिक्र किया जाए, जो यह हैं: नमाज, जकात, रमजान के रोजे, अल्लाह के घर(काबा) का हज जिसके पास जाने की ताकत हो।

(لاإله إلا الله) के अरकान

साबित करन(إلا الله)	इंकार करना (لا إله)
सिर्फ अल्लाह के लिए इबादत को साबित करना (अल्लाह पर ईमान)	अर्थात अल्लाह के सिवा समस्त बातिल माबूदों का इंकार (तागूत का इंकार)

الشعر: لكلمة الإخلاص ركنان هما النفي والإثبات فاحفظهما

अनुवादः कलिमा-ए-इख्लास के दो रुक्न हैः एक इंकार, दूसरा इकरार, दोनों को अच्छी तरह याद कर लो।

लाइलाहा इल्लल्लाह के शर्तों की व्याख्या:

लाइलाहा इल्लल्लाह के शर्तों का उदाहरण एक कुंजी के दांत जैसा है। तो जब कलमा लाइलाहा इल्लल्लाह जन्नत की कुंजी है, और कुंजी दांत के बिना किसी काम की नहीं, तो इसी लिए कुरआन व हदीस में जो भी आया है कि जो शख्स लाइलाहा इल्लल्लाह कह लेगा उसके लिए यह इनाम है, तो उस इनाम को हासिल करने के लिए इन शर्तों का पूरा होना जरुरी है। और वह आठ हैं:

1.**लाइलाहा इल्लल्लाह के अर्थ का ज्ञान**: इसका विपरीत है उसके अर्थ को ना जानना। तो जो शख्स उसके अर्थ को ना समझे, वह उससे फायदा नहीं उठा सकता। इसी लिए जो शख्स इसलाम में दाखिल होना चाहता है, उसके लिए जरूरी है कि लाइलाहा इल्लल्लाह के अर्थ को पूरा समझे। नबी(ﷺ)ने इरशाद फरमाया:(من مات وهو يعلم أنه لا إله إلا الله، دخل الجنة) जिस व्यक्ति का इस हाल में देहांद हो कि वह लाइलाहा इल्लल्लाह के अर्थ को जानता था तो वह जन्नत में दाखिल होगा।(सही मुस्लिम:26)

2.यकीन: यानी शत प्रतिशत यकीन। अगर कोई सौ प्रतिशत में से एक प्रतिशत भी तागूत के इंकार में शक करे या तरद्दुद करे, तो वह तौहीद प्रस्त नहीं, इसी तरह यहूद व नसारा के काफिर होने में शक करे जिन तक नबी(ﷺ)की दावत पहँच चकी. तो भी वह तौहीद प्रस्त नहीं। नबी(ﷺ)का डरशाद है:

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई आराध्य नहीं, और मैं अल्लाह का रसूल हूँ, जिसने इन दोनों के साथ शक ना करते हूए अल्लाह से मुलाकात की, तो वह जन्नत में दाखिल होगा। (सही मुस्लिम:27)

3.इख्लास: जिस ने इस में दिखावा से काम लिया, या बड़ा शिर्क किया, जैसे गैरुललाह की इबादत की, तो यह कलमा उसे फायदा नहीं पहूँचाएगा। नबी(ﷺ)ने फरमाया: मेरी शिफारिश का ज्यादा हकदार वह शख्स है जिसने लाइलाहा इल्लल्लाह का इकरार खालिस दिल से किया।(सही बुखारी:99)

4.सच्चाई: जिस ने झूटे दिल से इस कलमा का इकरार किया(जैसे मुनाफिक)तो उसे यह कोई फायदा नहीं पहूँचाएगा। नबी(ﷺ)ने फरमाया: जिस किसी ने सच्चे दिल से गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के बन्दे व रसूल हैं, तो अल्लाह उस पर जहन्नम हराम कर देंगे। (बुखारी व मुस्लिम)।

5.मुहब्बत: इंसान अल्लाह से मुहब्बत करे, और अल्लाह के साथ किसी दूसरे से मुहब्बत ना करे, और अल्लाह ने जिन से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है उन से भी मुहब्बत करे। मुहब्बत का विपरीत शब्द नफरत है। इसी लिए इसलाम से खारिज करने वाली चीज है रसूल(ﷺ)की लाई हूई शरीअत से नफरत करना, अगरचे उस पर अमल भी करता हो फिर भी काफिर हो जाता है। अल्लाह फरमाते हैं: कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए।(बकरह:165)

6.आत्मसमर्पण: सर झुका कर इसको मान लेना,इस पर अमल करना, जिस ने अमल नहीं किया उसे कलमा से कोई फयदा नहीं होगा। अल्लाह फरमाते हैं: तो तुम्हें तुम्हारे रब की कसम! ये ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगड़ों में ये तुमसे फ़ैसला न कराएँ। फिर जो फ़ैसला तुम कर दो, उसपर ये अपने दिलों में कोई तंगी न पाएँ और पूरी तरह मान लें। (निसा:65)

7.कबूल: यानी बात या अमल या अकीदा को ना ठुकराए। अल्लाह फरमाते हैं: उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है। तो वे घमंड में आ जाते थे। और कहते थे, "क्या हम एक उन्मादी कवि के लिए अपने उपास्यों को छोड़ दें? (साफ्फात:36)

मुहब्बत के प्रकार

प्राकृतिक मुहब्बत:
यह मुहब्बत जायज है इस शर्त पर कि अल्लाह की मुहब्बत से ऊपर ना हो। जैसे बच्चे और बीवी से मुहबबत। आप(ﷺ)ने फरमाया: तुम में से कोई भी उस वक्त तक पूर्ण मोमिन नहीं हो सकता जबतक कि मैं उसके लिए उसके बाप बेटे और तमाम लोगों से ज्यादा प्यारा ना हो जाऊँ। (बुखारी व मुसलिम)

अल्लाह के लिए मुहब्बत करना:
मुहब्बत की यह किस्म वाजिब ही नहीं बल्कि ईमान की मजबूत रस्सियों में से एक है। अल्लाह फरमाते हैं: अल्लाह के रसूल मुहम्मद और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफिरों पर भारी हैं, आपस में दयालु हैं।(फतह:29)

यह चार चीजों में होता है:

- उस स्थान से मुहब्बत करना जिसे अल्लाह पसन्द करते हैं। जैसे मक्का और मदीना
- उस समय से मुहब्बत करना जिसे अल्लाह पसन्द करते हैं। जैसे शबे कदर, रात की आखिरी तिहाई
- नेक कार्य करने वालों से मुहब्बत करना। जैसे नबी, रसूल, फरिश्ते, सहाबा और हर वह शख्स जो तौहीद पर चलता है।
- उस कार्य से मुहब्बत करना जिसे अल्लाह पसन्द करते हों। और यह हर वह चीज है जिसे शरीअत लेकर आई है, जैसे तौहीद

अल्लाह के साथ किसी और से मुहब्बत करना:
ऐसा करना शिर्के अकबर है। अल्लाह फरमाते हैं: कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए।(बकरह:165)

(محمد رسول الله) की गवाही में (عبده)का क्या अर्थ है

मुहम्मद(ﷺ)मख्लूक में सबसे ज्यादा अल्लाह की इबादत करने वाले हैं, और उन्होंने पूर्ण बन्दगी के सारे तकाजे पूरे किये।

मुहम्मद(ﷺ)अल्लाह के बन्दे हैं, और जो खुद बन्दा है उसकी इबादत दुरुस्त नहीं, क्योंकि उनमें रुबूबियत उलूहियत और अस्मा व सिफात के लक्षण नहीं पाये जाते

अल्लाह की बन्दगी के प्रकार

अति विशेष बन्दगी:

यह ऐसी बन्दगी है जो रसूल(ﷺ)अदा करते हैं। अल्लाह तआला नूह(ﷺ)के बारे में फरमाते हैं: निस्संदेह वह शुक्र गुजार बंदे थे।(इस्रा:3) यह बन्दगी जो रसूलों की तरफ निस्बत की गई है वह अति विशेष कहलाएगी, क्योंकि इन रसूलों का इबादत के मैदान में कोई मुकाबला नहीं कर सकता।

विशेष बन्दगी:

यह आम इबादत की बन्दगी है। अल्लाह तआला फरमाते हैं: और रहमान के बन्दे वह हैं जो जमीन पर विनम्रता से चलते हैं, जब जाहिल लोग उन से मुखातिब होते हैं तो कह देते हैं सलाम हो (फुर्कान:63) इस में वह बन्दे शामिल हैं जो अल्लाह की इबादत उसकी शरीअत के मुताबिक करते हैं।

सामान्य बन्दगी:

यह है रुबूबियत की बन्दगी,यानी गलबा और काबू रखना,और यह समस्त मख्लूक के लिए सामान रुप से है। अल्लाह तआला फरमाते हैं: आकाश व पृथ्वी में जो भी हैं सब अल्लाह के बन्दे व गुलाम बन कर आने वाले हैं। (मरयम:93) इसमें मोमिन व काफिर सब शामिल हैं।

नबी(ﷺ)की जिवनी का संक्षिप्त वर्णन:

आप(ﷺ)का नसब नामा

आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तालिब बिन हाशिम हैं,और हाशिम कुरैश में से हैं, और कुरैश अरब में से, और अरब इस्माईल(ﷺ)बिन इब्राहीम(ﷺ)की औलाद में से हैं।

आप(ﷺ) का जन्म

आप(ﷺ)हाथी वाले साल रबीउल अव्वल महीने में मक्का में पैदा हूए। 63 साल की उम्र पाई, जिन में चालीस साल नबूवत से पहले के, और 23 साल नबी व रसूल बनकर गुजारे। आप यतीम थे, आप के पिता का आपके जन्म लेने से पहले ही देहांत हो गया था, आप(ﷺ)अपने दादा अब्दुल मुत्तालिब की देखभाल में रहे, फिर उसके देहांत के बाद अपने चाचा अबूतालिब की देखभाल में रहे।

आप(ﷺ)जिन्न व इंसान की तरफ नबी बनाकर भेजे गए, जिस को भी आप की दावत पहूँची, और ईमान नहीं लाया तो वह असली काफिर होगा, चाहे कोई भी हो।	नबी(ﷺ)का मिशन
आप(ﷺ)ने तौहीद और अच्छे कार्य व अच्छे स्वभाव की तरफ दावत दी, और शिर्क, बुरे कार्य व स्वभाव से मना किया।	नबी(ﷺ)की दावत
नबी(ﷺ)को मक्का से बैतुलमुकद्दस तक सैर कराया गया, फिर वहाँ से सातवें आस्मान तक ले जाया गया, जहाँ अल्लाह तआला ने आप से बात की, और पाँच वक्त की नमाजें फर्ज की गईं।	इस्रा और मेराज
आप(ﷺ)ने मक्का से मदीना हिजरत फरमाई, और वहीं आपकी मृत्यु हुई, और मोमिनों की माँ हजरत आइशा के कमरे में दफन किये गए।	नबी(ﷺ)की हिजरत व देहांत
अल्लाह ने आप(ﷺ)के जरिए दीन को पूर्ण कर दिया, आप ने स्पष्ट तौर पर दीन को पहूँचा दिया, अमानत अदा करदी, उम्मत को नसीहत फरमाई, और अल्लाह के रास्ते में हर प्रकार का जिहाद किया, अब किसी के लिए संभव ही नहीं कि इस में किसी भी प्रकार की वृद्धि करे।	इसलाम धर्म को दूसरों तक पहूँचाने का कर्तव्य
यह सात हैं: बदर,उहुद, खन्दक, खैबर, मक्का विजय, तबुक और हुनैन।	महत्त्वपूर्ण गजवात(युद्ध)

कासिम, इब्राहीम, अब्दुल्लाह(तैयब व ताहिर),और जैनब, रुकैया, उम्मे कुल्थूम, फातिमा। इन सभों की वफात आप(ﷺ)की जिन्दगी में ही हो गई थी, सिवाय फातिमा के, उसका देहांत आप(ﷺ)की देहांत के छह महीने बाद हुआ।	नबी(ﷺ)की सात औलादें थीं:
खदीजा, आइशा, सौदह, हफ्सा, जैनब हिलालियह, उम्मे सल्मा, जैनब बिन्त जहश्, जोवैरियह् बिन्त हारिस, सफीयह् बिन्त हुय्य, उम्मे हबीबह, रैहाना बिन्त जैद, मैमूनह बिन्त हारिस। (رضي الله عنهن)	नबी(ﷺ)की बारह बीवीयाँ थीं:
नबी(ﷺ)की माता आमिनह बिन्त वहब, आपके चाचा अबूलहब की लौन्डी सोवैबह, हलीमह बिन्त अबी जोऐब सादीयह।	नबी(ﷺ)को दूध पिलाने वाली महिलाएँ
सूरह अलक की प्रारंभिक पाँच आयतें: ٱقْرَأْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلَّذِى خَلَقَ ۝١ خَلَقَ ٱلْإِنسَـٰنَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢ ٱقْرَأْ وَرَبُّكَ ٱلْأَكْرَمُ ۝٣ ٱلَّذِى عَلَّمَ بِٱلْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ ٱلْإِنسَـٰنَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ **अनुवाद**: पढ़ो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पैदा किया मनुष्य को जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से। पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही उदार है, जिसने कलम के द्वारा शिक्षा दी।	नबी(ﷺ)पर नाजिल होने वाली पहली वही:
पुरुषों में से अबूबक्र सिद्दीक(رضي الله عنه), औरतों में उम्मुल मोमिनीन खादीजा बिन्त खुवैलिद, बच्चों में से अली बिन अबी तालिब(رضي الله عنه),आजाद गुलामों में से जैद बिन हारिसा(رضي الله عنه), गुलामों में से बिलाल बिन रिबाह(رضي الله عنه)।	नबी(ﷺ)पर सर्वप्रथम ईमान लाने वाले:

आप(ﷺ)ने चार उमरे किये, सब के सब जीकादा के महीने में हुआ, और एक बार हज किया जिसे हज्जतुलवादा कहा जाता है, जो कि हिजरत के दसवें वर्ष पूरा हूआ।	नबी(ﷺ)का हज व उमरा
अल्लाह तआला फरमाते हैं: निस्संदेह आप स्वभाव के उच्चतम दरजे पर विराजमान हैं।(कलम:4) और उम्मुल मोमिनीन आइशा फरमाती हैं: कुरआन ही आप का अख्लाक था।(अहमद:25302)	नबी(ﷺ)का स्वभाव
इब्नुल कय्येम(رحمه الله)फरमाते हैं कि: जब दुनिया व आखिरत की भलाई नबी(ﷺ)के तरीके पर चलने में है, तो हर वह शख्स जो स्वयं का शुभचिंतक है, और अपनी नजात व खूशी चाहता है, उसे चाहिए कि नबी(ﷺ)के तरीके, जीवनी व हालात, को अच्छी तरह जान ले, जिससे वह अज्ञानियों के गिरोह से निकल कर, नबी(ﷺ)के अनुयायियों के गिरोह में शामिल हो जाए। और इस मैदान में लोग तीन प्रकार के हैं: ज्यादा करने वाले, कम करने वाले, और सीधे महरूम। और फजल व हिदायत अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहता है नवाजता है, और अल्लाह बडा फज्ल वाला है।	नबी(ﷺ)की जीवनी पढ़ने का महत्त्व

तीसरा पाठ

ईमान के अरकान:

ईमान के छह अरकान हैं: अल्लाह पर ईमान लाना, उसके फरिश्तों पर ईमान लाना, उसके किताबों पर ईमान लाना, उसके रसूलों पर ईमान लाना, आखिरत के दिन पर ईमान लाना, और तक्दीर के अच्छे व बुरे पर ईमान लाना।

ईमान का शरई परिभाषा:

जुबान से इकरार करना, दिल से विश्वास रखना, शरीर के अंगों से अमल करना। ईमान अच्छे कार्य करने से बढ़ता है, और गुनाह करने से घटता है, उसकी दलील निम्नलिखित है:

ईमान के घटने की दलील:	ईमान के बढ़ने की दलील:	दिल से एतकाद की दलील:	शरीर के अंगों से अमल करने की दलील:	जुबान से इकरार करने की दलील:
مارأيت من ناقصات عقل ودين मैंने औरतों के जैसी अल्पबुद्धि अल्प दीन वाला किसी को नहीं देखा	أيكم زادته هذه إيمانا तुम में से किसके ईमान में इससे वृद्धि हुई।	والحياء شعبة من الإيمان शर्म व लज्जा ईमान का एक शाखा है।	नबी(ﷺ)का फरमान (أدناها اماطة الاذى عن الطريق ईमान का निम्न दर्जा है रास्ता से कष्टदायक चीजों को हटाना।	فأعلاها قول لا إله إلا الله ईमान का उच्चतम शाखा है लाइलाहा इल्लल्लाह कहना।

ईमान में वृद्धि के कारण

- अल्लाह के मख्लूक में गौर व फिक्र करना।
- अल्लाह की नाफरमानी और गुनाह के कामों से दूर रहना।
- अल्लाह का अज्ञापालन और अच्छे कार्य ज्यादा से ज्यादा करना।
- तौहीद का अध्ययन करना, विशेषकर अस्मा व सिफात के विषय को

ईमान के घटने के कारण

- अल्लाह के मख्लूक में गौर व फिक्र ना करना।
- अल्लाह की नाफरमानी और गुनाहों के काम करना।
- अल्लाह की इताअत और अच्छे कार्य ना करना।
- तौहीद का अध्ययन ना करना। विशेषकर अस्मा व सिफात के विषय को

ईमान के छह अरकान हैं

- तक्दीर के अच्छे व बुरे पर ईमान लाना।
- आखिरत के दिन पर ईमान लाना
- रसूलों पर ईमान लाना।
- किताबों पर ईमान लाना।
- फरिश्तों पर ईमान लाना।
- अल्लाह पर ईमान लाना।

पहला रुक्न: अल्लाह पर ईमान लाना,यह निम्नलिखित चीजें लाजिम करती है:

अल्लाह तआला के अस्मा व सिफात पर ईमान लाना।	अल्लाह तआला के सच्चे माबूद (उपास्य)होने पर ईमान लाना।	अल्लाह तआला के रब होने पर ईमान लाना।	अल्लाह के मौजूद होने पर ईमान लाना। यह चार चीजों से साबित होता है:
शरीअत से: इब्ने कय्येम(رحمه الله) ने जिक्र किया है कि अल्लाह की किताब में कोई ऐसी आयत नहीं जिसमें अल्लाह के एक होने की दलील मौजूद ना हो।	**प्रकृति से:** आप(ﷺ)ने फरमाया: हर बच्चा इसलाम की प्रकृति पर पैदा होता है, फिर उसके माता-पिता उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना लेते हैं।(बूखारी व मुस्लिम)	**इहसास से:** जब तुम किसी पीड़ा या परेशानी में होते हो, तो हाथ को आस्मान की तरफ उठा कर कहते हो: ऐ मेरे रब। तब अल्लाह के हुक्म से यह परेशानी दूर हो जाती है।	**बुद्धि से:** अक्ल कभी यह मान नहीं सकता कि सृष्टिकर्ता के बिना सृष्टि का वजूद हो जाए। अल्लाह फरमाते हैं: क्या वे बिना किसी सृष्टिकर्ता के पैदा हो गए, या खुद वे सृष्टिकर्ता हैं (तूर:35)

दूसरा रुक्न: फरिश्तों पर ईमान लाना:

फरिश्ते गैब की दुनिया से संबंध रखते हैं, अल्लाह ने उन्हें नूर से पैदा किया है, वे अल्लाह के अज्ञापालन में लगे रहते हैं, और नाफर्मानी नहीं करते। उनकी रूहें हैं, कुरआन में पाक रूह कहा गया,उनके शरीर हैं, अल्लाह फरमाते है: दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पंखवाले फरिश्तों को सन्देशवाहक बनाकर नियुक्त करने वाले। वह संरचना में जैसी चाहता है अभिवृद्धि करता है।(फातिर:1) उनके पास अक्ल और दिल भी होते हैं, अल्लाह फरमाते है: यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाएगी, तो वे कहेंगे, तुम्हारे रब ने क्या कहा.(सबा:23)। हम उन पर और उनके उन नामों पर जिन्हें अल्लाह ने हमें बता दिया ईमान रखते हैं, जैसे जिब्रील, मीकाईल, इस्राफील। उनके गुण व कार्य यह है कि अल्लाह के हुक्म की खिलाफवरजी नहीं करते, वही करते हैं जो हुक्म दिये जाते हैं(तहरीम:6)

कुछ वे फरिश्ते जिनके बारे में हमें खबर दी गई:

उन में से अर्श के उठानेवाले आठ फरिश्ते हैं, और जिब्रील जिनके जिम्मे वहय का काम सोंपा गया है, और मीकाईल जो बारिश के लिए नियुक्त हैं। हम उन तमाम पर ईमान रखते हैं, और उन खबरों पर भी जो उनके बारे हम तक पहूँची है, मोटे तौर पर या विस्तृत तरीके से।

तीसरा रुक्न: किताबों पर ईमान:

हम पर वाजिब है कि यह यकीन व ईमान रखें कि कुरआन अल्लाह का वास्तविक कलाम है। और अल्लाह की तरफ से उतारा गया है, पैदा नहीं किया गया, और अल्लाह ने हर रसूल के साथ एक किताब भेजी, जिन पर हम ईमान रखते हैं, साथ में उनके नामों और हुकमों व खबरों पर भी जो हम तक पहूँची, जब तक मन्सूख ना हुआ हो। और यह भी ईमान रखते हैं कि कुरआन मजीद पुर्व की तमाम किताबों को मन्सूख(समाप्त)कर दिया है, और पूर्व की किताबें यह हैं: तौरात, इन्जील, जबूर, इब्राहीम(عليه السلام)व मुसा(عليه السلام)के सहीफे।

चौथा रुक्न: रसूलों पर ईमान:

जरूरी है कि हम यह ईमान लाएँ कि सभी रसूल इंसान हैं, उन में रुबूबियत का कोई गुण मौजूद नहीं, और वे सब के सब बन्दे हैं, उनकी इबादत नहीं की जा सकती, अल्लाह ने उन्हें रसूल बना कर भेजा, वहय से नवाजा, और निशानियों के जरिए उनहें मजबूत किया। वे अमानत को पूर्ण तौर पर अदा कर चुके, उम्मत की खैरख्वाही की, और अल्लाह की राह में जिहाद का हक अदा किया। हम उन पर और जो कुछ अल्लाह ने हमें उनके नामों गुणों व खबरों के बारे में मोटे तौर पर या विस्तृत जानकारी दी है ईमान रखते हैं, और यह भी कि पहले नबी आदम(عليه السلام)हैं, और पहले रसूल नूह(عليه السلام)हैं, और आखिरी नबी मुहम्मद(ﷺ)हैं, और यह कि पुर्व की तमाम शरीअतें मुहम्मद की शरीअत से मन्सूख हो गई हैं। और अज्म वाले रसूल पाँच हैं, जो दो सूरह में उल्लेख किये गए हैं :मुहम्मद(ﷺ), नूह(عليه السلام), इब्राहीम(عليه السلام), मूसा(عليه السلام), ईसा(عليه السلام)।

पाँचवाँ रुक्न: आखिरत के दिन पर ईमान लाना:

यह रुक्न हर उस चीज पर ईमान को शामिल है, जिसकी नबी(ﷺ)ने खबर दी थी, और जो मौत के बाद होने वाला है, जैसे कब्र का फितना, सूर में फूँका जाना, लोगों का कब्रों से उठ खड़ा होना, मीजान, आमाल नामा,सिरात, हौजे कौसर, शफाअत, जन्नत, जहन्नम, मोमिनों का क्यामत के दिन व जन्नत में अपने रब का दीदार। इसके इलावा दूसरी गैबी चीजें।

छठा रुक्न: तक्दीर के अच्छे व बुरे पर ईमान रखना:

इसके चार दर्जे हैं, जिनको कवि ने अपने पंक्ति में बयान किया है:

علم،كتابة مولانا، مشيئته وخلقه وهو إيجاد وتكوين	इल्म,रब का लिखा,तथा उनकी चाहत और शृष्टि, यही अविष्कार बनावट है।

पैदा करना:

यह ईमान रखना कि बन्दे और उनके सारे कार्य पैदा किये गए हैं। इसी तरह पूरा ब्रह्मांड भी। उसकी दलील अल्लाह का फरमान है: अल्लाह हर चीज का पैदा करने वाला है। (जुमर:62) और यह फरमान भी: अल्लाह ने तुमको और तुमहारे कार्यों को पैदा किया। (साफ्फात:96)

मशीअत:

यह ईमान रखना कि अल्लाह जो चाहते हैं होता है, और जो नहीं चाहते वह नहीं होता। और बन्दों की भी चाहत होती है लेकिन अल्लाह के इरादे के अधीन है। अल्लाह फरमाते हैं:और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। (अत-तक्वीर:29)

लिखना:

इस बात पर ईमान रखना कि अल्लाह तआला ने क्यामत तक होने वाली हर चीज की तक्दीर लिख दी है।उसकी दलील अल्लाह का फरमान है: आकाश तथा पाताल में छिपी कोई भी चीज ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो (अन-नमल:75)

इल्म:

इस बात पर ईमान रखना कि अल्लाह तआला हर चीज को संक्षिप्त और विस्तृत तौर पर पहले से जानते हैं। इसकी दलील अल्लाह का यह कलाम है: वह जानते हैं जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है। (बकरह:255)

चौथा पाठ

तौहीद और शिर्क के प्रकार:

तौहीद तीन प्रकार के है: तौहीदे रुबूबियत, तौहीदे उलूहियत, तौहीद अस्मा व सिफात।

तौहीदे रबूबियत का मतलब: इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह ही हर चीज का पैदा करने वाला, तसर्रुफ करने वाला है, जिसमें उसका कोई शरीक व साझी नहीं।

तौहीदे उलूहियत का मतलब: इस बात पर ईमान रखना कि अल्लाह ही सच्चे माबूद हैं, उनका कोई शरीक नहीं। और यही लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ है, क्योंकि लाइलाहा इल्लल्लाह का मतलब यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। लिहाजा हर तरह की इबादत, जैसे नमाज,रोजा इत्यादि,अल्लाह के लिए विशुद्ध करना वाजिब है, और उस में से कुछ भी किसी और के लिए करना दुरुस्त नहीं।

तौहीद-ए-अस्मा व सिफात का मतलब: कुरआन-ए-करीम और सही हदीसों में मौजूद अल्लाह के नामों व गुणों पर ईमान लाना, और उनको अल्लाह के लिए साबित करना, बिल्कुल उसी तरह जो उनकी शान के उप्युक्त है, बिना किसी हेर-फेर, निरस्तीकरण, कैफियत, और समानता के। अल्लाह के इस फरमान पर अमल करते हुए कि: आप कह दीजये कि वह अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज है, नहीं जना उसने किसी को, और न ही वह खूद जना गया, और न कोई उसका समकक्ष है। (इख्लास:1-4)। और फरमाते हैं: उसके जैसी कोई चीज नहीं। वही सबकुछ सुनता, देखता है।(अस्-सूरा:11)। कुछ अहले इल्म ने तौहीद की दो किस्में बयान की हैं, और तौहीद अस्मा वस्सिफात को तौहीदे रुबूबियत में शामिल किया है। तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि दोनों विभाजन का मक्सद साफ है।

शिर्क की तीन किस्में हैं: बड़ा शिर्क, छोटा शिर्क, और छिपा हुआ शिर्क।
तो जिस व्यक्ति का देहांत बड़े शिर्क पर रहते हुए हो गया, उसका सारा अमल बर्बाद हो जाता है, और वह सदैव जहन्नमी बन जाता है। जैसे कि अल्लाह ने फरमाया: और यदि उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझी ठहराया होता, तो उनका सब नेक कार्य बर्बाद हो जाता।(अनआम:88)। अल्लाह ने और फरमाया: यह मुशरिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें और उसके प्रबंधक हों, जबकि वे स्वयं अपने ऊपर कुफ्र की गवाही दे रहे हैं, उन लोगों का सारा नेक कार्य बर्बाद हो गया,और वे आग में सदैव रहेंगे।(तौबा:17)। और जिस शख्स की मौत शिर्क पर हो जाती है उसकी माफी नहीं होगी,और जन्नत उस पर हराम हो जाती है, जैसे कि अल्लाह ने फरमाया: अल्लाह इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी ठहराया जाए। किन्तु उससे नीचे दर्जे के अपराध को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा।(निसा:48)। अल्लाह तआला और फरमाते हैं: जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।(मायेदा:72)।
शिर्क के कुछ प्रकार: मृतकों और बुतों को पुकारना, उनसे फरियाद करना, उनके लिए नजर मानना, और कुर्बानी करना, इत्यादि।
छोटे शिर्क का अर्थ: वह चीजें जिसे कुरआन व हदीस में शिर्क कहा गया है, परन्तु वह बड़ा शिर्क जैसा नहीं है। जैसे नेक कार्य में दिखावा करना, गैरुल्लाह की कसम खाना, और यह कहना कि अल्लाह ने और उस शख्स ने चाहा, इत्यादि। क्योंकि अल्लाह के रसूल(ﷺ)ने फरमाया: मुझे तुम पर सबसे ज्यादा छोटे शिर्क का डर है, फिर उसके बारे में पूछा गया तो फरमाया: नेक कार्य में दिखावा करना।(अहमद:23630)। और फरमाया: जिस ने अल्लाह के सिवा किसी और की कसम खाई उसने शिर्क किया।(अबूदाऊद:3251)। और फरमाया: यह ना कहो कि अल्लाह जो चाहे और वह शख्स जो चाहे, बल्कि यह कहो कि अल्लाह जो चाहे फिर वह शख्स जो चाहे। (अबूदाऊद:4980)

छोटे शिर्क से कोई व्यक्ति ना मुर्तद होता है, और ना सदा के लिए जहन्नमी बनता है, लेकिन उसकी तौहीद में कमी जरूर आती है, जो अपेक्षित पूर्ण तौहीद के विपरीत है।

शिर्क की तीसरी किस्म छिपा हुआ शिर्क है: जिस की दलील नबी(ﷺ)की यह हदीस है: क्या मैं तुम्हें उस चीज के बारे में ना बता दूँ जिस का तुम पर मुझे मसीह दज्जाल से भी ज्यादा खौफ है, सहाबा(ﷺ)ने कहाः क्यों नहीं ऐ अल्लाह के रसूल, तो फरमाया: छिपा हुआ शिर्क। आदमी नमाज पढ़ रहा होता है, और जब उसे कोई देखता है तो वह अपनी नमाज को खूब्सूरत बनाने लगता है।(इब्ने माजा:4204)।

और शिर्क को सिर्फ दो प्रकार में भी बाँटा जा सकता है: बड़ा शिर्क और छोटा शिर्क। क्योंकि छिपा हुआ शिर्क दोनों किस्मों में पाया जाता है। तो बड़े शिर्क में छिपे हुए शिर्क का उदाहरण है: मुनाफिकों का शिर्क। क्योंकि वे अपने खराब अकीदे को छिपाते हैं, और इस्लाम का इजहार करते हैं, दिखाने के उद्देश्य से, एवं डर के कारण। और छोटे शिर्क में छिपे हुए शिर्क का उदाहरण है दिखावा करना। जैसे कि महमूद बिन लबीद अन्सारी(ﷺ)की हदीस में है, जो पहले गुजर चुकी, और अबूसईद खुदरी(ﷺ)की हदीस में भी है जिसका अभी जिक्र हुआ। अल्लाह तौफीक देने वाले हैं।

गुनाहों के प्रकार

छोटा गुनाह: हर वह गुनाह जिसे अल्लाह व रसूल ने हराम करार दिया हो, लेकिन उस पर कोई खास सजा निर्धारित ना की गई हो।

बड़ा गुनाह: हर वह गुनाह जिसे करने पर विशेष चेतावनी दी गई है, जैसे कि उसके करने पर लानत भेजी गई हो, या रहमत से दूर किया गया हो, या उससे बराअत का इजहार किया गया हो, या उन्हे काफिरों व मुशरिकों में शुमार किया गया हो, या कहा गया हो कि वह मुसलमानों में से नहीं है,या उसे बुरे जानवरों के जैसा बताया गया.....इत्यादि।

छोटा शिर्क यह बड़ा शिर्क से कम और कबीरा गुनाह से ऊपर है।

बड़ा शिर्क: यह हराम चीजों में सबसे बड़ा गुनाह है।

कबीरा(बड़े)गुनाह

कबीरा का हुक्म: उसके लिए तौबा करना जरूरी है, क्योंकि नबी(ﷺ)का इर्शाद है: नूहा करने वाली अगर मौत से पहले तौबह ना करे... (मुस्लिम:934)दूसरी हदीस में कहा: जब कबीरा से बचा जए। मुस्लिम:233)

उसकी श्रेणी: उसकी श्रेणी और मरतबे अलग अलग हैं, जैसे कि नबी(ﷺ)ने फरमाया: क्या मैं ना बताऊँ सबसे बड़े कबीरा गुनाह के बारे में.... (बुखारी,मुसलिम)

करने वाले का हुक्म: वह मोमिन है लेकिन ईमान में अपूर्ण है, या ईमान की वजह से मोमिन है कबीरा गुनाह की वजह से फासिक है। उसके ईमान की मात्रा के बराबर उससे प्यार किया जाएगा, और उसके कबीरा गुनाह की मात्रा के बराबर उससे नफरत किया जाएगा। गुनाहे कबीरा करते समय उससे मील जोल ठीक नहीं

इसकी संख्या: कबीरा गुनाहों की कोई संख्या निर्धारित नहीं है लेकिन उनको उस आधार पर निर्धारित किया जा सकता है जिसे ऊपर बयान किया गया

बड़े शिर्क व छोटे शिर्क के बीच का अंतर

बड़ा शिर्क(शिर्के अक्बर):

1. शिर्के अक्बर आदमी को इस्लाम के सीमा से बाहर कर देता है।
2. सारे नेक कार्य को बर्बाद कर देता है।
3. सदैव जहन्नम में रहने का कारण बनता है।
4. मुस्लिम शासक के लिए उसके जान व माल को हलाल कर देता है।
5. शिर्के अक्बर साबित करने के लिए स्पष्ट दलील जरुरी है।
6. यह एतकाद रखना कि ब्रह्मांड में सबब की पोशीदा शक्ती है।
7. इस शिर्क की हालत में मौत हो जाए तो कभी माफी नहीं मिलेगी।
8. अगर इससे तौबा करे तो अल्लाह माफ कर देंगे, सिवाय दो हालत के: सूर्य का पश्चिम से उदय होने के बाद,और इंसान की जान निकलते समय।

छोटा शिर्क(शिर्के अस्गर):

1. शिर्के अस्गर आदमी को इस्लाम के सीमा से बाहर नहीं करता।
2. सारे नेक कार्य को बर्बाद नहीं करता, लेकिन खास अमल को बर्बाद कर देता है।
3. सदैव जहन्नम में रहने का कारण नहीं बनता।
4. जान व माल को हलाल नहीं करता
5. स्पष्ट दलील मौजूद होना कि यह शिर्के अस्गर है।
6. ऐसी चीज को सबब बनाये जिसे अल्लाह ने सबब नहीं बनाया।
7. जो भी कार्य शिर्के अक्बर तक ले जाए वह शिर्के अस्गर है।
8. हर वह कार्य जिसको शरीअत ने शिर्क या कुफ्र के नाम गिनाया, लेकिन दोनों शब्द पर अलिफ व लाम नहीं आया। तो वह शिर्के अस्गर माना जाएगा, सिवाय उस अवस्था के जब सुराग से पता चले कि वह शिर्के अक्बर है।

पांचवां पाठ

इहसान

इहसान यह है कि आप अल्लाह की इबादत ऐसे करें जैसे आप उन्हें देख रहे हों, अगर ऐसा ना हो सके तो कम से कम यह कल्पना करें कि वे आप को देख रहे हैं।

इहसान का एक ही रुक्न है, जिसके दो श्रेणी हैं:

निगरानी वाली इबादत:

जिसका मतलब यह है कि बन्दा अपने रब की इबादत उसके अजाब से बचने के लिए करे, और यह हर मुसल्मान में पाया जाता है।

मुशाहदा वाली इबादत:

इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला की नेमतों की इच्छा और प्यार व शौक में इबादत की जाए। और यही नबियों व रसूलों की इबादत थी। जैसे कि नबी(ﷺ)का फरमान है: क्या मैं शुक्र गुजार बन्दा ना बन जाऊँ।(मुस्लिम:2819)। तो ईबादत की वजह यह हूई कि अल्लाह के पास जो नेमतें हैं, उनकी इच्छा, उनसे प्यार,उनके शौक ने इबादत पर मजबूर किया। साथ में अल्लाह के अजाब का खौफ भी रहा हो।

तौहीद से संबंधीत प्रश्न

1. दीन के कितने मरतबे(ग्रेड)हैं? O तीन। O दो। O पाँच।
2. इस्लाम के कितने अरकान हैं? O पाँच। O छह। O सात।
3. इस्लाम मरतबे(ग्रेड)में ईमान से ऊपर है। (सही- गलत)
4. इख्लास की गवाही के कितने अरकान हैं? O सात। O आठ O दो।
5. लाइलाहा इल्लल्लाह की कितनी शर्तें हैं? O आठ O सात O पाँच
6. इल्म लाइलाहा इल्लल्लाह की शर्तों में से एक है और उसका अर्थ है:
   O किसी चीज को उसकी असली सूरत में समझना। O अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं।
7. अगर कोई ऐसे शख्स के कुफ्र में शंका करे जिस तक दावत पहूँची और ईमान नहीं लाया तो उसका हुक्म:
   O कुफ्रे अक्बर का दोषी है। O अगर यकीन शक से ज्यादा हो तो तक्फीर नहीं की जाएगी।
8. कबूल लाइलाहा इल्लल्लाह की शर्तों में से एक है, और उससे मुराद है:
   O बातों का कबूल करना। O कार्य का कबूल करना। O एतकाद का कबूल करना। O यह सारे।
9. लाइलाहा इल्लल्लाह में दिखावा करना, सदके में दिखावा करने जैसा शिर्के अस्गर है। (सही- गलत)
10. जिस ने सिर्फ जुबान से लाइलाहा इल्लल्लाह का इकरार किया और दिल से यकीन ना रखा तो वह: O तौहीद परस्त है। O मुसल्मान है मोमिन नहीं। O कुफ्रे अक्बर का दोषी है। O कमजोर ईमान का है।
11. अगर कोई नबी(ﷺ)से वैसी मुहब्बत करे जैसी मुहब्बत अल्लाह से होनी चाहिए तो वह:
    O कुफ्रे अक्बर का दोषी है। O कुफ्रे अस्गर का दोषी है। O कबीरा गुनाह का दोषी है।
12. मुहब्बत की कितनी किस्में है: O चार। O तीन। O दो।
13. अल्लाह के लिए मुहब्बत,अमल से, अमल करने वाले से, और समय व स्थान से होती है। (सही- गलत)
14. अल्लाह के साथ किसी और से मुहब्बत करने का हुक्म:
    O छोटा शिर्क है। O वाजिब है। O बड़ा शिर्क है।
15. अल्लाह के लिए मुहब्बत का हुक्म:
    O जायज है। O वाजिब है। O बड़ा शिर्क है।

16. बन्दगी के कितने प्रकार हैं? O दो। O तीन। O चार।
17. समस्त मख्लूक अल्लाह के गुलाम हैं(काबू मे रहने की गुलामी) यहाँ तक कि काफिर भी। (सही- गलत)
18. अगर किसी ने लाइलाहा इल्लाल्लाह कहा और बिल्कुल अमल नहीं किया, ना नमाज पढ़ी, ना कोई इबादत की, तो यह उसे: O फायदा देगा। O फायदा नहीं देगा।
19. कलमा-ए-शहादत में(عبده)का मतलब: बन्दा जिसकी इबादत नहीं की जा सकती, और(رسوله)का मतलब: रसूल जिसको झुटलाया नहीं जा सकता। (सही- गलत)
20. नबी(ﷺ)ने जो हुक्म दिया उसका पालन करना, और जो खबर दी उसको सच्चा जानना.....الخ यह(أشهد أن محمدا عبده ورسوله)का: O का अर्थ है। O तकाजा है।
21. जिसने रुबूबियत की विशेषताओं में से कुछ नबी(ﷺ)को दिया, तो सच में उसने गवाही नहीं दी कि वे अल्लाह के बन्दे हैं। (सही- गलत)
22. नबी(ﷺ)का उच्चतम विवरण है उनका: O रसूल होना। O बन्दा और रसूल होना। O आखिरी नबी होना।
23. जिसने इस्लाम में किसी बिद्अत(नवाचार)को जन्म दिया, और वह उसको अच्छा समझता है, तो गोया उसने आरोप लगाया कि मुहम्मद(ﷺ)रिसालत में खयानत किये हैं। इसलिए कि अल्लाह तआला फरमाते हैं: आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया।(मायदा:3) तो जो कुछ उस वक्त दीन का हिस्सा नहीं था वह आज भी दीन का हिस्सा नहीं है, यह बात किसकी है:
O शैखुल इसलाम इब्ने तैमिया। O इमाम मालिक। O इमाम इब्ने बाज।
24. नबी(ﷺ)किस नबी के वंशज हैं: O इसहाक(عليه السلام)। O इस्माईल(عليه السلام)।
25. खाली जगहों को भरें: नबी(ﷺ)----------के साल, शहर----------में पैदा हुए, आप(ﷺ)ने----------साल उम्र पाई, जिसमें नबूवत से पहले----------साल, और नबूवत के बाद---------साल।----------के जरिए नबी बनाया गया, और----------के जरिए रसूल बनाया गया।
26. नबी(ﷺ)भेजे गए: O अपनी कौम की तरफ। O इंसानों की तरफ। O इंसानों और जिन्नों की तरफ।
27. मेराज कहते हैं आप(ﷺ)के मक्का से बैतुलमुकद्दस के यात्रा को। (सही- गलत)
28. आप(ﷺ)ने हिजरत की: O तायेफ की तरफ। O हब्शा की तरफ। O मदीना की तरफ। O यह तीनों बातें।

29. नबी(ﷺ)के महत्त्वपूर्ण गजवात(युद्ध)की संख्या कितनी है:
O एक। O दो। O तीन। O चार। O पाँच।
30. नबी(ﷺ)की औलाद कितनी हैं: O तीन। O चार। O सात।
31. नबी(ﷺ)ने विदाई का हज किया, यह दलालत करता है कि आप ने उससे पहले भी हज किया था। (सही- गलत)
32. नबी(ﷺ)की जीवनी का अध्ययन करना: O वाजिब है। O मुस्तहब है। O जायज है।
33. खाली जगहों को भरें: शरीअत की इस्तिलाह में ईमान नाम है----------से इकरार करने----------से इतकाद रखने, और----------के जरिए अमल करने का। ईमान----------से बढ़ता है, और----------से घटता है।
34. ईमान के अरकान कितने हैं: O छह। O पाँच। O चार।
35. अल्लाह पर ईमान लाने से कुछ बातें लाजिम आती हैं, उनकी संख्या कितनी है?
O चार। O तीन। O दो।
36. अल्लाह के वजूद की दलील मोटे तौर पर: O चार हैं। O गिनती करना मुश्किल है।
37. मीकाईल(عليه السلام)वह फरिश्ता है जो बारिश के लिए निर्धारीत है। (सही- गलत)
38. दिल सिर्फ इंसान का होता है, फरिश्तों के दिल नहीं होते। (सही- गलत)
39. उन किताबों की संख्या कितनी है, जिनके नाम हमें बताये गए हैं:
O छह। O चार। O सात। O बहुत ज्याद।
40. अल्लाह तआला ने हर नबी पर एक किताब उतारी। (सही- गलत)
41. प्रथम रसूल आदम(عليه السلام)हैं। (सही- गलत)
42. मुहम्मद(ﷺ) रसूल हैं, नबी नहीं हैं। (सही- गलत)
43. अज्म वाले(मजबूत संकल्प वाले) रसूलों की संख्या कितनी है:
O पाँच। O चार। O बहुत अधिक।
44. आखिरत पर ईमान लाना उन तमाम बातों पर ईमान लाने को शामिल है जो मौत के बाद से लेकर कब्रों से उठाये जाने तक पेश आयेगा। (सही- गलत)
45. तक्दीर पर ईमान रखने के कुछ ग्रेड(मरतबे)हैं, उनकी संख्या कितनी है:
O पाँच। O चार। O तीन।
46. क्या अल्लाह तआला घटना घटित होने से पूर्व उसको जानते हैं? (हाँ - नहीं)
47. क्या हर वह चीज जो इंसान जानते हैं अल्लाह भी जानते हैं? (हाँ - नहीं)

48. क्या हर वह चीज जो इंसान जानता है अल्लाह ने लिख रखा है? (हाँ - नहीं)

49. बन्दे के लिए खूद का अपना इरादा व चाहत होती है, जो चाहता है करता है। (सही- गलत)

50. क्या बनदों के कार्य पैदा किए गए हैं? (हाँ - नहीं)

51. तौहीद कितने प्रकार के हैं: O दो प्रकार। O तीन प्रकार। O दोनों सही।

52. बड़े शिर्क व छोटे शिर्क के बीच का पाँच अंतर बयान कीजिए:

1----------

2----------

3----------

4----------

5----------

53. बड़े शिर्क व छोटे शिर्क दोनों के पाँच-पाँच उदाहरण दीजिए:

बड़ा शिर्क (शिर्के अक्बर)	छोटा शिर्क(शिर्के अस्गर)
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

54. जो विश्वास के साथ मुनाफिक है वह शिर्के अस्गर का दोषी है, इस्लाम की सीमा से बाहर नहीं जाता। (सही- गलत)

55. इहसान का: O एक ही रुक्न है। O दो रुक्न है।

छठा पाठ

नमाज की शर्तें

नमाज की नौ(9)शर्तें हैं:

1-मुसल्मान होना। 2-अकल्मंद होना। 3-तमीज व समझ होना।
4-हदस से पाक होना। 5-नजासत से पाक होना। 6-सतर ढ़ाँपना।
7-नमाज का वक्त दाखिल होना। 8-किबला की ओर रुख करना।
9-नीयत करना।

पहली शर्त: मुसलमान होना

इस्लाम का विपरीत शब्द कुफ्र है, तो अगर ऐसा शख्स नमाज अदा करे जो रब को गाली देता है,या इबादतों में से कुछ भी गैरुल्लाह के लिए करता है, तो उसकी नमाज नहीं होगी, लेकिन अगर वह तौबा करले तो नमाज सही होगी।

दूसरी शर्त: अकल्मंद होना।

अकल्मंद का विपरीत शब्द पागलपन है, तो पागल शख्स की नमाज नहीं होगी, अतएब नशे में धुत व्यक्ति का तो बिल्कुल भी नहीं।

तीसरी शर्त: तमीज की उम्र तक पहूँच जाना।

तमीज की उम्र का मतलब बालिग होना नहीं है, बल्कि उसका अर्थ यह है कि वह ऐसी उम्र को पहूँच जाए, जिसमें चीजों के बीच फर्क करना आ जाए, और प्रश्न व उत्तर को अच्छी तरह समझ सके, उसके लिए कोई विशेष आयु निर्धारित नहीं है, लेकिन आम तौर पर बच्चे सात साल की उम्र में तमीज करने लगते हैं।

बच्चे की नमाज कब दुरुस्त होगी?: जब उसे चीजों के बीच, फर्क करना आ जाए, यानी प्रश्न व उत्तर को समझ सके, और पानी एवं आग के बीच फर्क कर सके, वरना उसकी नमाज नहीं होगी।

चौथी शर्त: हदस को दूर करना

और इसमें दाखिल है:

बड़ा हदस:

यह स्नान से दूर होता है।

छोटा हदस:

यह वुज़ू से दूर होता है।

पाचवीं शर्त: नजासत (अपवित्रता) को दूर करना

यानी नजासत को शरीर, धरती, और कपड़े से दूर करना। अगर कोई शख्स इस हालत में नमाज पढ़ ले जब उस पर नजासत लगी हो, और वह उसे जानता हो और हटाने की ताकत भी रखता हो, और भूला भी ना हो, तो उसकी नमाज नहीं होगी। और नजासत(अपवित्रता) तीन प्रकार के होते हैं:

मध्यम अपवित्रता:

यह धोने से दूर होता है, और धोने का अर्थ है पानी में डाल कर निचोड़ना। जैसे पुरुष एवं महिला का पेशाब, और दूसरी अपवित्र चीजें।

हलका अपवित्रता:

जो पानी के छिड़काउ से दूर हो जाता है, निचोड़ने की जरूरत नहीं, जैसे उस लड़के का पेशाब जो खान-पान आरंभ नहीं किया हो, इसी तरह मजी। वीर्य अगरचे पाक है लेकिन नबी(ﷺ)उस पर पानी छिड़कते थे अगर गीला होता, और नाखुन से खुरच देते जब सूखा होता।

गंभीर अपवित्रता:

यह कुत्ते की अपवित्रता है। नबी(ﷺ)ने उस बर्तन को सात बार धोने का आदेश दिया जिसमें कुत्ता ने मुँह डाल दिया हो, उनमें पहली बार मिट्टी से होगा। (सही मुस्लिम)

अपवित्र चीजें:

मानव का मल-मूत्र, जिस पशु का मांस हराम है उसका मल-मूत्र। दरिन्दा जानवर सब के सब अपवित्र हैं, सिवाय ऐसे जानवर के जिनसे बचना मुश्किल है। जैसे बिल्ली,खच्चर और गधा। इसी तरह बहता हुआ खून जो जानवर के जबह करने के बाद निकलता है। दोनों रास्तों से निकलने वाला खून, मरी हूई चीजें अपवित्र हैं, सिवाय मृत आदमी और ऐसा प्राणी के जिसका बहने वाला खून ना हो। और सागर का मृत प्राणी, टिड्डियाँ, यह सब अपवित्र नहीं हैं।

छठी शर्त: सतर ढ़ाँपना

सतर ढ़ाँपने की तीन किस्में हैं

मध्यम:

यह पूर्व के दोनों प्रकार के लोगों के इलावा है। जरूरी है कि नाभि से घुटने तक का हिस्सा छुपाया जाए। साथ ही दोनों कन्धों को छुपाना और अच्छे कपड़े पहनना मुस्तहब है।

गंभीर:

यह आजाद व बालिग महिला का सतर है। लाजिम है कि वह चेहरा छोड़ पूरे शरीर को छुपाये। लेकिन अजनबी मर्द के सामने चेहरे को भी छुपाना जरूरी है।

हलका:

यह सात से दस साल तक के लड़के का सतर है। लाजिम है कि उसके दोनों शर्मगाह को छुपाया जाए।

सातवीं शर्त: समय का दाखिल होना

नमाज ना तो वक्त से पहले दुरुस्त होगी, और ना वक्त गुजरने के बाद, सिवाय उस हालत के, जब किसी विशेष कारण से दूसरी नमाज के साथ इकट्ठा पढ़ी जाए। लेकिन अगर नमाज को जान बूझ कर समय से देर किया गया तो गुनहगार होगा।

आठवीं शर्त: किबला की तरफ रुख करना

इस शर्त से सफर की नफ्ली नमाजें बाहर हैं, अतः सफर में सवारी का रूख जिधर होगा, उसी तरफ रुख करके नमाज पढ़ी जायेगी। उसका उदाहरण इस जमाने में विमान के अन्दर की नमाज है। इसी तरह इस हुक्म से वे लोग बाहर हैं जिन्हें किब्ला रुख होने की ताकत नहीं, या दुश्मन का डर है।

नवीं शर्त: नीयत करना

नीयत दिल के इरादे का नाम है, और जुबान से उसको अदा करना बिदअत है, अगर नीयत नमाज से थोड़ी देर पहले कर ले, या सिर्फ वक्त के फर्ज होने की नीयत करे, तो भी नमाज दुरुस्त होगी।

महत्वपूर्ण जानकारी:

1. किसी शर्त को छोड़ने में अज्ञानता या भूल काबिले कबूल नहीं है, लेकिन अगर नमाज इस हालत में अदा कर ले कि अज्ञानता या भूल की वजह से उसमें नजासत बाकी रह गई हो, तो नमाज दुरुस्त होगी, इसलिए कि उसका संबंध छोड़ देने से है, करने से नहीं।
2. तमाम शर्तें इबादत से बाहर की चीजें हैं, और इबादत से पहले अदा किये जाते हैं, और इबादत के खत्म होने तक उसका पाया जाना जरूरी है।

सातवाँ पाठ

नमाज के अरकान

नमाज के चौदह अरकान हैं:

1- अगर ताकत हो तो खड़े होना।
2- तक्बीरे तहरीमा कहना।
3- सूरह फातिहा पढ़ना।
4- रुकू करना
5- रुकू के बाद सीधे खड़ा होना।
6- सात अंगों पर सज्दा करना।
7- सज्दा से सर उठाना।
8- दो सज्दों के बीच बैठना।
9- नमाज के तमाम कार्य इत्मीनान से करना।
10- सारे अरकान को क्रमवार करना।
11- आखिरी तशह्हुद का पढ़ना।
12- आखिरी तशह्हुद के लिए बैठना।
13- नबी(ﷺ)पर दुरूद पढ़ना।
14- दोनों तरफ सलाम फेरना।

पहला रुक्न: अगर ताकत हो तो खड़े होकर नमाज पढ़ना

नफल नमाज में:

नफल नमाजें बैठ कर पढ़ना जायज है, लेकिन खड़ा होने वाले का आधा सवाब मिलेगा, इसी तरह लेट कर पढ़ना भी जायज है लेकिन बैठने वाले का आधा सवाब मिलेगा।

फर्ज नमाज में:

कियाम फर्ज नमाजों में रुक्न है, और यह माफ हो जाता है, अगर कियाम की बिल्कुल ताकत ना हो, या उससे खुशू में कमी आती हो। और अगर कियाम की कुछ भी ताकत हो तो उसे करना चाहिए।

दूसरा रुक्न: तकबीरे तहरीमा कहना

(الله أكبر) के सिवा किसी दूसरे शब्द से तक्बीर कहना दुरुस्त नही।

तीसरा रुक्न: सूरह फातिहा का पढ़ना।

नमाज की हर रकअत में सूरह फातिहा का पूरा पढ़ना वाजिब है, चाहे नमाज सिर्री(गुप्त आवाज से)हो, या जेहरी(बुलंद आवाज से)हो। और अगर कोई व्यक्ति इमाम को रुकू की हालत में पाये, तो फातिहा से माफी मिल जाती है।

नवाँ रुक्न: नमाज के तमाम कार्य इत्मीनान(शांती)से करना।

हर रुक्न में लाजिमी दुआ पढ़ लेने से पूर्ण इत्मीनान का पालन हो जाता है।

महत्वपूर्ण जानकारी:

अरकान इबादत के अन्दर दाखिल है, और किसी भी रुक्न को छोड़ने में न अज्ञनता का बहाना चलेगा और न भूल जाने का, और सज्दा-ए-सुहू से उसकी भरपाई नहीं होगी, बल्कि मौजूदा नमाज को दोहराना पड़ेगा।

अलबत्ता अगर पिछली नमाजों में कुछ अरकान छूट गए हों, तो उन्हें दोहराने की जरूरत नहीं, क्योंकि नबी(ﷺ)ने उस सहाबी को जो नमाज को सही तरीका से अदा नहीं कर पा रहा था, पिछली तमाम नमाजों को दोहराने का आदेश नहीं दिया, बल्कि सिर्फ मौजूदा नमाज को दोहराने का आदेश दिया, हालाँकि उसने एक रुक्न(इत्मीनान) को छोड़ा था।

आठवाँ पाठ

नमाज की वाजिब चीजें

नमाज में आठ चीजें वाजिब हैं:

1-नमाज की तमाम तक्बीरें सिवाय तक्बीरे तहरीमा के।

2-समिअल्लाहो लिमन हमिदह(سمع الله لمن حمده)कहना, इमाम और अकेले सब को।

3-सभी को रब्बना वा लकल हम्द(ربنا ولك الحمد)कहना।

4-रुकू में सुब्हाना रब्बी अल-अजीम(سبحان ربي العظيم)कहना।

5-सज्दे में सुब्हाना रब्बी अल-आला(سبحان ربي الأعلى)कहना।

6-दोनों सज्दे के बीच रब्बिग्फिर ली(رب اغفر لي)कहना।

7-पहला तशह्हुद पढ़ना।

8-पहले तशह्हुद के लिए बैठना।

महत्वपूर्ण सुचना:

रुकू में सुब्हाना रब्बी अल-अजीम(سبحان ربي العظيم)को उसी शब्द के साथ कहना वाजिब है, फिर उसके पश्चात दूसरी दुआओं का पढ़ना मुस्तहब है। इसी तरह सज्दे में सुब्हाना रब्बी अल-आला(سبحان ربي الأعلى) को उसी शब्द के साथ कहना वाजिब है, फिर उसके बाद दूसरी दुआओं का पढ़ना मुस्तहब है।

नवाँ पाठ

तशह्हुद का बयान:

तशह्हुद यह है:

"التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ، وَالصَّلَوَاتُ، وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ"

अनुवाद: मेरी तमाम जुबानी,शरीरिक व माली इबादतें अल्लाह के लिए हैं, ऐ नबी आप पर सलाम हो, और अल्लाह की रह्मत व बरकतें भी, सलाम हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद(ﷺ)अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। फिर नबी(ﷺ)पर दुरूद सलाम व बरकतें भेजे, इस तरह:

"اللهم صل على محمد، وعلى آل محمد، كما صليت على إبراهيم، وعلى آل إبراهيم، إنك حميد مجيد، اللهم بارك على محمد، وعلى آل محمد، كما باركت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم إنك حميد مجيد"

अनुवाद: ऐ अल्लाह रहमत नाजिल फरमा मुहम्मद(ﷺ)पर और मुहम्मद(ﷺ)के परिवार पर, जैसे आप ने रह्मत नाजिल फरमाई इब्राहीम(عليه السلام)पर, और इब्राहीम(عليه السلام)के परिवार पर, निस्संदेह आप प्रशंसनीय बड़ी शान वाले हैं, ऐ अल्लाह बरकत नाजिल फरमा मुहम्मद(ﷺ)पर और मुहम्मद(ﷺ)के परिवार पर, जैसे आप ने बरकत नाजिल फरमाई इब्राहीम(عليه السلام)पर और इब्राहीम(عليه السلام)के परिवार पर, निस्संदेह आप प्रशंसनीय बड़ी शान वाले हैं।

फिर इस दुआ के जरिए अल्लाह से पनाह माँगे :

"اللهم إني أعوذ بك من عذاب القبر، وأعوذ بك من فتنة المسيح الدجال، وأعوذ بك من فتنة المحيا والممات..."

अनुवाद: ऐ अल्लाह बेशक मैं कब्र के अजाब, दज्जाल के फितने, और जिन्दगी व मौत के फितने से आप की पनाह लेता हूँ।

फिर जो चाहे दुआ करे, विशष कर नबी(ﷺ)से साबितशुदा दुआएँ, जैसे कि यह दुआ:

اللهم إني ظلمت نفسي ظلما كثيرا، ولا يغفر الذنوب إلا أنت، فاغفر لي مغفرة من عندك، وارحمني إنك أنت الغفور الرحيم"

अनुवाद: ऐ अल्लाह बेशक मैंने अपने ऊपर बहुत ज्याद जुल्म किया, और गुनाहों को क्षमा करने वाला कोई नहीं सिवाय आप के, इसलिए मुझे अपनी तरफ से क्षमा प्रदान कर, और मुझ पर रहम फरमा, बेशक आप माफ करने वाले मेहेरबान हैं।(बूखारी:834)

और पहले के तशह्हुद में शहादत वाली दुआ पढ़ने के पश्चात, तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए(जुहर,अस्र,मग्रिब और इशा की नमाजों में)और अगर दुरूद भी पढ़ ले तो ज्यादा बेहतर है, क्योंकि इस विषय में हदीसें आम हैं।

दसवाँ पाठ

नमाज की सुन्नतें

नमाज की सुन्नतें यह हैं:

1- दुआए इस्तिफताह, यानी शुरू करने की दुआ, जैसे(اللهم باعد بيني وبين خطاياي....)

2- खड़ा रहते समय दाहिने हाथ की हथेली को बाएं हाथ की हथेली पर सिने के ऊपर रखना, चाहे रुकू से पहले हो या बाद में।

3- हाथ उठाना, इस तरह कि दोनों हाथों की उंगलियां मिली हूई और हथेली फैली हूई हों,फिर कंधों या कानों के बराबर लेकर जाना। और यह काम पहली तक्बीर के समय, और रुकू से पहले व रुकू के बाद, और पहले तशह्हुद से उठते समय करना होगा।

4- रुकू और सज्दे की तस्बीह जो एक बार से अधिक पढ़ी जाए।

5- रुकू से उठने के बाद(ربنا ولك الحمد)से ज्यादा शब्द का पढ़ना। इसी तरह दो सज्दों के बीच वाली क्षमा की दुआ को एक बार से ज्यादा पढ़ना।

6- रुकू के समय सिर को पीठ के बराबर रखना।

7- सज्दे की हालत में बाजूओं को पहलू से, पेट को रानों से, रानों को पिन्डलियों से अलग और जुदा रखना।

8- सज्दे की हालत में दोनों हाथों को जमीन से अलग रखना।

9- पहले तशह्हुद और दो सज्दों के दरमियान दाहिना पाँव को खड़ा करके बायां पाँव को बिछा कर उन पर बैठना।

10- तीन,चार रकअत वाली नमाजों के आखिरी तशह्हुद में तवर्रुक(تورّك)करना, और इसका तरीका है: नितंब जमीन पर लगा कर बैठना, इस तरह कि बायां पाँव दाहिना पाँव के नीचे हो, और दाहिना पाँव खड़ा हो।

11-पहले और दूसरे तशह्हुद में शुरू से आखिर तक दुआ के वक्त शहादत की ऊँगली से इशारा करना व दुआ के समय उसे हिलाना।

12-पहले तशह्हुद में दुरूद व सलाम भेजना मुहम्मद(ﷺ)और उनके परिवार पर, इसी तरह इब्राहीम(عليه السلام)और उनके परिवार पर।

13- आखिरी तशह्हुद में दुआ पढ़ना।

14- जिहरी (ऊँचे स्वर में) कुरआन पढ़ना, फज्र, जुमा, ईद और इस्तिस्का की नमाजों में, और इसी तरह मग्रिब व इशा के पहले के दो रकअतों में।

15- सिर्री(आहिस्ता से)किरात करना, जोहर व अस्र की नमाजों में, इसी तरह मग्रिब की तीसरी और इशा की आखिरी दोनों रकअतों में।

16- सूरह फातिहा के बाद कुरआन की दूसरी आयतों की तिलावत करना।

इसके साथ ही बाकी दूसरी सुन्नतों को भी ध्यान में रखना चाहिए, उन में से उल्लेखयोग्य है: रुकू के पश्चात(ربنا ولك الحمد)के बाद जो दुआएँ पढ़ी जाती हैं,और यह सुन्नत है इमाम मुक्तदी व अकेले सबके लिए। इसी तरह रुकू की हालत में दोनों हथेलियों की उंगलियाँ फैला कर घुटने पर रखना।

इस्तिफताह की दुआ(अर्थात शुरू करने की दुआ):

इस्तिफताह की दुआ नमाज में तक्बीर-ए-तहरीमा के बाद पढ़ी जाती है। उसमें बहुत सारी दुआएँ आई हैं, जिनमें से एक यह दुआ है जो नबी(ﷺ)ने सिखाया है:

اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

अनवाद: ऐ अल्लाह मेरे और मेरे गुनाहों के बीच इतनी दूरी करदे, जितनी दूरी आपने पूरब और पश्चिम के बीच में की है, ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से ऐसे ही पाक करदे जिस प्रकार सफेद कपड़ा मैल से साफ किया जाता है, ऐ अल्लाह मुझे गुनाहों से पानी,बर्फ और ओलों से धो दे। नबी(ﷺ)ने यह भी सिखाईः

"سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ"

अनुवाद: ऐ अल्लाह मैं प्रशंसा के साथ आपकी पाकीजगी बयान करता हूँ, आपका नाम बरकत वाला है, और शान बुलंद है, और आपके सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं।

गयारहवाँ पाठ

नमाज को बातिल करने वाली चीजें

नमाज को बातिल करने वाली चीजें आठ हैं:

1-नमाज की हालत में जान-बूझ कर बात-चीत करना। लेकिन अज्ञानता और भूल कर बात करने से नमाज बातिल नहीं होगी।

2-हंसना। 3-खाना। 4-पीना। 5-सतर का खुल जाना।

6-किब्ला से बहुत ज्यादा फिर जाना। 7-नमाज में लगातार बहुत ज्यादा छेड़छाड़ करना।

8- वजू का टूट जाना।

नमाज को बातिल करने वाली पहली चीज: जान बूझकर बातचीत करना।

इस हुक्म से बाहर है इमाम की गलती पर चेतावनी देना, जब वह तिलावत या नमाज में गलती करे।

नमाज में हरकत करने की हालतें।

ऐसी हरकतें जो वाजिब हैं:	ऐसी हरकतें जो मुस्तहब हैं:	ऐसी हरकतें जो जायेज हैं:	ऐसी हरकतें जो मकरूह हैं:	ऐसी हरकतें जो हराम हैं:
यह वह हरकतें हैं जिन का संबंध नमाज की दुरुस्तगी से है, जैसे अपवित्रता को दूर करना।	यह वह हरकतें हैं जिन पर नमाज की पूर्णता निर्भर करता है। जैसे खाली स्थानों को भरना।	जो हरकतें किसी जरूरत के लिए की जाएँ, जैसे दाढ़ी या शरीर खुजाना।	बिना किसी जरूरत के मामूली हरकतें करना। जैसे इधर उधर मुड़ना।	जब बहुत ज्यादा हरकतें लगातार और बिना जरूरत के किया जाए, जैसे खाना पीना।

महत्वपूर्ण जानकारी

नमाज की शर्तें, अरकान, वाजिबात, और सुन्नतें, गुजर चुकी हैं, तो इन के बीच क्या अंतर है?

<table>
<tr><th>सुन्नत</th><th>वाजिब</th><th>रुक्न</th><th>शर्त</th></tr>
<tr><td colspan="3">इन तीनों का संबंध इबादत के अंदर से है।</td><td>यह इबादत के बाहर का हिस्सा है।</td></tr>
<tr><td colspan="3">इन तीनों का संबंध इबादत के हिस्सों में से एक हिस्से से है।</td><td>शर्त का पूरी इबादत के दौरान पाया जाना जरूरी है।</td></tr>
<tr><td>सुन्नत को अज्ञानता, या भूल कर, या जान बूझ कर, हर हाल में जरूरत पड़ने पर छोड़ा जा सकता है।</td><td>वाजिब को अज्ञानता या भूल कर छोड़ना कबूल होगा, लेकिन जान बूझ कर नहीं होगा।</td><td colspan="2">शर्त और रुक्न को अज्ञानता, या भूल कर, या जान बूझ कर, किसी भी सूरत में छोड़ना कबूल नहीं।</td></tr>
<tr><td>/</td><td>वाजिब को छोड़ने पर सज्दा-ए-सुहू काफी होगा।</td><td>रुक्न को छोड़ने पर सज्दा-ए-सुहू काफी नहीं, बल्कि दोबारा अदा करना होगा।</td><td>शर्त को छोड़ने पर सजदा-ए-सुहू नहीं है, बल्कि उससे इबादत ही बातिल हो जाती है।</td></tr>
</table>

सज्दा-ए-सहव का बयान

सज्दाए सुहू के तीन कारण हैं:

नमाज में शक होना:
जैसे रकअत की संख्या में शक हो जाए कि उसने तीन पढ़ी या चार। उसकी दो किस्में हैं:

नमाज में कमी करना:
जैसे इंसान का नमाज के वाजिबात में से किसी का कम कर देना, और समय पर अदा ना होना।

नमाज में वृद्धि कर देना:
जैसे इंसान का रुकू या सज्दा या कियाम(खड़ा होने) या कुऊद(बैठने)में वृद्धि कर देना।

अगर इबादत के दौरान शक पैदा हो:
इस हालत में अगर शक का प्रतिशत कम हो तो उस पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। और यदि शक का प्रतिशत ज्यादा हो तो जिस बात पर ज्यादा यकीन हो उसका एतबार किया जाएगा। अगर कमी व बेशी दोनों पर शक बराबर हो तो कम का एतबार किया जाएगा।

अगर इबादत खत्म कर लेने के बाद शक पैदा हो:
ऐसी हालत में उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाएगा, जब तक यकीन ना हो जाए।

जरूरी नोट:

– अगर नमाजी सुहू में गलती कर दे, तो कोई हरज नहीं, और उसकी नमाज दुरुस्त होगी।

– अगर नमाजी कोई रुक्न छोड़ दे, तो उसकी नमाज उस वक्त तक दुरुस्त नहीं होगी, जबतक कि उसे और उसके बाद के कार्य को अदा ना कर ले, और साथ में सजदा सुहू भी कर ले।

– अगर नमाजी कोई वाजिब गलती से छोड़ दे, और वक्त चला जाए तो सज्दाये सुहू कर ले।

नमाज का तरीका फोटो के जरिए

– बेहतर यह है कि मुसल्मान अपने घर में वुज़ू करके निकले, और अच्छा पोशाक पहने।

– पैदल या सवार होकर मस्जिद जाए, चाल व चरित्र में शांति व शराफत बनाये रखे, ना तेज चले ना दौड़े, ना ज्यादा इधर-उधर देखे, ना आवाज ऊँची करे।

– जब मस्जिद पहूँच जाए तो अपने जूते निकालकर उसके स्थान पर रखे,उसके साथ ही दुनिया को भूल जाए,और मस्जिद में क्रय-विक्रय, लापता वस्तु का इलान, यह सब ना करे।

– मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले दाहिना पैर रखे और यह दुआ पढ़े: (بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله، اللهم افتح لي أبواب رحمتك)। और मस्जिद से बाहर निकलते समय पहले बायां पाँव बाहर निकाले और यह दुआ पढ़े: (بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله، اللهم اني أسألك من فضلك)।

– पुरुष लोग पहली लाइन की ओर बढ़ जाएँ, और महिलायें पीछे रहें।

– अगर कोई मस्जिद में इस हाल में प्रवेश करे, जब नमाज शुरू हो चुकी हो, तो उसे चाहिए कि इमाम के साथ नमाज में शामिल हो जाए, चाहे इमाम किसी भी अवस्था में हो। अगर इमाम को खड़े अथवा रुकू की अवस्था में पाये, तो वह रकअत शुमार कर ले, फिर जब इमाम सलाम फेरे तो छूटी हुई नमाज पूरी कर ले।

– अगर कोई मस्जिद में इस हालत में दाखिल हो जब नमाज शुरू नहीं हूई, तो फर्ज नमाज से पहले सुन्नत अदा कर ले। अगर उस नमाज से पहले कोई सुन्नत ना हो तो तहीय्यतुल मस्जिद पढ़ ले।

– नमाज याद दिलाने के लिए, घड़ी की तरफ बार बार देख कर, या गले से आवाज निकाल कर, मस्जिद की हुरमत को पामाल ना करे।

– इमाम और अकेले के लिए सुन्नत यह है कि सुतरह रख कर नमाज पढ़े, याद रहे कि इमाम का सुतरह ही मुक्तदी का सुतरह है।

– दोनों पैरों के बीच उतनी ही दूरी रखे जितनी दोनों कंधों के बीच है, ना ही ज्यादा करे ना कम करे,और कदम के बाहरी हिस्से को बराबर रखे।

– नमाज की तमाम शर्तें पूरी होने के पश्चात अल्लाहु अक्बर कहे, साथ में दोनों हाथों को कंधों या कानों तक उठाये, इस हाल में कि उंगलियाँ आपस में मिली हों, हथेली का भीतरी भाग किबला की ओर हो।

– फिर दाहिने हाथ की हथेली के अंदरूनी हिस्से को बाएं हाथ की हथेली के ऊपरी हिस्से और कलाई पर रखे या पकड़े।

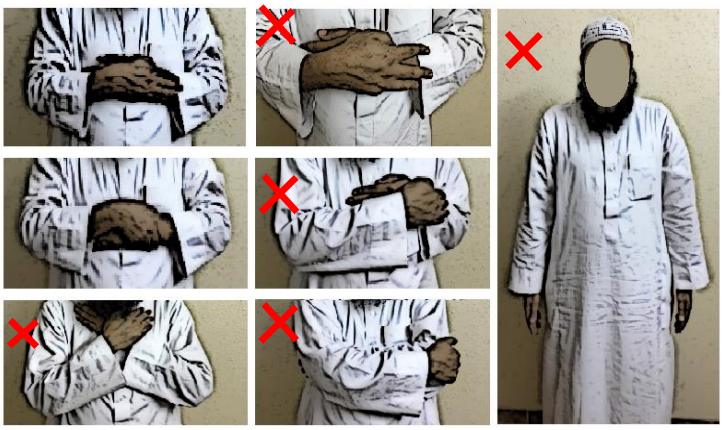

– अपनी नजर को सज्दे के स्थान पर रखे और इधर-उधर ना देखे।

– फिर मुस्तहब(अच्छा)है कि सिर्फ पहली रकअत में दुआ-ए-इस्तिफ्ताह पढ़े, और बेहतर है कि इस में आई हूई तमाम दुआओं को बदल-बदल कर पढ़े।

– फिर कुरआन व हदीस में आए हूए तरीके पर शैतान से पनाह माँगे, यानी आऊजु बिल्लाहि मिनाश्शैतानिर रजीम (أعوذ بالله من الشيطان الرجيم) कहे।

– फिर बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम (بسم الله الرحمن الرحيم) कहे।

– फिर पूरे सूरह फातिहा की, हरकात,कलिमात,आयात की तर्तीब के साथ तिलावत करे।

– फिर मुस्तहब है कि कुरआन में से जो कुछ मुयस्सर हो, उसकी तिलावत करे, इसमें अऊजु बिल्लाह ना पढ़े, लेकिन अगर सूरह प्रारंभ हो तो बिस्मिल्लाह जरूर पढ़े।

– फिर हाथ उठाते हुए अल्लाहु अक्बर(الله أكبر)कहे, जिस तरह तक्बीरे तहरीमा में कहा था, और फिर रुकू करे।

– रुकू में दोनों घुटनों को पकड़े रहे, और कोहनियों को ना मोड़े, और पीठ को सिर के बराबर में रखे।

– रुकू में वाजिब है कि एक बार(سبحان ربي العظيم)कहे, और मुस्तहब है कि एक से ज्यादा बार इसको पढ़े, या और दुआएँ पढ़े।

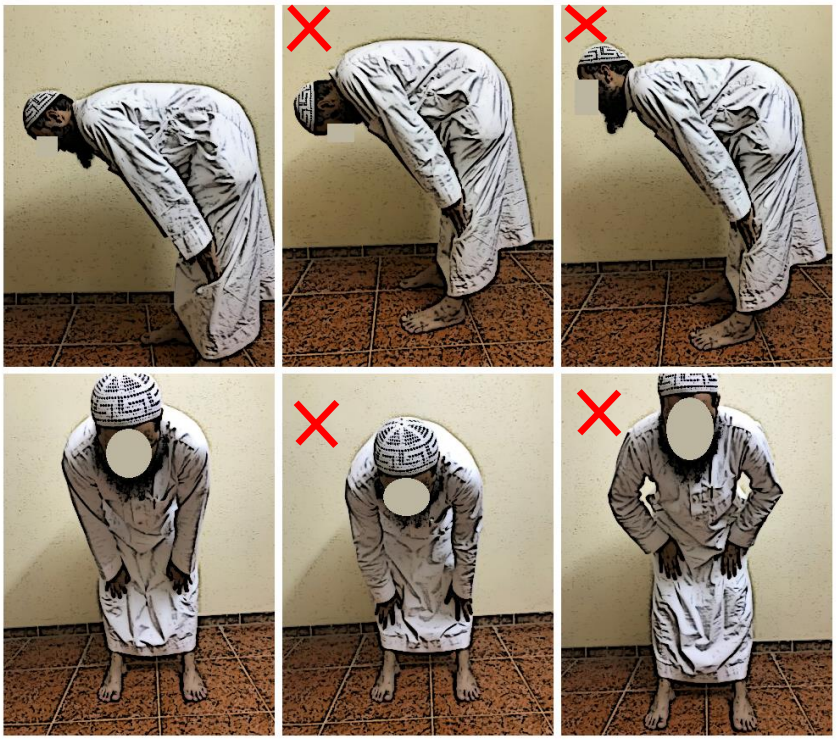

– फिर रुकू से उठते हूए पूर्ण सीधा खड़ा होने से पहले(سمع الله لمن حمده) कहे, और साथ में दोनों हाथों को कानों या कंधों तक उठाये।

– जब पूर्ण रूप से खड़ा हो जाए तो(ربنا ولك الحمد)कहे, और बेहतर है कि और भी दुआएँ जो साबित हैं उनको भी पढ़े।

– फिर हाथ ना उठाते हुए तक्बीर कहे, और सात अंगों पर सज्दा करे, और वह हैं: पेशानी, नाक, दोनों हथेलियों के भीतरी भाग, दोनों घुटने, दोनों पैर की उंगलियों के भीतरी भाग।

– और दोनों बगलों के बीच, इसी तरह पेट और रानों के बीच, और रानों व पिंड्लियों के बीच दूरी रखे, और दोनों बाहों को जमीन से उठाकर रखे।

– सज्दा में एक बार(سبحان ربي الأعلى)कहे, जो कि वाजिब है, जबकि एक से ज्यादा बार कहना मुस्तहब है, और मन पसन्द दुआएँ करना भी जायज है, लेकिन साबित शुदा दुआएँ करना ज्यादा बेहतर है।

– फिर तक्बीर कहते हूए सज्दे से उठे, और बायां पैर बिछा कर उस पर बैठे, और दाहिना पैर को खड़ा रखे, और दाहिने पैर की उंगलियों के अंदरोनी हिस्से को जमीन पर रखे, इस हाल में कि उंगलियाँ किब्ला की तरफ हों, और दोनों हथेलियों के अंदरोनी हिस्से को दोनों रानों के आखिरी हिस्से पर रखे। बैठने का यही तरीका नमाज की हर बैठक में होगी, सिवाय तीन और चार रकअतों वाली नमाजों के आखिरी तशह्हुद के, क्योंकि उसमें तवर्रुक किया जाएगा। उसका तरीका यह है कि बाएं पैर को दाहिनी पिंडली के नीचे रखा जाए।

– फिर तक्बीर कहे और पहले सज्दे की तरह ही सज्दा करे।

– फिर तक्बीर कहे और दूसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए, और उसी तरह सब कार्य करे जैसा पहली रकअत में किया था, परंतु दुसरी रकअत में ना तो तक्बीर-ए-तहरीमा है, ना दुआ-ए-इस्तिफ्ताह।

– जब दूसरा सज्दा हो जाए तो तशह्हुद के लिए बैठे।

– तस्बीह वाली उंगली से इशारा करे, इस हाल में कि अंगूठा और बीच वाली उंगली द्वारा गोल सा दायरा बना ले, उसको हिलाये और दुआ करे।

– वाजिब है कि तशह्हुद पढ़े।

– अगर नमाज दो रकअत वाली है, तो वाजिबी तौर पर दुरूदे इब्राहीमी पढ़े और यह दुआ करे: اللهم إني أعوذ بك من عذاب جهنم، ومن عذاب القبر، ومن فتنة المحيا والممات، ومن شر فتنة المسيح الدجال " । इसके सिवा जो चाहे दूआ करे, बेहतर यह है कि साबित शुदा दुआओं को ही पढ़े, और यह भी पढ़े (اللهم أعني على ذكرك وشكرك وحسن عبادتك)

– फिर दायें और बायें दो बार सलाम फेरे, और सिर्फ अपने सिर को मोड़े, दोनों कंधों को नहीं, इसी तरह सिर को ऊपर नीचे भी ना हिलाये, और ना दोनों हाथों से इशारा करे।

– और अगर नमाज तीन या चार रकअत वाली है, तो पहला तशह्हुद पढ़ने के बाद खड़ा हो जाए। इस तशह्हुद में दुरूदे इब्राहीमी पढ़ना भी मुस्तहब है।

– अगर नमाज तीन रकअत वाली है,तो तक्बीर कहते हूए उठे, और तीसरी रकअत पूरी करे,फिर तशह्हुद के लिए बैठे।और अगर नमाज चार रकअत वाली है तो दो रकअत पढ़ कर तशह्हुद के लिए बैठे।

– तशह्हुद पढ़े फिर दुरूदे इब्राहीमी पढ़े और यह दुआ पढ़े:

(اللهم إني أعوذ بك من عذاب جهنم، ومن عذاب القبر، ومن فتنة المحيا والممات، ومن شر فتنة الدجال)

और जो पसन्द हो वह दुआ भी करे, लेकिन बेहतर है कि साबित शुदा दुआएँ पढ़े, और यह भी पढ़े: (اللهم أعني على ذكرك وشكرك وحسن عبادتك)

– अगर फर्ज नमाज है तो नमाज के पश्चात साबित शुदा अज्कार का पढ़ना मुस्तहब है जैसे:

أستغفر الله، أستغفر الله،أستغفر الله، اللهم أنت السلام ومنك السلام، تباركت ذا الجلال والإكرام

– फिर(سبحان الله)और(الحمد لله)और(الله أكبر)यह तीनों तैंतीस तैंतीस बार पढ़े, कुल मिलाकर निन्यानवे बार हो जाएँगे, और सौ पूरा करने के लिए एक बार पढ़े: لا إله إلا الله، وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شي قدير

– फिर आयतुल कुर्सी पढ़े और वह है:

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَاۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ﴾

और फिर(قل هو الله أحد) तथा(قل أعوذ برب الفلق) एवं(قل أعوذ برب الناس)पढ़े।

महत्त्वपूर्ण टिप्पणी:

– गुजर चुका है कि नमाज सही होने की शर्तों में से एक सतर को छुपाना है,इसलिए नमाजी को चाहिए कि नमाज के दौरान किसी भी तरह उसका सतर खुल ना जाए, अन्यथा उसकी नमाज बातिल हो जाएगी।

– कोई एक शख्स अगर इमाम के साथ नमाज अदा करे, तो उसके लिए जरूरी है कि इमाम के दाहिने जानिब खड़ा हो, और दोनों के टखने बराबर रहें, ना आगे बढ़े ना पीछे रहे, और इसी प्रकार खड़ा होना है जब बहुत सारे नमाजी एक साथ खड़े हों।

नमाज से संबंधित ज्ञान का सारांश

विवरण	संख्या	समय	हुक्म	नाम
नमाजे जुमा जेहरी नमाज होती है, और तीन आदमी या उससे ज्यादा लोगों की जमात के साथ अदा होती है	दो रकअत	जुहर के समय	फर्ज है	जुमा की नमाज
यह नमाज जेहरी होती है, और हर रकअत में दो रुकू।	दो रकअत	ग्रहण लगने के समय	फर्जे किफाया है	सूरज या चाँद ग्रहण की नमाज
इसके विभिन्न तरीके हैं: -सिर्फ एक रकअत पढ़ना। -तीन रकअत। इस तरह कि तीन लगातार पढ़ी जाए, और अंत में एक तशह्हुद करे। या दो रिकात पढ़ कर सलाम फेर ले फिर एक रकअत पढ़े। -पाँच रकअत पढ़े और सिर्फ आखिर में एक तशह्हुद करे। -सात रकअत पढ़े और सिर्फ आखिर में एक तशह्हुद करे। -नौ रकअत पढ़े और आठवें रकअत में तशह्हुद करे फिर नवीं के लिए खड़ा हो और आखिर में तशह्हुद व सलाम हो -दो दो रकअत पढ़ता जाए और अंत में एक वित्र पढ़ ले।	एक से गयारह तक	इशा के बाद से फज्र तक	सुन्नते मोअक्कदा है	वित्र की नमाज

पहली रकअत में सूरह काफिरून और दूसरी में इख्लास पढ़े	दो रकअत	नमाजे फज्र से पहले	सुन्नते मोअक्कदा है	फज्र की सुन्नत
दो दो रकअत करके	चार फिर दो	चार रकअत जुहर से पहले दो उसके बाद	सुन्नत है	जोहर की सुन्नत
पहली रकअत में सूरह काफिरून और दूसरी में इख्लास पढ़े	दो रकअत	मग्रिब की नमाज के बाद	सुन्नत है	मगरिब की सुन्नत
	दो रकअत	इशा की नमाज के बाद	सुन्नत है	इशा की सुन्नत
	दो रकअत से दस रकअत तक	इशा के बाद से फजर तक	सुन्नत है	तरावीह की नमाज
	दो रकअत	मस्जिद में प्रवेश करते समय	वाजिब है	तहीय्यतुल मस्जिद
	दो रकअत से आठ रकअत तक	सूरज के बुलंद होने से लेकर जवाल से पहलेतक	सुन्नत है	चाश्त की नमाज
सलाम फेरने से पहले इस्तिखारा की दुआ पढ़े	दो रकअत	किसी भी समय	सुन्नत है	इस्तिखारा की नमाज
नमाजे ईद की तरह तकबीरें हैं: सात पहली रकअत में, और पाँच दूसरी रकअत में	दो रकअत	एक नेजा के बराबर सूरज बुलंद होने पर	जरुरत के समय सुन्नत है	इस्तिस्का यानी बारिश तलब करने की नमाज

पहली रकअत में तक्बीरे तहरीमा मिलाकर सात तकबीरें। और दूसरी रकअत में तक्बीरे इन्तेकाल छोड़ कर पाँच तकबीरें	दो रकअत और दो खुत्बा	एक नेजा के बराबर सूरज बुलंद होने पर	सुन्नत है	दोनों ईदों की नमाजें

आम नफल पढ़ने की मनाही के समय:

1) फज्र से लेकर सूरज के एक नेजा बराबर बुलंद होने तक।
2) नमाजे अस्र से लेकर सूर्यास्त तक।
3) सूरज जब बीच आस्मान में हो, और ढलने न लगे।

नमाज से संबंधित प्रश्न

1. नमाज की कितनी शर्तें हैं? O नौ। O गयारह। O आठ।
2. नमाज की शर्तों में इस्लाम की शर्त लगाना गलत है, क्योंकि नमाज केवल मुसल्मान ही पढ़ता है। (सही - गलत)
3. तमीज बालिग होने को कहते हैं। (सही - गलत)
4. हदस दूर करना शरीर, जगह, और कपड़े को शामिल है। (सही - गलत)
5. सूअर की अपवित्रता: O गंभीर अपवित्रता है। O मध्यम अपवित्रता है।
6. वीर्य अपवित्र है, क्योंकि उसके निकलने के बाद स्नान करना वाजिब हो जाता है। (सही - गलत)
7. पानी के छिड़काउ और धोने में कोई अंतर नहीं। (सही - गलत)
8. तमाम मृत चीजें अपवित्र हैं। (सही - गलत)
9. कुत्ते की नापाकी में मिट्टी के बिना भी काम चल जाएगा, इसी तरह आधुनिक कीटनाशक से भी काम चलेगा। (सही - गलत)
10. जिस से बचना मुशकिल हो, उसका मतलब वह जानवर जो बहुत ज्यादा आता-जाता हो। इसलिए बिल्ली कुछ लोगों के लिए पाक और कुछ के लिए नापाक है। (सही - गलत)
11. जिसमें बहने वाला नफ्स ना हो, यहाँ नफ्स का अर्थ रूह है। (सही - गलत)
12. रगों में बचा हुआ खून। O अपवित्र है। O पवित्र है।
13. नमाज के कितने अरकान हैं? O चौदह। O नौ। O आठ।
14. तक्बीरे तहरीमा हाथ उठाने को कहते हैं। (सही - गलत)
15. अगर रुक्न गलती से छोड़ दे तो उसपर सिर्फ सजदाए सहव है।(सही - गलत)
16. नमाज के कितने वाजिबात हैं? O आठ। O चौदह। O नौ।
17. अगर किसी ने सज्दे में(سبوح قدوس رب الملائكة والروح)कहा, जब कि उसे मालूम था कि एक बार(سبحان ربي الأعلى)कहना वाजिब है, तो उसकी नमाज बातिल हो जाएगी। (सही- गलत)
18. नमाजी के लिए जरूरी है कि दाहिने हाथ की हथेली के अंदरोनी हिस्से को बायां हाथ की हथेली के ऊपरी हिस्से और कलाई पर रखे। (सही - गलत)
19. जेहरी तिलावत फर्ज नमाज की पहली दो रकातों में है, जब नमाज रात में अदा हो, और हर वह नमाज जिस में ईद की तरह आम इज्तेमा हो। (सही- गलत)
20. नमाज को बातिल करने वाली चीजें कितनी हैं? O आठ। O नौ। O चौदह।

21. तवर्रुक होता है: O पहले तशह्हुद में। O दूसरे तशह्हुद में। O दोनों में।

22. (ربنا لك الحمد والشكر)में(والشكر)को बढ़ाना कैसा है: O जायज। O मुस्तहब। O हराम।

23. दोनों सजदों के बीच(رب اغفر لي ولوالديّ)कहना: O जायज है। O हराम है। O मक्रूह है।

24. सज्दे की हालत में दोनों कोहनियों को जमीन पर रखना:
O हराम है। O मुस्तहब है। O मकरूह है।

25. सजदाए सहव के कितने कारण हैं: O दो। O तीन। O चार।

26. कार्य पूरा हो जाने के बाद शक कोई प्रभाव नहीं डालता, इसी तरह जब शक बहुत ज्यादा हो। (सही- गलत)

27. फज्र की सुन्नत दूसरी सुन्नतों से अलग होती है, फजीलत में, संक्षिप्त होने में, खास सूरह पढ़े जाने में, उस पर प्रतिबद्धता में, और घर में उसे पढ़ने के बाद लेट जाने में। (सही- गलत)

28. निम्नलिखीत मसलों का हुक्म बयान कीजिए:

मसला	हुक्म
जो दीन को गाली दे उसकी नमाज	
जो नशे में हो उसकी नमाज	
अल्जाइमर रोगी की नमाज	
छोटे बच्चे की नमाज	
भूल कर बिना वुज़ू नमाज पढ़ने वाले की नमाज	
भूल कर अपवित्र कपड़े में नमाज पढ़ने वाले की नमाज	
गाय का मुत्र	
कौवे का मुत्र	
इस हालत में नमाज पढ़ी कि दोनों रान खुले हूए थे	
जिसने भुल कर समय से पहले नमाज अदा की	
हवाई जहाज में नमाज	
जिसने वक्त के फर्ज होने की नीयत की	
जिसने बैठ कर नमाज अदा की	

जो सूरह फातिहा भूल गया	
इमाम को रुकू की हालत में पाया	
नमाज में जल्दी करना	
शक्की आदमी का नमाज के बाद शक करना	
तक्बीर-ए-तहरीमा के बाद वुजू में शक पैदा होना	
गलती से रुकू ज्यादा कर दिया	
तक्बीर-ए-तहरीमा को छोड़ दिया	
पहला तशह्हुद छोड़ दिया	
आखिरी तशह्हुद छोड़ दिया	
शक पैदा हो गया कि तीन रकात पढ़ी या चार रकात	
नमाज के बाद शक पैदा हुआ	
नमाज के दौरान शक पैदा हुआ	
सजदाए सहव में गलती किया	
भूल कर नमाज में बात कर ली	
सतर खुला हुआ था इसी हालत में नमाज पढ़ ली, और नमाज के बाद ही जान पाया	
नमाज के लिए निकलने से पहले घर में वुजू कर लेना	
मस्जिद में खरीद व फरोख्त करना	
मस्जिद में मुद्राएँ चेंज करना	
इमाम को आखिरी तशह्हुद में पाया	
नमाज में सुतरह का इख्तियार करना	
नमाज में थोड़ा सा मुड़ना	
नमाज में बहुत जयादा मुड़ना	
जल्दी जल्दी माथा टेकना	
तशह्हुद में दुरूदे इब्राहीमी पढ़ना	

नमाज में बातें करना	
नमाज में हरकत करना	
सूरह फातिहा का भूल जाना	
जुमा की नमाज	
वित्र की नमाज	
तहीय्यतुल मस्जिद	

29.शर्त, रुक्न,वाजिब और सुन्नत के बीच का अंतर बयान कीजिए:

सुन्नत	वाजिब	रुक्न	शर्त

बारहवाँ पाठ

वुजू की शर्तें

वुजू की दस शर्तें हैं:

1- वुजू करने वाले का मुसल्मान होना।

2- अक्लमन्द होना।

3- तमीज होना।

4- नीयत करना।

5- वुजू पूरा होने तक नीयत को बाकी रखना।

6- जो चीज वुजू को वाजिब करती है, उससे दूर रहना।

7- वुजू से पहले इस्तिन्जा वगैरह कर लेना। (जरुरत पड़ने पर)

8- पानी का पाक और जायज होना।

9- ऐसी चीजों को दूर कर देना, जो त्वचा तक पानी पहूँचने को रोकती हो।

10- नमाज के समय का दाखिल होना, उस शख्स के लिए जिसका वुजू बार बार टूटता है।

वुज़ू की कुछ शर्तों की व्याख्या:

– वुज़ू पूरा होने तक नीयत को बाकी रखना। इसका अर्थ यह है कि वुज़ू की नीयत वुज़ू की शुरुआत से आखिर तक मौजूद होनी चाहिए।

– जो चीज वुज़ू को वाजिब करती है उससे अलग होना। उसका उदाहरण यह है कि ऊंट का गोश्त खाते हुए, या पेशाब करते हूए वुज़ू ना करे, बल्कि वुज़ू शुरू करने से पहले वुज़ू को तोड़ने वाली चीजों से अलग हो जाए।

– वुज़ू से पहले इस्तिन्जा वगैरह कर लेना। इससे यह बाहर किया गया है कि जब वुज़ू हवा निकलने से या नींद या ऊंट के गोश्त खाने से हो।

– पानी का पाक और जायज होना। इसका अर्थ यह है कि नापाक या छीने हुए पानी से वुज़ू ना करे।

– ऐसी चीजों को दूर कर देना जो त्वचा तक पानी पहूँचने को रोकती है। जैसे कि आटा या उंगलियों का पालिश,जो पानी को अंगों तक पहूँचने नहीं देता

स्वाभाविक आदतें:

1-खतना करना: यह पुरुषों के लिए वाजिब है और महिलाओं के लिए जरूरत पड़ने पर सुन्नत है।

2/5-मूंछें काटना, नाखुन तराशना, बगल के बाल उखाड़ना, नाभि के नीचे का बाल साफ करना. अनस(ﷺ)से रिवायत है कि नबी(ﷺ)ने, मूंछ काटने नाखुन तराश्ने बगल के बाल उखेड़ने और जेर नाफ साफ करने के लिए समय निर्धारित कर दिया कि हम इसे चालीस दिनों से ज्यादा ना छोड़ें। (मुस्लिम:258)

6-दाढ़ी को उसकी हालत पर छोड़ देना: इसका हुक्म वाजिब है, और उसका शेव करना(छीलना)कबीरा गुनाह है।

7-मिस्वाक करना: पीलू इतयादि के पेड़ की लकड़ी से दाँतों को साफ करना। यह सुन्नत है, और किसी भी वक्त किया जा सकता है,खासकर वुज़ू, नमाज,गृह प्रवेश, कुरआन की तिलावत, नींद से उठने, मौत के वकत व मुंह की गंध दूर करने के लिए करना चाहिए।

तेरहवाँ पाठ

वुज़ू के फरायेज

वुज़ू के छह फरायेज हैं:

1- चेहरे का धोना। और उसी में शामिल है कुल्ली करना व नाक में पानी डालकर साफ करना।

2- दोनों हाथों को कोहनी सहित धोना।

3- पूरे सर का मसह करना, और उसी में शामिल है दोनों कानों का मसह।

4- दोनों पाँव को टखनों समेत धोना।

5- वुज़ू के फरायेज को तर्तीब से(क्रमवार) अदा करना।

6- वुज़ू के फरायेज को लगातार अदा करना।

स्पष्टीकरण: चेहरा, दोनों हाथों, दोनों पैरों, को तीन तीन बार धोना मुस्तहब है, इसी तरह कुल्ली करना व नाक में पानी डालना भी। ध्यान रहे कि फर्ज सिर्फ एक बार है। और सर का मसह तो उसको एक से ज्यादा करना मुस्तहब नहीं है, जैसे कि सही हदीसें उस पर दलालत करती हैं।

वुज़ू के अंगों को लगातार धोना:

इसका अर्थ यह है कि एक अंग को धोने के बाद दूसरे अंग को धोने में इतनी देर ना लगाए कि पहला अंग सूख जाए।

चौदहवाँ पाठ

वुज़ू को तोड़ने वाली चीजें

वुज़ू को तोड़ने वाली चीजें छह हैं:

1-दोनों गुप्तांगों से कुछ निकलना।

2-शरीर से अपवित्र चीजों का अधिक मात्रा में निकलना।

3-अक्ल का खत्म होना, सोने या किसी और कीरण से।

4-दोनों गुप्तांगों में से किसी एक को हाथ से डायरेक्ट छूना।

5-ऊंट का गोश्त खाना।

6-इसलाम की सीमा से निकल जाना।

महत्त्वपूर्ण टिप्पणी:

सही राय के मुताबिक मृत को स्नान दिलाने से वुज़ू नहीं टूटता, और यही अधिक्तर उलेमा का फतवा है, क्योंकि उसपर कोई दलील मौजूद नहीं है। लेकिन अगर धुलाने वाले का हाथ मृत के गुप्तांग को डायरेक्ट छू जाए, तो वुज़ू वाजिब हो जाता है। इसलिए स्नान दिलाने वाले को चाहिए कि मृत के गुप्तांग को जरूरत पड़ने पर कपड़े के ऊपर से ही छोए।

इसी तरह उलेमा की सही राय के मुताबिक पत्नी को छूने से भी वुज़ू नहीं टूटता, चाहे वासना के साथ छूए या बिना वासना के। शर्त यह है कि लिंग से कुछ ना निकले। क्योंकि नबी(ﷺ)ने अपनी एक पत्नी का चुंबन लिया, और वुज़ू किए बिना नमाज के लिए चले गए।

और अल्लाह का फरमान:(أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ)या तुम ने औरतों को छूआ हो।(निसा:43)। इससे मुराद उलेमा की सही राय के मुताबिक संभोग है। यही इब्ने अब्बास(ﷺ)और पूर्ववर्ती व बाद के कुछ नेक उलेमा की राय है।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीजें में से कुछ की व्याख्या:

– दोनों गुप्तांगों से कुछ निकलना। जैसे मल-मुत्र, वीर्य, मजी, वदी, हवा, पत्थर, खून, कीड़े, मासिक और सुति-स्राव इत्यादि।

– शरीर से अपवित्र चीजों का अधिक परिमाण में निकलना। इसमें सही राय यही है कि यह वुज़ू को तोड़ने वाली चीज नहीं है। लेकिन सिर्फ तब जब यह मूत्र और मल के जैसा हो।

– सोने की वजह से अक्ल का खत्म होना। असल में नींद की वजह से वुज़ू नहीं टूटता, लेकिन हवा निकलने का अंदेशा रहता है, अगर उसे लगे कि हवा नहीं निकली है तो वुज़ू नहीं टूटता।

– दोनों गुप्तांगों में से किसी एक को हाथ से डायरेक्ट छूना। शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया(رحمه الله)ने कहा कि सटीक राय के मुताबिक गुप्तांग छूने से वुज़ू करना मुस्तहब होता है वाजिब नहीं।

वुज़ू की विधि चित्र के माध्यम से

- जब वुज़ू की नीयत करे तो चाहिए कि अल्लाह का नाम ले।अर्थात बिस्मिल्लाह कहे।
- फिर हथेली को तीन बार धोये, अच्छी तरह हाथों पर पानी बहाये।
- फिर अपने दाहिने हाथ से एक चुल्लू पानी ले, उसे मुंह के अंदर घुमाते हुए कुल्ली करे, फिर नथुने में पानी दाखिल करे और झिड़क दे, इस हाल में कि उसका बायां हाथ का अंगूठा व शहादत की उंगली नथुने के ऊपर हो। इस तरह तीन बार करे।
- फिर चेहरे को तीन बार धोये। और चेहरा कहा जाता है सामान्य तौर पर सर के बाल के उगने की जगह से ठोड़ी व जबड़े की हड्डी के आखिरी हिस्से तक को, और चौड़ाई में दोनों कानों के बीच का हिस्सा।
- फिर दोनों हाथों को कोहनी समेत तीन बार धोये, दाहिने से शुरू करे।
- फिर सर का मसह करे, दोनों हाथों को सर के आगे वाले हिस्से से पीछे तक ले जाए, और वापस लाए
- फिर दोनों शहादत की उंगली को कान के अंदरूनी हिस्से में डालकर मसह करे।
- फिर दोनों पाँव को टखनों समेत तीन बार धोए।

– और वुज़ू से फारिग होने के बाद कहे:

"أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُه"

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वे एक हैं उनका कोई शरीक नहीं, और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद(ﷺ)उनके बन्दे व रसूल हैं।

और तिर्मिजी में आया है: "اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ"

ऐ अल्लाह मुझे तौबह करने वालों और पाकीजा रहने वालों में से बना दे।

साबित शुदा परिमाण से ज्यादा धोने का हुक्म:

वुज़ू के अंदर साबित शुदा परिमाण से ज्यादा करना जायज नहीं है, जैसे कि तीन से ज्यादा बार धोना, या कोहनी के ऊपर के बाहों को धोना, या टख्नों के ऊपर के पिंडली को धोना, या गर्दन का मसह करना।

परिशिष्ट जिसमें अरकाने इस्लाम से संबंधित कुछ बातें हैं

पहला: पाकी हासिल करना

तयम्मुम:

यह पानी द्वारा पवित्रता हासिल करने का विकल्प है। जब वुज़ू के किसी या सारे अंगों में पानी का उपयोग संभव ना हो। चाहे पानी मौजूद ना होने के कारण, या उपयोग से किसी प्रकार के नुक्सान का डर हो, तो ऐसी हालत में मिट्टी पानी का विकल्प बन जाता है।

तयम्मुम का तरीका:

तयम्मुम की नीयत करे, फिर बिस्मिल्लाह कहे, फिर जमीन पर एक बार हाथ मारे, और अपनी दोनों हथेलियों के भीतरी भाग से चेहरे और हथेलियों के बाहरी भाग का मसह करे।

और जमीन पर हाथ मारते समय उंगलियों को मिट्टी पर फैलाना, और हथेलियों का मसह करते वक्त उंगलियों का खिलाल करना शरीअत से साबित नहीं है।

वाजिब स्नान का तरीका:

जनाबत से पवित्रता और स्नान की नीयत करे, फिर बिस्मिल्लाह कहे, फिर कुल्ली करे व नाक में पानी डाले, और फिर पूरे शरीर और बालों के नीचे तक पानी पहूँचाए।

स्नान की सुन्नतें:

गुप्तांग को धोना, फिर दोनों हाथों को धोना, फिर नमाज की तरह वुज़ू करना, फिर सर के बालों की जड़ तक पानी पहूँचाना, फिर अपना दाहिना पहलू धोना, फिर बायां पहलू धोना, फिर दोनों पाँव धोना।

स्नान को वाजिब करने वाली चीजों:

1) जनाबत से। और जनाबत कहते हैं संभोग या किसी और कारण से वीर्य स्खलन होना, इसी तरह महिला एवं पुरुष के शर्मगाह का मिलाप होना।
2) मासिक धर्म व निफास का खून निकलना।
3) शहादत के सिवा मृत्यु को प्राप्त होना।
4) काफिर का इस्लाम लाना।

मोजे पर मसह करने की शर्तें

दोनों मोजे या जुराब पाक हों

इन्हें पाकी की हालत में पहना गया हो,यानी वुज़ू करते समय दोनों पाँव पानी से धोने के बाद पहना हो।

मोजों पर मसह हदस-ए-अस्गर के बाद किया हो, ना कि जनाबत व स्नान वाजिब करने वाली चीजों के बाद।

अंग के अधिक्तर हिस्से को ढाँपे हुए हो

शरीअत से निर्धारीत समय तक ही मसह करना चाहिए, और वह है मुकीम (निवासी)के लिए एक रात एक दिन यानी(24)घंटे। और यात्री के लिए तीन रात तीन दिन यानी(72)घंटे। और हदस के बाद पहले मसह से समय शुरू होता है।

मोजों पर मसह करने की विधि:

दोनों हाथों को पाँव की उंगलियों से पिंडली तक गुजारते हूए ले जाए, यानी सिर्फ मोजे के ऊपरी हिस्से का मसह किया जाए। दोनों हाथों से दोनों पैरों का मसह होगा, इस तरह कि दाहिना हाथ दाहिने पाँव को, और बायां हाथ बायें पाँव को एक ही समय में मसह करेगा। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह दोनों कानों का मसह किया जाता है, इसलिए कि सुन्नत से यही संकेत मिलता है।

मसह से संबंधित कुछ मसाइल:

1-मसह की अवधि पूरी होने, या मोजा उतार देने से वुज़ू नहीं टूटता बल्कि बाकी रहता है।

2-फटे हूए मोजे, या पतले मोजे जिससे त्वचा नजर आ रहा हो, उस पर भी मसह करना जायज है।

मल-मूत्र त्याग करने के आदाब:

– मुस्तहब चीजें: जब शौचालय में प्रवेश करे तो पहले बायां पाँव को आगे रखे, और यह दुआ कहे: (بسم الله، اللهم إني أعوذبك من الخبث والخبائث) अल्लाह के नाम से प्रवेश करता हूँ, ऐ अल्लाह मैं खबीस नर और मादा जिन्नों की बुराई से पनाह माँगता हूँ।

– और जब शौचालय से निकले तो पहले दाहिना पाँव को बाहर रखे, और कहे: (غفرانك)ऐ अल्लाह हम आप से क्षमा चाहते हैं।

– वाजिब चीजें: वाजिब है कि दीवार या किसी और चीज से पर्दा करे, और अगर खुली जगह में हो तो काफी दूर चला जाए।

– नाजायज चीजें: जायज नहीं है कि रास्ते में, या लोगों के बैठने की जगह पर, या फलदार पेड़ के नीचे, या ऐसी जगह जहाँ लोगों को तक्लीफ पहूँचेगी, या ठहरे हूए पानी में, मल-मूत्र त्याग करे।

– जायज नहीं है कि मल-मूत्र त्याग करते समय किब्ला को सामने या पीछे करे।

– जायज नहीं कि दाहिने हाथ से गुप्तांग को छूए।

– जायज नहीं कि उस समय अल्लाह का नाम ले।

और जब मल-मूत्र त्याग कर फारिग हो जाए, तो पानी से धो ले या ढेले से साफ करले, और ढेला से साफ करने की निम्नलिखीत शर्तें हैं:

– तीन या तीन से ज्यादा बार पोंछे, उसमें एक ही जगह से नहीं।

– ठीक से साफ किया करे, जिसकी पहचान यह है कि ढेला या टिश्यु सूखा दिखे।

– अपवित्र या सम्मानजनक चीजों से सफाई ना करे, जैसे खाना, हड्डी, गोबर, इत्यादि।

और खड़े होकर पेशाब करना जायज है, इस शर्त पर कि पेशाब का छींटा शरीर या कपड़े पर ना आ लगे, और बेपर्दगी का डर ना हो। क्योंकि हदीस में है कि नबी(ﷺ)लोगों के कचरे फेंकने की जगह पर आए, और खड़े होकर पेशाब किये। (बूखारी व मुस्लिम)

पवित्रता हासिल करने से संबंधित प्रश्न

1. वुज़ू की कितनी शर्तें है :O नौ। O दस। O आठ।
2. वुज़ू के फरायेज हैं: O चार अंगों का धोना। O पिछली तमाम चीजें साथ में तर्तीब, और लगातार करना भी।
3. वुज़ू को तोड़ने वाली चीजें कितनी हैं:
   O छह। O पाँच। O आठ।
4. निम्नलिखित वाक्यों में वुज़ू को तोड़ने वाली चीजों को बयान करें:
   O ऊंट का गोश्त खाना। O हिरन का मांस खाना।
   O पेट की आवाज। O हवा निकलना।
   O ऊंघ आना। O मृतक को स्नान कराना।
   O औरत को छूना।
5. तयम्मुम का तरीका बयान कीजिये:

   ---

6. स्नान करने का तरीका बयान कीजिये:

   ---

7. निम्नलिखित मसाइल का हुक्म बयान कीजिये:

मसला	हुक्म
जुबान से नीयत करना	
वुज़ू करते समय एक नमाज की नीयत की, फिर उससे कई नमाजें पढ़ ली	
तिलावते कुरआन के लिए वुज़ू किया फिर उसी से नमाज अदा कर लिया	
वुज़ू करते हुए नीयत तोड़ दिया	
वुज़ू के बाद नीयत तोड़ दिया	
इस हाल में वुज़ू किया कि उसकी पिंडली पर आटा लगा हुआ था।	
इस हाल में वुज़ू किया कि वह ऊंट का गोश्त खा रहा था	
चोरी किये हूए पानी से वुज़ू किया	
इस्तिन्जा करने से पहले वुज़ू किया	
वुज़ू में कान की मसह के लिए नया पानी लेना	
सिर का तीन बार मसह करना	
वुज़ू में एक-एक बर धोना	
वुज़ू में तीन-तीन बर धोना	
वुज़ू में दोनों हथेलियों को धोना	
वुज़ू में दाढ़ी का खिलाल करना	
वुज़ू में अंगों को मलकर धोना	
जिस अंग का धोना फर्ज है उस पर मसह करना	

वुज़ू में सिर को धोना	
दोनों हथेलियों को बर्तन में दाखिल करना	
दाहिने तरफ से वुज़ू को आरंभ करना	
तीन बार से अधिक धोना	
पिंडली का धोना	
तैराकी के बाद नमाज पढ़ ली	
स्नान के बाद बिना वुज़ू किये नमाज पढ़ ली	

दूसरा: जकात देना

जकात के दो प्रकार हैं

शरीर की जकात

यह फितरा वाली जकात है, और यह हर मुसल्मान, छोटे बड़े, मर्द व औरत, गुलाम व आजाद, सब पर वाजिब है।

माल की जकात

यह इस्लाम का तीसरा रुकन है, और हर मुसल्मान आजाद शख्स पर फर्ज है, जो निसाब का मालिक हो गया हो। और जकात उस वक्त तक वाजिब नहीं होता, जब तक साल पूरा ना हो जाए, सिवाय जमीनी उत्पादन के। और जो असल के अधीन हो, जैसे निसाब का बढ़ना और व्यापार का लाभ, क्योंकि उसका साल गुजरना उसके असल का गुजरना है।

और माल की जकात तीन प्रकार के हैं:

व्यापार का सामान

यानी हर वह सामान जो खरीद व बिक्री के लिए रखा गया हो।

जमीनी उत्पादन

जैसे अनाज और फल इत्यादि

चरने वाले पालतू जानवर

यानी वह जानवर जो साल भर या साल का ज्यादा हिस्सा, जायेज चरागाहों पर गुजारा करता है। पालतू जानवर का मतलब है: ऊंट,गाय और बकरियाँ।

दोनों नकदी

यानी सोना चांदी, और हर वह मुद्रा जो इन दोनों की जगह उपयोग किया जाता है। सोने का निसाब बीस मिस्काल है,जो (85)ग्राम के बराबर है। और चांदी का निसाब(200) दिरहम है, जो(895)ग्राम के बराबर है।

जकात के हकदार:

1. फकीर लोग: यह वह जरूरतमंद लोग हैं, जिनके पास बिल्कुल कुछ भी ना हो, या पर्याप्त का कुछ हिस्सा हो।
2. मिस्कीन लोग: जिनके पास पर्याप्त का अधिकतर हिस्सा या आधा हिस्सा हो। तो अगर हम उदाहरणस्वरूप बारह हजार(12000)को एक साल के लिए पर्याप्त मानते हैं, तो फकीर वह होगा जिसके पास छह हजार से कम या कुछ भी नहीं होगा। और मिस्कीन वह होगा जिसके पास छह हजार या उससे ज्यादा होगा, लेकिन बारह हजार तक नहीं पहूँचेगा। इसलिए हम फकीर व मिस्कीन को इतना देंगे जो उन्हें साल भर के लिए काफी हो जाए, क्योंकि जकात साल में एक बार ही वाजिब होता है।
3. जकात के कर्मचारी: यानी वे लोग जो जकात का माल वसूल करने, हिफाजत करने, और वितरण करने पर निर्धारित हों। उनको समय का शासक चुनेगा, और उनका फकीर होना जरूरी नहीं है, बल्कि अगर वे धनी हों तब भी उन्हें दिया जा सकता है।
4. जिनकी दिलजोई का इरादा हो: यानी जिनके इस्लाम कबूल करने की आशा हो, या जिस की बुराई से बचना हो, या उसके ईमान को मजबूत करने का इरादा हो।
5. गर्दनें आजाद कराने में, वह इस प्रकार है:

   (क) मालिक से संधि किया हुआ मुसल्मान गुलाम, जो स्वयं को मालिक से खरीदना चाहता हो।

   (ख) मुसल्मान गुलाम को आजाद कराना।

   (ग)मुसल्मान कैदी को आजाद कराना।

और इसमें वह गुलाम शामिल नहीं जिसको उसका मालिक आजाद करे, और वह उसे ही जकात देना समझे, क्योंकि यह जायज नहीं है।

6. कर्जदार लोग: वे इस प्रकार है: (क) जो रिश्तेदारों के बीच सुलह कराने में कर्जदार हुआ हो। (ख) जो अपनी जरूरत के लिए कर्जदार हुआ हो।

अगर गरीब कर्जदार को जकात की नीयत से छोड़ दिया जाए, तो यह जकात की अदायगी नहीं मानी जाएगी।

7.अल्लाह के रास्ते में: इस में शामिल हैं जिहाद करने वाले, और उनके लिए जरूरी हथियार और साज व सामान।

8.पथिक: इससे मुराद ऐसे बेसहारा यात्रीगन हैं, जिनका पैसा रास्ते में खत्म हो गया हो। तो उनको इतनी मदद दी जाएगी जिससे वे अपने घर तक पहूँच जाएं।

इन सभी प्रकार में से किसी एक प्रकार को पूरा जकात देना जायज है। और जकात का माल नहीं दिया जा सकता किसी धनी व्यक्ति को, मजबूत कमाने वाले शख्स को,मुहम्मद(ﷺ)के परिवार(यानी बनू हाशिम) को,या जिन पर खर्च करने की जिम्मेदारी स्वयं उसी पर है उनको, या काफिर आदमी को। लेकिन नफ्ल सदका किसी को भी दे सकते हैं।

महत्वपूर्ण परिभाषाएं:

- बिन्ते मखाज: ऊंट का वह बच्चा है जिसका एक वर्ष पूरा हो चुका हो। और बिन्ते मखाज इसलिए कहते हैं क्योंकि उसकी माँ गर्भवती होती है।
- बिन्ते लबून: ऊंट का वह बच्चा है जिसका दो वर्ष पूरा हो चुका हो। और बिन्ते लबून इसलिए कहते हैं क्योंकि उसकी माँ दूध दे रही होती है।
- हिक्का: वह ऊंटनी है जिसकी आयु तीन वर्ष हो चुकी है। और हिक्का इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह नर ऊंट से संभोग के काबिल हो चुकी है।
- जज्आ: वह ऊंट है जिसकी आयु चार वर्ष हो चुकी है। और जज्आ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस आयु में सामने के दो दाँत गिर जाते हैं।
- तबीआ: गाय का वह बच्चा है जिसका एक वर्ष पूरा हो चुका हो।
- मुसिन्ना गाय का वह बच्चा है जिसका दो वर्ष पूरा हो चुका हो।

जकात का निसाब व परिमाण

जकात का परिमाण	निसाब	साल गुजरना	माल
आने वाली तालिका में बयान होगा	आने वाली तालिका में बयान होगा	शर्त है	चरने वाले पालतू जानवर
जो फसल बारिश, या चश्मे के पानी से सैराब की गई हो उसमें दसवाँ हिस्सा है।	तीन सौ साअ (750 किलोग्राम)	शर्त नहीं है	जमीनी उत्पादन
जिस फसल को मेहनत या मशीन से सैराब किया जाए उसमें बीसवाँ हिस्सा है			
जो फसल दोनों तरीके से सैराब किया जाए, उसमें तीन चौथाई उश्र है। (यानी माल का साढ़े सात 7.5 प्रतिशत)			
चालीसवाँ हिस्सा। 2.5 प्रतिशत	(85)ग्राम सोना या (595)ग्राम चांदी	शर्त है	नकदी यानी सोना चांदी और मुद्राएँ
चालीसवाँ हिस्सा। 2.5 प्रतिशत	उसकी कीमत सोने चांदी के निसाब तक पहूँच जाए तो जकात है	शर्त है	व्यापार का सामान

चरने वाले पालतू जानवरों के निसाब व परिमाण

चरने वाले पालतू जानवरों के निसाब व परिमाण								
गाय और भैंस का निसाब			ऊंट का निसाब (एक कोहान या दो कोहान वाला)			भेड़ और बकरी का निसाब		
उसकी जकात	इसका परिमाण		उसकी जकात	इसका परिमाण		उसकी जकात	इसका परिमाण	
	तक	से		तक	से		तक	से
एक तबीआ	39	30	एक बकरी	9	5	एक बकरी	120	40
			दो बकरी	14	10			
एक मुसिन्नह	59	40	तीन बकरी	19	15	दो बकरी	200	121
			चार बकरी	24	20			
दो तबीआ	69	60	एक बिन्ते मखाज	35	25	तीन बकरी	300	201
			एक बिन्ते लबून	45	36	फिर हर सौ में एक बकरी		
फिर हर तीस गाय या भैंस में एक तबीआ, और हर चालीस में एक मुसिन्नह।			एक हिक्का	60	46	सदके में बोक, बूढ़ी, दोषपूर्ण, और खराब बकरियाँ नहीं ली जाएंगी।		
			एक जज़्आ	75	61			
			दो बिन्ते लबून	90	76			
			दो हिक्का	120	91			
			तीन बिन्ते लबून	129	121	इसी तरह सदके में दुबली,गर्भवती,खानेयाग्य, और चुनी हूई बकरियाँ नहीं ली जाएंगी।		
			अगर उससे ज्यादा हो तो हर चालीस ऊंट पर एक					

	बिन्ते लबून, और हर पचास ऊंट पर एक हिक्का	

जकात से संबंधित प्रश्न

1. किसी भी माल में उस वक्त तक जकात नहीं, जबतक उसपर एक साल गुजर ना जाए, और साल से मुराद है: O हिज्री साल। O इस्वी साल। O दोनों।
2. एक साल गुजरने की शर्त से बाहर है:
   O दफन खजाना(रिकाज)। O जमीनी उत्पादन। O दोनों।
3. सोने का निसाब है: O 85 ग्राम। O 595 ग्राम। O 95 ग्राम।
4. चांदी का निसाब है: O 200 दिरहम। O 595 दिरहम। O दोनों।
5. पालतू जानवर: ऊंट, गाय, भैंस बकरी, सब को शामिल है। (सही- गलत)
6. फल में कोई जकात नहीं। (सही- गलत)
7. चरने वाले जानवर से मुराद है: O जिसकी कीमत ऊँची हो। O जो साल भर या साल के अधिकतर समय चरता हो।
8. वह जानवर जो जायज जगह चरता हो यानी: O जो पाकीजा चीजें खाता हो। O जिसका कोई मालिक ना हो।
9. अगर मिस्कीनों का जिक्र हो तो उसमें फकीर भी शामिल होते हैं। (सही- गलत)
10. फकीर को इतना दिया जाए जो उसको काफी हो:
    O एक साल के लिए। O एक माह के लिए।
11. जकात पर काम करने वाले: O हर वह शख्स हैं जो जकात के लिए काम करे। O सिर्फ वे लोग जिन्हें शासक निर्धारित करे।

12. निम्नलिखित चीजों में जकात का परिमाण बयान कीजिए:

माल	जकात का परिमाण	वकस अगर हो
100 दिरहम		
300 दीनार		
400 दिरहम		
80 ग्राम सोना		
500 ग्राम चांदी		
30 बकरी		
60 बकरी		
565 बकरी		
4 ऊंट		
17 ऊंट		
449 ऊंट		
30 गाय		
49 गाय		
77 गाय		
99 गाय		
दो करोड़ रियाल		
40 रियाल		
45679 रियाल		
255 साअ गेहूँ		

13. तालीफे कल्ब(दिलजोई) में वह काफिर भी शामिल है जिनसे इस्लाम में दाखिल होने की उम्मीद ना की जाए। (सही- गलत)
14. जब मालिक गुलाम को आजाद कर दे, तो उसको जकात में से दिया जा सकता है। (सही- गलत)
15. एक धनी आदमी का एक गरीब के ऊपर कुछ हक है, और वह उसे छोड़ कर जकात में शुमार कर लेता है,तो उसका यह काम सही होगा। (सही- गलत)

16. अल्लाह के रास्ते में: कहने का मतलब तमाम अच्छे कार्य में खर्च करना शामिल है, जैसे कि मस्जिद बनवाना। (सही- गलत)
17. नकदी(सोना चांदी)में जकात का परिमाण चालिसवाँ हिस्सा है। (सही- गलत)
18. चरने वाले पालतू जानवर में जकात वाजिब है। और काम वाले जानवर में वाजिब नहीं, ना ही उसमें जिसे घर पर खिलाया जाए। (सही- गलत)
19. अनाज और फलों में जकात वाजिब है, अगर निसाब तक पहूँच जाए, और यह फसल की कटाई और फलों के पकने के समय वाजिब होगा। (सही- गलत)
20. अनाज और फलों में बीसवाँ हिस्सा जकात फर्ज है, जब उसे खर्चा करके सैराब किया जाये। (सही- गलत)
21. सोने में जकात फर्ज है, जब वह निसाब को पहूँच जाए, और उसका निसाब है बीस(20)मिस्काल। (सही- गलत)
22. निम्नलिखित जिन चीजों में जकात वाजिब है उन्हें एक गोल दायरा से इंगित कीजये: O मुर्गियाँ। O वाणिज्यिक दुकान। O घर पे खिलाए जाने वाली बकरियाँ। O चरने वाले ऊंट। O खजूर काश्त की जमीन। O 25 मिस्काल सोना।
23. तबीआ वह गाय है जिसकी आयु दो वर्ष हो। (सही- गलत)
24. बैंकनोट्स(कागज के रुपये)के निसाब का हिसाब किया जाएगा: O व्यापारिक सामान के मुताबिक। O सोने या चांदी के निसाब की कीमत के मुताबिक। O सोने चांदी दोनों के निसाब की कीमत मुताबिक।
25. कागज की मुद्राओं की जकात में वाजिब है: O चालीसवाँ हिस्सा। O बीसवाँ हिस्सा।
26. अस्सी(80)ग्राम सोने की जकात है: O दो ग्राम सोना। O चार ग्राम सोना। O उसमें जकात है ही नहीं।
27. उन घरों पर जकात वाजिब है जिसे रहने के लिए तैयार किया गया हो। (सही- गलत)
28. हर वह शख्स जो यात्रा करे उसे जकात में से दिया जा सकता है क्योंकि वह पथिक है। (सही-गलत)

तीसरा: रोजा

सौम(रोजा)अरबी भाषा में किसी चीज से रुक जाने को कहते हैं, और इस्लामी शरीअत में अल्लाह की इबादत के लिए, भोर होने से लेकर सूर्यास्त तक, खाने पीने और रोजा तोड़ने वाली तमाम चीजों से रुक जाने को कहते हैं।

रोजा के अरकान

1- नीयत करना।

2- रोजा तोड़ने वाली चीजों से रुके रहना

नफ्ली रोजे की नीयत

इसकी नीयत दिन के किसी भी समय की जा सकती है,जब तक रोजा तोड़ने वाली चीजों से रुका हुआ हो, लेकिन नीयत के समय से नेकी का शुमार होगा।

फर्ज रोजे की नीयत

जरूरी है कि फर्ज रोजे की नीयत रात ही से कर ली जाए, यानी भोर होने से पहले। रमजान के शुरू में महीना दाखिल होने की नीयत करना भी काफी है, और नीयत की जगह दिल है, जुबान से नीयत करना बिद्अत है।

रोजे के प्रकार

नफ्ली रोजे:

वाजिब के सिवा तमाम रोजे

वाजिब रोजे:

रमजान, कफ्फारा और नजर के रोजे

रोजा वाजिब होने की शर्तें:

1-मुसल्मान होना। 2- अक्लमंद होना।

3- बालिग होना: लेकिन नाबालिग को रोजे के लिए प्रेरित किया जाएगा, और उसका अभिभावक उसे हुक्म देगा।

4- निवासी होना: यात्री के ऊपर रोजा वाजिब नहीं है, लेकिन बेहतर यह है कि जब तक कोई कठिनाई ना हो रोजा रखा करे, क्योंकि यह नबी(ﷺ)का तरीका है, और जल्दी जिम्मेदारी से मुक्ति भी मिल जाती है, इसी तरह रोजेदार के लिए आसानी है, और रमजान महीने की फजीलत को भी पा लेता है।

5- स्वास्थ्य अच्छा होना। 6- महिलाओं का मासिक धर्म और निफास से पाक होना।

रोगी के लिए रोजे का हुक्म

ऐसा रोगी जिसके ठीक होने की उम्मीद हो, लेकिन उस पर रोजा रखना कठिन हो।

इस हुक्म में मासिक धर्म, रजोनिवृत्ति और दूध पिलाने वाली औरतें भी शामिल हैं, और इसी तरह यात्रा करने वाले भी। जब यह सब खत्म हो जाए, तो छोड़े हूए दिनों की गिन्ती के बराबर रोजा पूरा कर ले। और अगर ठीक होने से पहले ही देहांत हो जाए तो रोजा माफ हो जाता है।

ऐसा रोगी जिसके ठीक होने की उम्मीद नहीं

इसी हुक्म में वह बूढ़ा शख्स भी शामिल होगा जो रोजा नहीं रख सकता है, उसपर रोजा जरूरी नहीं है, बल्कि हर दिन के बदले में एक मिस्कीन को खाना खिलाएगा।

उसका तरीका यह है कि दिनों की गिनती के बराबर मिस्कीनों को जमा किया जाएगा, और उनको दोपहर या रात का खाना दिया जाएगा, या दिनो के हिसाब से खाना मिस्कीनों पर वितरण कर दिया जाएगा, हर मिस्कीन को साअ नबवी का एक चौथाई हिस्सा,यानी उमदा गेहूं का आधा कीलो दस ग्राम दिया जाएगा।

और बेहतर है कि उसके साथ सालन के लिए गोशत व तेल इत्यादि भी दिया जाए।

रमजान महीने के दाखिल होने की पुष्टि कैसे होगी।

या तो रमजान का चांद देखकर, या शाबान के तीस दिन पूरे कर के।

रोजे को तोड़ देने वाली चीजें

1- जान बूझ कर खा या पी लेना। अगर किसी ने भूल कर खा या पी लिया हो तो उसका रोजा नहीं टूटता।

2- संभोग कर लेना। अगर यह रमजान के दिन में कर लिया जब रोजा उस पर फर्ज था, तो उसपर बड़ा कफ्फारा(प्रायश्चित) वाजिब हो जाता है और वह है: गुलाम आजाद करना, अगर ना कर सके तो लागतार दो महीने रोजे रखना, अगर ना कर सके तो साठ मिस्कीन को खाना खिलाना।

3- वीर्य का निकलना, चाहे पत्नी के शरीर से शरीर को मिलाने से हुआ हो, या चुंबन से, या बाहों में भरने से, इत्यादि।

4- जो चीज खाने पीने के हुक्म में हो, जैसे कि भोजन मुहैया करने वाला इंजेक्शन लगवाना। अगर इंजेक्शन भोजन वाला ना हो तो कोई बात नहीं।

5- हजामत के द्वारा खून निकालना, अगर थोड़ा खून जांच के लिए निकाला जाए तो रोजा नहीं टूटेगा।

6- जानबूझकर उल्टी करना।

7- मासिक धर्म और सूति-स्राव का खून निकल आना।

कुछ वह चीजें जो रोजेदार के लिए जायज हैं

जैसे थूक का निगल लेना, जरूरत पड़ने पर खाना चख लेना, स्नान करना, इत्र लगाना, ठंडक हासिल करना इत्यादि।

रोजे की मुस्तहब(सुन्नत)चीजें

1- सेहरी खाना। 2- सेहरी में देरी करना। 3- इफ्तार में जल्दी करना।
4- रुतब खजूर से इफ्तार करना। अगर ना मिले तो सूखे खजूर से, और खजूरें ताक लेना, अगर ना मिले तो पानी के कुछ घोंट से, अगर कुछ भी ना पाये तो दिल से इफ्तारी की नियत कर ले।
5- इफ्तार के समय और रोजे के दौरान दुआ करना।
6- ज्यादा से ज्यादा सदका करना। 7- रात की नमाज पर खास ध्यान देना।
8- कुरआन की तिलावत करना। 9- अगर कोई अपशब्द कहे तो जवाब में यह कहना कि मैं रोजेदार हूं। 10- रमजान में उमरा करना।
11- आखिरी दस दिनों में एतकाफ करना।
12- कदर वाली रात्री (शबे कदर) को तलाश करना।

रोजे की मकरूह चीजें:

1- कुल्ली करने और नाक में पानी डालने में मुबालिगा(अतिशयोक्ति)करना।
2- बिना जरूरत खाना चखना।

वह चीजें जो रोजेदार पर हराम हैं:

1-बल्गम को निगल जाना, अगरचे इससे रोजा टूट नहीं जाता।
2-पत्नी का चुंबन,यह उस व्यक्ति के लिए है जो अपने ऊपर संयम (कंट्रोल) ना रख सके।
3-झूट बोलना, और उसी में शामिल है तमाम गलत कार्य।
4-अज्ञानता, मूर्खता और बेवकूफी के कार्य करना।
5-सौमे विसाल करना, अर्थात बिना सेहरी व इफ्तारी के लगातार उपवास करना(रोजा रखना)।

नफली रोजे:

1- शव्वाल महीने के छह रोजे रखना,उसके लिए जिसने रमजान के रोजे पूरे किये हों
2- अरफा के दिन का रोजा रखना,उसके लिए जो हज्ज नहीं कर रहा हो।
3- यौमे आशूरा(दस मुहर्रम)का रोजा रखना, साथ में नौ या गयारह तारीख को मिला लेना।
4- सोमवार और बृहस्पतिवार का रोजा रखना, जबकि सोमवार का अधिक महत्वपूर्ण है।
5- हर महीने के तीन दिन रोजे रखना,लेकिन बेहतर है कि सफेद दिनों (चाँदनी वाले दिनों)(13-14-15)तारीख के रोजे रखे।
6- एक दिन रोजे रखना और एक दिन खाना खाना।
7- अल्लाह का महीना मुहर्रम के रोजे रखना।
8- जिल-हिज्जा की नौ तारीख के रोजे रखना।
9- शाबान महीने के रोजे रखना, लेकिन पूरे महीने का ना रखे।

मकरूह रोजे:

सिर्फ शुक्रवार, शनिवार और रविवार को विशेष रुप से रोजा रखना मकरूह है, लेकिन अगर सुन्नत रोजे इन दिनों में पड़ जाए, तो कोई बात नहीं, जैसे कि अरफा का रोजा अगर इन दिनों में से किसी दिन पड़ जाए तो हरज नहीं है।

हराम रोजे:

1- रजब महीने को रोजे के लिए खास करना।
2- दोनों ईदों के दिन रोजे रखना।
3- शक के दिन रोजा रखना। लेकिन अगर किसी की कोई स्थायी आदत हो, और यह दिन पड़ जाए, तो वह रख सकता है।
4- तशरीक के दिनों को रोजा रखना, सिवाय उनके जो हज्ज में हो और कुर्बानी ना कर सका हो।
5- हमेशा के लिए(हर दिन) रोजे रखना।

रोजा कजा(पूरा करने)के प्रावधान:

– कजा रोजे को लगातार रखना मुस्तहब है।
– बचे हुए रोजे को ईद के दिन के फौरन बाद जल्दी रख लेना मुनासिब है।
– दूसरे रमजान तक देर करना जायज नहीं।
– अगर बिना कारण देर किया गया, तो उस पर छोड़े हुए रोजे से ज्यादा कुछ करना वाजिब नहीं है, लेकिन गुनहगार जरूर होगा।

जकात-ए-फित्र:

रमजान के अंतिम दिन सूर्यास्त के बाद सदका-ए-फित्र हर मुसल्मान पर वाजिब होता है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत, गुलाम हो या आजाद, इस शर्त पर कि उसके पास ईद के दिन व रात अपने और अपने बच्चों के खोराक व मूल जरूरतों से ज्यादा कुछ बचा हो। और भ्रूण पर फित्रा मुस्तहब है।

और फित्रा लागू होने की हिक्मतें निम्नलिखीत हैं:

- यह रोजेदारों को गलत व गंदी बातों के गुनाहों से पाक करता है।
- इससे फकीर व मिस्कीनों को समृद्ध किया जाता है, ताकि ईद के दिन भीख माँगने पर मजबूर ना हों।

जकात-ए-फित्र निकालने का समय

हराम वक्त:	मुस्तहब वक्त:	जायज वकत:
ईद की नमाज के बाद	फज्र के बाद से ईद की नमाज तक	ईद से एक या दो दिन पहले

जकात-ए-फित्र का परिमाण:

जकात-ए-फित्र में उस भोजन का एक साअ दिया जाएगा जिसे इंसान खाता हो, इसमें पैसे देना दुरुस्त नहीं, और साअ का परिमाण होता है अच्छे गेहूं का दो किलो चालीस ग्राम।

ईद की नमाज:

यह प्रत्येक मुसलमान पर फर्ज है,और उसका वक्त है सूरज एक नेजा के बराबर बुलंद होने से लेकर सूरज के ढलने तक। अगर छूट जाए तो कजा नहीं हो सकता। इस नमाज को शहर के बाहर खुले में पढ़ना सुन्नत है, और मस्जिद में भी पढ़ी जा सकती है। इसी तरह सुन्नत है: ईद से पहले विषम संख्या में खजूरें खाना, पाकी हासिल करना, खूशबू लगाना, अच्छे पोशाक पहनना और एक रास्ते से जाना व दूसरे रास्ते से वापस आना।

ईद की मुबारकबादी के तौर पर(تقبل الله منا ومنكم)कहने में कोई हरज नहीं है, और ईद की रात और दिन के पाँचों नमाजों के बाद तक्बीर कहना सुन्नत है और इस तरह कहा जाएगा:

(الله أكبر، الله اكبر، لا إله إلا الله، والله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد)

और ईद की नमाज पढ़ने का तरीका यह है कि दो रकअत खुतबा से पहले पढ़ी जाएगी, पहली रकात में तक्बीर-ए-तहरीमा के बाद छह तक्बीरें कहना होगा, और दूसरी रिकात में तिलावत से पहले व तकबीर-ए-कियाम के बाद पाँच तकबीरें कहना होगा।

रोजे से संबंधित प्रशन

1. रोजे के कितने अरकान हैं: O दो। O तीन। O चार।
2. रोजा रखना किस पर वाजिब है

   (क)----------

   (ख)----------

   (ग)----------

   (घ)----------
3. हर तरह की बिमारी रोजा रखने से रोकती है। (सही- गलत)
4. निम्नलिखित कार्यों का हुक्म बयान कीजिये:

कार्य	हुक्म
फज्र के बाद रोजे की नीयत करना	
बगैर नीयत के रोजा रखना	
छोटे बच्चे का रोजा रखना	
मुसाफिर का रोजा रखना	
निफास की हालत में रोजा रखना	
असमर्थ आदमी का रोजा रखना	
रोजे की हालत में खाना पीना	
भोजन वाला इंजेक्शन लगावाना	
आँख में ड्राप डालना	
दर्द निवारक इंजेक्शन लगवाना	
पछना लगवाना	
उलटी करना	
थूक निगल लेना	
खाना चखना	
नींद आना	

स्नान करना	
ठंडक हासिल करना	
मिस्वाक करना	
धूप वाली खूश्बू	
सेहरी का वक्त	
किस चीज से सेहरी करे	
किस चीज से इफ्तारी करे	---------से,अगर ना पाये तो---------से, अगर ना पाये तो--------से, अगर ना पाये तो-----
तरावीह की नमाज	
रमजान में उमरह करना	
कुल्ली करने में मुबालगा करना	
रोजेदार का पत्नी को चुंबन लेना	
दो दिन लगातार बिना सेहरी व इफ्तारी के रोजे रखना	
शव्वाल महीने के छह रोजे रखना	
अरफा के दिन का रोजा रखना	
शक के दिन का रोजा रखना	
ईद के दिन का रोजा रखना	
तश्रीक के दिनों का रोजा रखना	
मुहर्रम महीने का रोजा रखना	
रजब महीने का रोजा रखना	
हमेशा के लिए रोजे रखना	
जुमा के दिन का रोजा रखना	
रोजे के कजा को दूसरे रमजान तक देर करना	

चौथा: हज्ज करना

हज्ज इस्लाम का पांचवां रुक्न है। और यह इस शर्त पर वाजिब है कि व्यक्ति मुसलमान हो, अक्लमंद हो, बालिग हो, आजाद हो, और मक्का जाने में सक्षम हो। महिलाओं के लिए एक शर्त ज्यादा है, और वह है मुहरिम का पाया जाना, अगर उसे हज्ज के लिए यात्रा करना पड़े। और हज्ज के चार अरकान हैं:

सई करना(चलना) यानी सफा और मारवा के बीच चलना। अल्लाह तआला फरमते हैं: निस्संदेह सफा और मरवा अल्लाह की विशेष निशानियों में से हैं। (बकरह:158)

तवाफे इफाजा: इसको तवाफे जियारह भी कहते हैं, यह अरफा में ठहरने के बाद किया जाता है। और यह तवाफे कुदूम के अतिरिक्त है।

अरफा में ठहरना: उसका समय जिलहिज्जा की नौ तारीख के सूरज ढलने से लेकर, ईद के दिन की फज्र तक है। नबी(ﷺ)ने फरमाया: हज्ज अरफा में ठहरने का नाम है।(अहमद:18774)

इहराम बांधना: हज्ज या उमरह में दाखिल होने की नीयत को इहराम कहते हैं। और यह लब्बैक कहने और चादर व लुंगी पहनने के अतिरिक्त है।

हज्ज के प्रकार

हज्जे तमत्तोअ: इसका अर्थ यह है कि हज्ज के महीने में उमरह की नीयत करे, उसको पूरा करे और हलाल हो जाए, फिर उसी वर्ष हज्ज का इहराम बांधे, इसमें भी कुर्बानी वाजिब होता है।

हज्जे किरान: इसका अर्थ यह है कि हज्ज और उमरे की एक साथ नीयत की जाए, और दोनों के कार्यों को पूरा किया जाए, और इसमें कुर्बानी बाजिब होता है।

हज्जे इफ्राद: इसका अर्थ यह है कि सिर्फ हज्ज की नीयत की जाए, और सिर्फ उसी के कार्यों को पूरा किया जाए।

हज्ज की वाजिब चीजें

अगर किसी व्यक्ति ने इन वाजिब चीजों में से किसी एक को छोड़ दिया है,तो उसके निवारण के लिए कुर्बानी देना वाजिब है। उसका विवरण यह है कि एक बकरी हरम की सीमा के अंदर जबह करना होगा, और मक्का के फकीरों में वितरण कर दिया जाएगा, उसमें से खुद खाना जायज नहीं।

मीकात से इहराम बांधना।	सूर्यास्त तक अरफा में ठहरना, उस व्यक्ति के लिए जो दिन में ठहरे
मुज्दलिफा में रात गुजारना।	तश्रीक की रातें मिना में गुजारना
कंकरियाँ मारना।	बालों की शेविंग करना या कटवाना

विदाई का तवाफ करना, यह हर उस हाजी के लिए वाजिब है जो मक्का छोड़ना चाहे, अगरचे हज्ज के महीनों के बाद ही निकले, सिवाय हैज व निफास वाली औरतों के।

हज्ज उमरह की मीकातें

स्थानिक मीकातें:

- जुल हुलैफाः मादीना वालों के लिए है, और जो वहाँ से गुजरे।
- जोहफाः शाम, मिस्र और मग्रिब वालों के लिए है।
- कर्ने मनाजिलःनज्द वालों के लिए।
- यलम्लमः यमन वालों के लिए।
- जात इर्कः इराक वालों के लिए।

सामयिक मीकातें:

यह हज्ज के महीने हैं, यानी: शव्वाल,जुल-कादा, और जुल-हिज्जा। सामयिक मीकातें सिर्फ हज्ज के लिए होती हैं, उमरह के लिए कोई निर्धारित समय नहीं है।

हज्ज की मुस्तहब चीजें

पुरुषों के लिए सफेद रंग के चादर व लुंगी का पहनना।

इहराम के लिए स्नान करना और खुशबू लगाना

इहराम बांधने से लेकर जमरा-ए-अक्बा को कंकरी मारने तक लब्बैक कहते रहना

नाखुन तराश्ना, और उन बालों को साफ करना जिनका निकालना इहराम की नीयत से पहले जरूरी है।

आगमन के तवाफ में पहले के तीनों चक्करों में रमल करना। और रमल कहते हैं तेज गति से चलने को।

हज्जे मुफ्रद और हज्जे किरान करने वालों के लिए आगमन का तवाफ करना।

मुज्दलिफा पहूंच कर मग्रिब व इशा की नमाज को जमा व तक्दीम करके पढ़ना।

हज्जे तमत्तोअ करने वाले के लिए आगमन के तवाफ और उमरे के तवाफ में इज्तिबाअ करना। और इज्तिबाअ कहते हैं दाहिने कंधे के खुला रखने को

हजरे अस्वद का चुंबन करना

अरफा की रात मिना में गुजारना

मुज्दलिफा में मश्अर-ए-हराम के पास फज्र से सूर्योदय तक ठहरना, और मुज्दलिफा पूरा का पूरा ठहरने क स्थान है।

इहराम की हालत में जिन चीजों से बचना जरूरी है

यह नौ चीजें है: सिर और शरीर के बाल निकालना, नाखुन तराशना, पुरुषों का टोपी इत्यादि से सर ढाँपना, पुरुषों का सिला हुआ कपड़ा पहनना (सिला हुआ का अर्थ होता है वह कपड़ा जो शरीर या शरीर के किसी अंग के साइज के मुताबिक सिलाया जाए), महिलाओं के लिए नकाब और दस्ताना पहनना, खूशबू लगना (सुगंधित साबुन भी इसी हुक्म में है), जंगली जानवर का शिकार और कत्ल करना, अपने लिए या किसी और के लिए विवाह का आयोजन करना, संभोग करना, बिना संभोग के पत्नी के शरीर से चिपकना। अगर कोई व्यक्ति भूल कर, या अज्ञानता से, या मजबूरी में, ये कार्य कर डाले, तो उस पर कोई कफ्फारा नहीं है, सिर्फ जो शिकार करेगा उसपर फिद्या है। जान बूझ कर करने की सूरत में इन चीजों के चार प्रकार हैं:

जिसका फिद्या सर मुंडवाने के जैसा है:	जिसका फिद्या गंभीर है:	जिसका फिद्या उसके जैसा है:	जिसमें कोई फिद्या नहीं:
यह फिद्या बाकी प्रतिबंधित चीजों में है, और इस फिद्या में तीन चीजों के बीच चयन करना होता है: या तो तीन दिन का रोजा रखे, या छह मिस्कीन को खाना खिलाए (हर एक को आधा साअ करके) या एक बकरी जबह करके हरम के फकीरों में वितरण कर दे।	यह फिद्या संभोग के कारण लागू होता है, लेकिन अगर कोई तहल्लुल-ए-अव्वल से पहले ही संभोग कर लेता है, तो उसका हज्ज बेकार हो जाएगा, लेकिन फिर भी पूरा करेगा, और अगले साल दोबारा उसी हज्ज को अदा करेगा। और उस पर कुर्बानी वाजिब है।	यह जंगली जानवर के शिकार या कत्ल करने का फिदया है, तो जिसने ऐसा किया उसके ऊपर मुत्लक फिदया है, यानी उस जानवर के बराबर जिसका उसने शिकार किया, और इसका फैसला दो न्याय वाले व्यक्ति करेंगे	जैसे अपने लिए या किसी और के लिए विवाह का आयोजन करना। इसी तरह बिना संभोग के पत्नी के शरीर से चिपकना, जब उससे वीर्य स्खलित ना हो। तो इसमें कफ्फारा नहीं है, बल्कि तौबा है।

हज्ज के दिनों के नाम

निकलने का दूसरा दिन:	निकलने का पहला दिन:	ठहरने का दिन:	ईद का दिन:	अरफा का दिन:	तरविया का दिन:
यह जिल-हिज्जा का तेरहवाँ दिन है।	यह जिल-हिज्जा का बारहवाँ दिन है।	यह जिल-हिज्जा का गयारहवाँ दिन है।	या कुर्बानी का दिन,यह जिल-हिज्जा का दसवाँ दिन है।	या ठहरने का दिन,यह जिल-हिज्जा का नवाँ दिन है।	जिल-हिज्जा का आठवाँ दिन,क्योंकि लोग उस दिन मिना की तरफ पानी लेकर जाते थे।

जमा होने की रात ईद की रात को कहा जाता है, यह नाम इस लिए दिया गया क्योंकि लोग अरफा में ठहरने के पश्चात इस रात जमा होते थे, कारण यह था कि मक्का वाले जाहिलीयत में अरफा तक नहीं जाते थे।

हज्ज में दुआ करने की पाँच जगहें हैं:

सई करते समय,सफा व मर्वा के ऊपर,और दोनों के दरमियान	तवाफ के दौरान	तशरीक के दिनों में छोटे और बीच के जमरा को कंकरी मारने के बाद।	मुज्दलिफा में दस तारीख की रात, फज्र से लेकर उजाला होने तक	अरफा के मैदान में, नौवीं जिल-हिज्जा के दिन, सूरज ढलने से लेकर सूर्यास्त तक

हज्ज और उमरा का तरीका:

शैख मुहम्मद बिन सालिह अल-उथैमिन(رحمه الله)फरमाते हैं:
जब मीकात पहूंच जाएँ तो स्नान कर लें, और अपने शरीर यानी सिर और दाढ़ी पर खूश्बू लगा लें, फिर तमत्तोअ की नीयत के साथ उमरा का इहराम बांध लीजिए, और लब्बैक कहते हूए मक्का की तरफ रवाना हो जाइए। जब काबा शरीफ सामने आ जाए तो उमरा के सात तवाफ कर लीजिए, और याद रखिए कि पूरी मस्जिद तवाफ की जगह है, चाहे काबा से करीब हो या दूर, लेकिन अगर भीड़ से तक्लीफ ना हो तो करीब से तवाफ करना बेहतर है। अगर भीड़ हो तो दूर ही रहना चाहिए, अल्लाह क कृपा है कि इस मामले में कुशादगी रखी गई है। जब तवाफ पूरा कर लें तो मकाम-ए-इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज पढ़ लें, यदि जगह उपलब्ध हो तो उसके करीब पढ़ें वरना दूर ही, महत्त्वपूर्ण यह है कि मकाम-ए-इब्राहीम आपके और काबा शरीफ के बीच में आये। फिर उमरा की सई के लिए निकलें, और सफा से शुरू करें, जब सातों चक्कर पूरे हो जाएं तो पूरे सिर के बालों को कटवा लें, और लोगों की देखादेखी सिर के एक ही तरफ के बाल ना कटवाएँ।
फिर जब जिल-हिज्जा का आठवाँ दिन हो, तो स्नान कर लें, खूश्बू लगा लें और अपने ठहरने की जगह से हज्ज का एहराम बाँध लें, और मिना के लिए निकल पड़ें, और वहाँ पहूँच कर जुहर, अस्र, मग्रिब, इशा और फज्र की नमाजें, बिना जमा किये कस्र के साथ पढ़ लें, क्योंकि आपके नबी(ﷺ)मक्का और मिना में बिना जमा के कस्र करते थे। फिर जब अरफा के दिन सूर्योदय हो जाए तो विनम्र होकर लब्बैक कहते हूए अरफा की तरफ चल पड़ें। वहाँ पहूँच कर जुहर और अस्र की नमाजें जमा तक्दीम के साथ दो-दो रकात अदा करें, फिर दुआ व प्रार्थना के लिए एकाग्रित हो जाएँ, और कोशिश करें कि पवित्रता की हालत में ही समय गुजरे।

किब्ला को सामने करें, अगरचे पहाड़ आप के पीछे हो जाए। क्योंकि हुक्म सिर्फ किब्ला को आगे करने का है, पहाड़ को नहीं। मैदान-ए-अरफा की सीमाओं और उनकी निशानियों का अच्छी तरह ध्यान रखें, क्योंकि बहुत सारे हाजी अरफा के बाहर ही ठहर जाते हैं, याद रहे कि जो अरफा में ना ठहरे उसका हज्ज होता ही नहीं है, क्योंकि नबी(ﷺ)ने फरमाया: अरफा में ठहरना ही असल हज्ज है।(अहमद:18774) और पूरा अरफा ठहरने की जगह है, पूरब का हिस्सा हो या पश्चिम का, दक्षिण का हिस्सा हो या उत्तर का, सिवाये वादी अरना के, इसलिए कि नबी(ﷺ)ने फरमाया: मैं यहाँ ठहरा, और पूरा अरफा ठहरने की जगह है।(मुस्लिम:1218) जब सूर्यास्त हो जाए और उसका यकीन भी हो जाए, तो विनम्र होकर लब्बैक कहते हूए मुज्दलिफा की तरफ चल पड़ें, और जितना संभव हो शांती बनाये रखें, जैसा कि आपके नबी(ﷺ)ने आदेश दिया है, जब आप(ﷺ)अरफा से चले तो अपनी ऊंटनी का लगाम इतना खींचा कि उसका सिर पायदान को छू रहा था,और आप(ﷺ)अपने हाथ के इशारे से कह रहे थे: ऐ लोगो, शांती बनाये रखो ,शांती से चलो। (मुस्लिम:1218)

जब मुज्दलिफा पहूँच जाएँ, तो वहाँ मग्रिब व इशा पढ़ लें, फिर फज्र तक लेट जाएँ। और नबी(ﷺ)ने किसी को भी फज्र से पहले मुज्दलिफा से निकलने की छूट नहीं दी,सिवाय कमजोर लोगों के। उन लोगों को छूट दी गई कि वे आखिरी रात को मुज्दलिफा से निकल जाएँ। जब आप फज्र की नमाज पढ़ लें तो किब्ला को सामने करके अल्लाह की बड़ाई व प्रशंसा करें, और उजाला होने तक दुआ करते रहें। फिर सूर्योदय से पहले मिना की तरफ रवाना हो जाएँ, फिर सात कंकरियाँ उठा लें और जमरा-ए-अकबा,जो कि मक्का की तरफ अंतिम जमरा है, के पास जाएँ और सूर्योदय के बाद सात कंकर से शैतान को मारें।

हर कंकर के साथ पूरी विनम्रता से अल्लाहो अक्बर कहें। और जान लें कि कंकर मारने का मक्सद अल्लाह की बड़ाई बयान करना, और उनके जिक्र को कायम करना होता है। जरूरी है कि कंकरियाँ हौज में जा गिरे, लेकिन स्तंभ को लगना शर्त नहीं है, जब कंकर मारने से फारिग हो जाएँ तो हदी का जानवर जबह करें, और हदी में उसी तरह का जानवर जरूरी है जो कुर्बानी में जरूरी होता है। और जबह करने में किसी शख्स को वकील या प्रतिनिधि बनाने में कोई हरज नहीं है। फिर जबह के बाद अपने सिरों को मुंडवाएँ, पूरे सिर के बालों को मुंडवाना जरूरी है, कुछ हिस्सा मुंडवाना काफी नहीं होगा। महिलाएँ बालों के आखिरी हिस्से से उंगली के पोर के बराबर कटवा लेगी।

यह सब कर लेने के बाद तहल्लुल-ए-अव्वल हासिल हो जाता है, तब आपके लिए जायज है कि मन पसंद कपड़े पहनें, नाखुन तराशें, खूशबू लगाएँ, लेकिन पत्नी से संभोग ना करें, फिर जुहर से पहले मक्का जाएँ और हज्ज का तवाफ व सई कर लें, और फिर मिना वापस लौट जाएँ। यह सब यानी तवाफ, सई, कंकर मारने व सिर मुंडवाने से दूसरा तहल्लुल भी हासिल हो जाता है, तब आपके लिए सब कुछ हलाल हो जाता है, यहाँ तक कि पत्नियाँ भी।

हे लोगो ईद के दिन हाजी को चार काम करने होते है: कंकर मारना, कुर्बानी करना, सर मुंडवाना, और तवाफ व सई करना। यह पूर्ण तर्तीब है, लेकिन अगर कुछ आगे पीछे हो जाए, उदाहरणस्वरूप कुर्बानी से पहले सिर मुंडवा ले, तो कोई हरज नहीं। और अगर तवाफ व सई को मिना से वापस आने तक देर कर दे तो भी कोई हरज नहीं। और अगर कुर्बानी को विलंब करके तेरहवीं तारीख को मक्का में जाकर कर ले, तो भी हरज नहीं, विशेष तौर पर जब जरूरत और परिस्थिति ऐसी हो। गयारह तारीख की रात मिना में गुजारें, जब सूरज ढल जाए तब तीनों जमरात को पत्थर मारें।

पहला से शुरू करें, फिर बीच वाला, फिर जमरा-ए-अकबा, हर एक को सात कंकरियाँ मारें, और हर कंकर के साथ अल्लाहो अक्बर कहें। याद रहे कि ईद के दिन कंकर मारने का समय आम लोगों के लिए सूर्योदय से शुरू होता है, और कमजोरों के लिए रात के अंतिम पहर से शुरू हो जाता है, और सूर्यास्त तक बाकी रहता है। और बाकी दिनों में इसका समय सूरज के ढलने से सूर्यास्त तक है, इन दिनों सूरज के ढलने से पहले पत्थर मारना जायज नहीं। अगर दिन में भीड़ अधिक हो तो रात को पत्थर मारा जा सकता है। अगर कोई व्यक्ति छोटा, बूढ़ा, या बीमार होने के कारण खूद पत्थर नहीं मार सकता है, तो किसी को वकील बना सकता है, जो उसकी तरफ से यह कार्य कर देगा। अगर वकील एक ही जगह पर खड़ा रह कर अपनी, और उस शख्स की तरफ से जिसने वकील बनाया, कंकर मार ले तो इसमें कोई हरज नहीं, बस इतना जरूरी है कि पहले अपना काम करे फिर उसका।

जब आप बारह तारीख का पत्थर मार लें तो आपका हज्ज पूरा हो गया, और आपको इख्तियार है कि जल्दी करते हुए मक्का के लिए निकल जाएँ, और अगर चाहें तो तेरह तारीख की रात मिना में गुजारकर सूरज ढलने के बाद पत्थर मारें, और ऐसा करना बेहतर है, क्योंकि नबी(ﷺ)ने ऐसा ही किया था। फिर जब मक्का से घर जाना चाहें, तो विदाई का तवाफ कर लें, याद रहे कि मासिक धर्म वाली और निफास वाली महिलाओं के लिए विदाई का तवाफ जरूरी नहीं है। इसी तरह उन महिलाओं का मस्जिद के दरवाजे तक आना, और कुछ देर के लिए ठहरना भी शरीअत में नहीं है।

हज्ज से संबंधित प्रश्न

1. हज्ज किस पर वाजिब है?
   (क)----------
   (ख)----------
   (ग)----------
   (घ)----------
   (ञ) महिला के लिए एक शर्त ज्यादा है और वह है----------
2. हज्ज के कितने अरकान हैं? O दो। O तीन। O चार।
3. इहराम हज्ज के अरकान में से एक रुक्न है, और वह है: चादर व तहबंद का मीकात से पहन लेना। (सही - गलत)
4. तवाफ-ए-इफाजा, तवाफ-ए-जियारा के अतिरिक्त है, इनमें से पहला रुक्न है और दूसरा सुन्नत है। (सही- गलत)
5. नबी(ﷺ)ने तीन हज्ज किये। (सही - गलत)
6. हज्ज फर्ज होते ही फौरन अदा कर लेना चाहिए। (सही - गलत)
7. मदीना के लोग यलमलम से इहराम बांधेंगे। (सही- गलत)
8. उमरह का सामयिक मीकात रमजान का महीना है। (सही- गलत)
9. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों को भरें: हज्ज और उमरा उम्र में--------बार फर्ज है, और जिस ने हज्ज किया और----------नहीं किया, और----------भी नहीं किया, तो वह अपने गुनाहों से इस तरह पाक हो गया, जैसे कि आज ही उसकी माँ ने उसे जन्म दिया हो, और हज्जे मबरूर का कोई बदला नहीं सिवाय----------के।
10. मक्का के लोग तन्ईम से हज्ज का इहराम बाँधेंगे। (सही - गलत)
11. औरत अपने इहराम के लिए सफेद कपड़ा पहनेगी। (सही - गलत)
12. जो इहराम का इरादा रखता है वह खूश्बू लगाए----------और ना लगाए------
13. औरत के लिए सिला हुआ कपड़ा पहनना जायज नहीं। (सही - गलत)
14. मुहरिम के लिए बेल्ट पहनना हराम है। (सही - गलत)
15. मुहरिम महिलाएँ ना तो----------पहनेगी, और ना ही----------

16. इज्तिबाअ करना सुन्नत है:
O उमरा के तवाफ में। O आगमन के तवाफ में। O तवाफे जियारा में।
O सिर्फ पहला और दूसरा। O इन तमाम जगहों पर।
17. सई में जोर से चलना मुस्तहब है। (सही - गलत)
18. सई आरंभ होगा---------- और खत्म होगा----------
19. हाजीगण अरफा से मग्रिब से पहले लौटेंगे। (सही - गलत)
20. अरफा में ठहरना हज्ज के वाजिबात में से एक है। (सही - गलत)
21. हज्ज के कार्य------के दिन से आरंभ होता है, और------के खत्म होने तक जारी रहते हैं।
22. मैदाने अरफात में पहाड़ पर चढ़ना शरीअत से साबित नहीं। (सही - गलत)
23. (हदी)कुर्बानी करना हज्ज-ए-तमत्तोअ व हज्ज-ए-किरान करने वालों के लिए वाजिब, और इफ्राद करने वालों के लिए सुन्नत है। (सही - गलत)
24. ईद के दिन जमरा-ए-अकबा को कंकरियाँ मारने के बाद लब्बैक कहना खत्म हो जाता है। (सही - गलत)
25. अगर हाजी कंकरी को हौज में डाल दे, और स्तंभ को ना लगे, तो उसका काम सही होगा। (सही - गलत)
26. दसवीं जिल-हिज्जा को हाजी तीनों जमरात को कंकरी मारेगा। (सही - गलत)
27. तश्रीक के दिनों में सूरज ढलने के बाद ही पत्थर मारना शुरू होगा। (सही- गलत)
28. जमरा-ए-अकबा को कंकरी मारने के बाद दुआ करना सुन्नत है। (सही - गलत)
29. अगर तवाफ-ए-इफाजा को मक्का से निकलने तक देर किया जाए, तो वही विदाई का तवाफ भी हो जाएगा,और तवाफ-ए-इफाजा तवाफ-ए-उमरा की तरह है,सिवाय----और---
30. हज्ज-ए-किरान व इफ्राद करने वालों के लिए वाजिब है कि सई करे---------- और हज्ज-ए-तमत्तोअ करने वाले----------
31. निम्नलिखित कार्यों का हुक्म बयान कीजिए

मस्ला	हुक्म
बच्चों का हज्ज	----------
महिलाओं का बिना मुहरिम हज्ज करना	----------
उस व्यक्ति का हज्ज जिसके ऊपर कर्ज हो	----------

पंद्रहवाँ पाठ

हर मुसलमान का धार्मिक नैतिकता व चरित्र से परिपूर्ण होना

हर मुसलमान को अच्छे चरित्र से परिपूर्ण होना चाहिए, जिन में से कुछ इस प्रकार हैं: सच्चाई, अमानतदारी, पाकदामनी, लज्जा, बहादुरी, उदारता, वफादारी, और हर उस चीज से बचना जिसको अल्लाह तआला ने हराम किया है, पड़ोसी के साथ अच्छा बर्ताव,और सामर्थ्य के अनुसार जरूरतमंद लोगों की मदद करना, इस तरह की और भी नैतिक चिजें, जिनकी वैधता पर कुरआन व हदीस दलालत करती है।

महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ

- (सच्चाई)यानी अपनी बातों, कार्यों, और एतकाद में अल्लाह के साथ सच्चे होने का सबूत देना, और अल्लाह के बन्दों के साथ सच बोलना। इसका विपरीत शब्द झूठ है।
- (अमानतदारी)यह महान फरीजा है, जिसे उठाने की जिम्मेदारी इंसान ने ली है, इसका विपरीत शब्द खयानत है।
- (पाकदामनी)यह हराम कार्यों से रुक जाने का नाम है।
- (लज्जा)यह ऐसा चरित्र है जो इंसान को अच्छे कार्य करने पर उभारता,और बुरे कार्यों से रोकता है।
- (पड़ोसी के साथ अच्छा बर्ताव)इसके लिए जरूरी है कि निगाहें नीची रखी जाएँ, और पड़ोसियों के पोशीदा राजों पर ताक-झांक ना की जाए।
- (जरूरतमंद लोगों की मदद करना) नबी(ﷺ)ने फरमाया: जिस ने किसी मोमिन की दुनियावी परिशानियों में से किसी एक परिशानी को दूर किया, अल्लाह उसकी कयामत के दिन की परिशानियों में से एक परिशानी को दूर करेगा, और जिसने किसी तंगदस्त पर आसानी की, तो अल्लाह उस पर दुनिया व आखिरत में आसानी फरमायेगा, और जिसने किसी मुसलमान की पर्दापोशी की अल्लाह दुनिया व आखिरत में उसकी पर्दापोशी करेंगे। अल्लाह उस बन्दे की मदद में लगे रहते हैं जो अपने किसी भाई की मदद में लगा रहता है।(मुस्लिम:2699)

सोलहवाँ पाठ

इस्लामिक स्वभाव में खूद को ढालना

हर मुसल्मान को चाहिए कि इस्लामिक स्वभाव में स्वयं को ढाले, जिन में से कुछ इस प्रकार हैं: सलाम करना, मुस्कुरा कर मिलना, दाहिने हाथ से खाना और पीना, काम शुरू करते वक्त बिस्मिल्लाह, और खत्म करते वक्त अल्हम्दो लिल्लाह कहना, छींक आने पर अल्हम्दो लिल्लाह कहना, और छींकने वाला जब अल्हम्दो लिल्लाह कहे तो उसका जवाब देना, बीमारों की इयादत करना,नमाज-ए-जनाजा पढ़ना फिर दफनाने के लिए जनाजे के पीछे चलना, मस्जिद या घर में प्रवेश करते या निकलते समय शरई आदाब का ख्याल रखना, इसी तरह यात्रा के समय, माता-पिता के साथ, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, छोटे बड़े के साथ, शरई आदाब का ख्याल रखना। बच्चा पैदा होने पर बधाई देना,शादी पर मुबारकबाद देना, मुसीबत में शोक जाहिर करना। इसके अतिरिक्त चीजों में भी इस्लामिक स्वभाव को अपनाना, जैसे कपड़ा पहनने, जूता पहनने व निकालने इतयादि में।

महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ

- (सलाम कहना)इसका पूर्ण रूप यह है(السلام عليكم ورحمة الله وبركاته)। सलाम हर व्यक्ति को करना चाहिए, चाहे उससे आपका परिचय हो या ना हो, और जो सलाम करे उसका जवाब देना फर्ज है।
- (दाहिने हाथ से खाना और पीना) यह वाजिब है, और तीन उंगलियों से खाना चाहिए, रहा दाहिने हाथ से लेन-देन करना, तो यह मुस्तहब है।
- सारे कार्य के शुरू में अल्लाह का नाम लेना, यानी (بسم الله) कहना।
- कार्यों के समाप्त होने पर अल्लाह की प्रशंसा करना,उस दुआ से जो हदीस में आया है, जैसे: (الحمد لله الذي أطعمني هذا ورزقنيه من غير حول مني ولا قوة)

अल्लाह के लिए प्रशंसा है, जिसने मुझे यह खाना खिलाया, और मेरी शक्ति व ताकत के बेगैर मुझे यह आजीविका प्रदान किया।(तिर्मिजी:3458)

– खाने वाले के लिए हुक्म है, कि अपने सामने से खाये, और भोजन का ऐब(दोष)ना निकाले।

– (छींक आने पर अल्लाह की प्रशंसा करना)यानी अल्हम्दु लिल्लाह कहना

– (छींकने वाले का जवाब देना जब वह अल्हम्दो लिल्लाह कहे)यानी जवाब में(يرحمك الله)कहना, तब छींकने वाला जवाब में(يهديكم الله ويصلح بالكم)कहेगा।

– (रोगी की इयादत करना) यानी बार-बार उपयुक्त समय में रोगी से मुलाकात करना, लेकिन उसके पास ज्यादा देर तक ना बैठा जाए, और ना ही उसको अल्लाह की रहमत से मायूस करना चाहिए।

– (नमाज-ए-जनाजा व दफन के लिए जनाजे के पीछे चलना)यह हुक्म पुरुषों के लिए है, महिलाओं के लिए नहीं।

– (मस्जिद या घर में प्रवेश करते या निकलते समय शरई आदाब का ख्याल रखना)और वे इस प्रकार हैं: मस्जिद में प्रवेश करते वकत दाहिना पाँव पहले रखना और कहना:(بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله،اللهم افتح لي أبواب رحمتك) अल्लाह के नाम से प्रवेश करता हूँ, और अल्लाह के रसूल पर दुरूद व सलाम भेजता हूँ, ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोल दे। और मस्जिद से निकलते समय बायां पाँव पहले रखे, और कहे: (بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله،اللهم إني أسألك من فضلك) अल्लाह के नाम से निकलता हूँ, और अल्लाह के रसूल पर दुरूद व सलाम भेजता हूँ, ऐ अल्लाह मैं तेरे फजल में से कुछ चाहता हूँ। और घर में प्रवेश करते व निकलते समय दाहिना पाँव पहले रखे, और निकलते वक्त यह दुआ पढ़े:

"بسم الله، توكلت على الله، ولا حول ولا قوة إلا بالله، اللهم إني أعوذ بك أن أَضِلَّ أو أُضِلَّ، أو أزِلَّ أو أُزِلَّ، أو أَظْلِمَ أو أُظْلَمَ، أو أَجْهَلَ أو يُجْهَلَ عَلَيَّ"

अल्लाह के नाम से निकलता हूँ, और अल्लाह पर भरोसा करता हूँ, कोई शक्ति व ताकत नहीं सिवाय अल्लाह के, ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह में आता हूँ इस बात से कि गुमराह हो जाऊँ या कर दिया जाऊँ फिसल जाऊँ या फिसला दिया जाऊँ, जुल्म करूँ या जुल्म किया जाऊँ, मुर्खता करूँ या किया जाऊँ। और घर में प्रवेश करते समय यह पढ़े:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ، بِسْمِ اللهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللهِ خَرَجْنَا، وَعَلَى اللهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

ऐ अल्लाह मैं तुझसे माँगता हूँ सर्वश्रेष्ठ प्रवेश, और सर्वश्रेष्ठ निकलना, अल्लाह के नाम से हमने प्रवेश किया, और अल्लाह के नाम से हम निकले भी, और अपने रब पर हमने पूरा भरोसा किया। फिर अपने परिवार वालों पर सलाम कहे।

—(शादी में मुबारकबाद देना)अर्थात यह दुआ कहना:

بَارَكَ اللهُ لَكُمَا، وَبَارَكَ عَلَيْكُمَا، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ

अल्लाह बर्कत पर्दान करे तुम दोनों के लिए, अल्लाह बर्कत नाजिल करे तुम दोनों के ऊपर, और तुम दोनों को भलाई के साथ एकत्रित रखे।

—(मुसीबत में शोक जाहिर करना) और यह शोक सिर्फ तीन दिन तक ही मनाया जा सकता है, उससे अधिक नहीं।

सत्रहवाँ पाठ

शिर्क और तमाम प्रकार के गुनाहों से चेतावनी

हर मुसल्मान को शिर्क और तमाम प्रकार के गुनाहों से डरना और डराना चाहिए, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: सात विनाशकारी गुनाह, और वह हैं: अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, ऐसी जान की हत्या करना जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाय हक रास्ते के, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जिहाद के मैदान से भागना, व्यभिचार से बेखबर,पवित्र मोमिन महिलाओं पर तुहमत लगाना। **और** उन्ही में से यह भी है: माता-पिता की अवज्ञा करना, रिश्तेदारों से दूरी बनाना, झूटी गवाही देना, झूटी कसम खाना, पड़ोसी को तक्लीफ देना, लोगों के ऊपर उनके जान, धन व इज्जत में अन्याय करना, शराब पीना, जुआ खेलना, गीबत करना, चुगल्खोरी करना, और वह तमाम कार्य जिनसे अल्लाह तआला या उसके रसूल(ﷺ)ने मना फरमाया है।

महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ:

- (अल्लाह के साथ शिर्क करना) इसमें शिर्के अक्बर और शिर्के अस्गर, दोनों शामिल है।
- (जादू करना)इसी में शुमार होता है: पति पत्नी के बीच दुश्मनी व मुहब्बत पैदा करना। जिसने यह किया या उससे राजी हुआ, तो वह काफिर हो जाता है। और हराम है जादूगरों के पास जाना, उनके वेबसाइट को खोलना, उनके चेनलों को देखना, या ऐसे समाचार पत्र व पत्रिकाओं को पढ़ना जिनमें बुर्जों की बातें हों। और जादू के द्वारा जादू का इलाज कराना ठीक नहीं है, बल्कि उसका इलाज शरई झाड़फूंक, दुआ, और हलाल दवाइयों के जरिए किया जाएगा, जैसे पछना लगाना इत्यादि।
- (ऐसी जान की हत्या करना जिसे अल्लाह ने हराम किया है)चाहे वह जान मुसल्मान का हो, या संधियों वाले काफिर का,या अधीन काफिर का,या सुरक्षा दिये गये काफिरों का।

- (सिवाय हक के) यानी जिनका खून बहाना जायज है, वे तीन प्रकार के लोग हैं: अवैध हत्या करने वाला, विवाहित व्यभिचारी, इस्लाम धर्म को छोड़कर मुसलमानों के समूह से निकल जाने वाला।
- (यतीम)यतीम वह बच्चा है जिसके बालिग होने से पहले उसके पिता का देहांत हो गया हो।
- (जिहाद के मैदान से भागना) इससे मुराद अल्लाह तआला के रास्ते में युद्ध करने वाली फौजें हैं।
- (पवित्र महिलाओं पर तुहमत लगाना)इससे मुराद आजाद औरतें हैं, इसका मतलब विवाहित महिलाएँ नहीं हैं।
- (झूटा कसम खाना)इसी तरह है गैरुल्लाह की कसम खाना। जैसे नबी(ﷺ)की कसम, सम्मान की कसम, जीवन की कसम, कब्रों की कसम, बुढ़ापे की कसम, इतयादि।
- (जुआ खेलना)यानी हर वह मामला जो लाभ और नुक्सान से जूड़ा हो, जैसे लॉटरी।
- (गीबत) नबी(ﷺ)ने उसे इस तरह समझाया: अपने मुसल्मान भाई का इस तरह उल्लेख करना जिसे वह ना पसंद करता हो। (मुस्लिम:2589)
- (चुगलखोरी)गलत इरादे से लोगों के बीच बातों को फैलाना।

प्रतियोगिता व श्रेष्ठता का हुक्म

जो मुआवजा के बिना जायज है, लेकिन मुआवजा के साथ जायज नहीं:	जो हर हाल में हराम है:	जो मुआवजा के साथ और मुआवजा के बिना दोनों जायज है:
वह तमाम प्रतियोगिताएँ जिनका उल्लेख यहाँ नहीं हूआ।	जैसे पांसा और शतरंज इत्यादि खेलना।	जैसे घोड़े, ऊंट, और तीरंदाजी की प्रतियोगिता। नबी(ﷺ)ने फरमाया: कोई प्रतियोगिता नहीं मगर घोड़े, ऊंट, और तीरंदाजी में। (तिर्मिजी:1700)

अठारहवाँ पाठ

मृतकों का कफन दफन, नमाज-ए-जनाजा इत्यादि का तरीका।

इसको नीचे विस्तार से बयान किया जाता है:

पहली बात: मौत के समय लाइलाहा इल्लल्लाह की तल्कीन करना सुन्नत है, जैसे कि नबी(ﷺ)ने फरमाया: अपने मरने वालों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तल्कीन करो। मरने वाले से मुराद यहाँ वे लोग हैं जिन पर मौत की निशानियाँ जाहिर हो चुकी हैं।

दूसरी बात: जब मौत का यकीन हो जाए तो मृतक की दोनों आँखों को बंद कर दिया जाए, और दोनों दाढ़ को मिला दिया जाए, जैसे कि हदीस में आया है।

तीसरी बात: मुसल्मान मैयत को गुस्ल देना वाजिब है, लेकिन अगर शहीद हो, युद्ध में मारा गया हो, तो उसको गुस्ल नहीं दिलाया जाएगा, और ना ही उसपर नमाज पढ़ी जाएगी, बल्कि उसी कपड़े में दफन किया जाएगा। क्योंकि नबी(ﷺ)ने उहुद के शहीदों को न तो गुस्ल दिलाया,और न ही उनपर नमाज पढ़ी।

चौथी बात: मृतक को गुस्ल देने का तरीका: गुप्तांग पर पर्दा डाल दिया जाए, फिर थोड़ा ऊपर उठा कर पेट को नर्मी से दबाया जाए, फिर गुस्ल देने वाला अपने हाथ में कपड़े का टुकड़ा, या उस जैसी कोई चीज लपेट ले,और इस्तिन्जा कराये, फिर उसे नमाज की तरह वुजू कराये, फिर सिर और दाढ़ी को पानी और बेरी के पत्ते, या उस जैसी किसी अन्य चीज से धोये, फिर दाहिने पहलू को गुस्ल दे,फिर बायें को। इसी तरह दूसरी और तीसरी बार गुस्ल देना होगा, और हर बार हाथ को पेट पर से गुजारे, अगर कुछ निकले तो उसे धो दिया जाएगा, और उस जगह को रूई या उस जैसी अन्य किसी चीज से बंद कर दिया जाएगा, अगर उसके बावजूद ना रुके तो शुद्ध मिट्टी या किसी आधुनिक चिकित्सीय उपकरण के माध्यम से बंद करे, जैसे चिपकाने वाला सामग्री।

और दोबारा वुज़ू कराए, अगर तीन बार से सफाई हासिल ना हो, तो पाँच या सात बार गुस्ल दे, फिर कपड़े से पानी को सूखाए, और दोनों बगलों और जांघों के अंदरोनी हिस्सों और सज्दे की जगहों पर खूशबू लगाए, अगर पूरे शरीर पर लगा दे तो बेहतर है। फिर कफन को बुखूर(धूप)से खूश्बूदार करे, अगर उसकी मूंछें और नाखुन लंबे हों तो छोटा करे, अगर छोड़ दिया जाए तो कोई हरज नहीं, और उसके बालों को ना कंघी करे, न नाभि के नीचे के बालों का शेविंग करे, और ना खतना करे, क्योंकि उसपर कोई दलील मौजूद नहीं है, और औरत के बालों की तीन चोटी बनाई जाए, और पीछे लटका दिया जाए।

पाँचवीं बात: मैयत को कफन देना: सबसे अच्छा यह है कि पुरुष को तीन सफेद कपड़ों में कफन दिया जाए, जिसमें कुर्ता और पगड़ी ना हो, जैसे नबी(ﷺ)को कफन दिया गया, और कफन के कपड़े को एक दूसरे में दाखिल कर दिया जाए, और अगर एक कुर्ता, एक लुंगी, और एक लिफाफे में कफन दिया जाए तो कोई हरज नहीं, और औरत को पाँच कपड़े में कफन दिया जाएगा: कुर्ता, ओढ़नी, तहबंद, और दो लिफाफे, और बच्चे को एक से तीन कपड़े में कफन दिया जाएगा, और बच्ची को एक कुर्ता और दो लिफाफे में कफन दिया जाएगा। और सभों के हक में एक ही कपड़ा वाजिब है, जो मैयत के पूरे शरीर को छुपा सके।

लेकिन अगर मैयत इहराम की हालत में हो,तो पानी और बेरी के पत्ते से गुस्ल दिया जाये, और उसी तहबंद व चादर में, या उन दोनों के सिवा कुछ हो तो उसमें कफन दिया जाए, उसके सिर और चेहरे को ढांका नहीं जाएगा, और ना खूशबू लगाया जाएगा, क्योंकि वह क्यामत के दिन लब्बैक कहते हूए उठाया जाएगा। जैसे कि सही हदीस से साबित है।

अगर इहराम की हालत में औरत का देहांत हो, तो उसे दूसरों की तरह कफन दिया जाएगा, लेकिन खूशबू नहीं लगाया जाएगा, और ना ही चेहरे को नकाब से छुपाया जाएगा, और ना दोनों हाथों को दस्ताने से।

लेकिन चेहरे और दोनों हाथों को उसी कफन से छुपाया जाएगा,जो उसे पहनाया गया है, जैसा कि औरतों को कफनाने के बयान में गुजर चुका है।

छठी बात: मृतक को गुस्ल देने, नमाज-ए-जनाजा पढ़ाने, और दफ्न करने का सबसे ज्यादा हक्दार वह व्यक्ति है, जिसके बारे में मृतक ने वसीयत की है,फिर उसका बाप, फिर दादा, फिर अस्बा में से करीब तरीन आदमी, यह पुरुषों के बारे में है। और महिला को गुस्ल देने का ज्यादा हकदार वह है, जिसके बारे उसने वसीयत की है, फिर उसकी माँ, फिर दादी व नानी, फिर महिलाओं में जो उससे ज्यादा करीब हो। पति पत्नी का हुक्म यह है कि, एक दूसरे को गुस्ल दे सकते हैं, इसलिए कि अबूबक्र सिद्दीक(ﷺ)को उनकी बीवी ने गुस्ल दिया, और अली(ﷺ)ने अपनी बीवी फातिमा को गुस्ल दिया।

सातवीं बात: मैयत पर नमाज-ए-जनाजा पढ़ने का तरीका: चार बार तक्बीर कहे, पहली तक्बीर के बाद सूरह फातिहा पढ़े, अगर उसके साथ कोई छोटी सूरह या, एक दो आयत पढ़ ले तो अच्छी बात है, जैसा कि इब्ने अब्बास(ﷺ)से इस बारे में रिवायत मौजूद है। फिर दूसरी तक्बीर कहे, और नबी(ﷺ)पर दुरूद पढ़े, जिस तरह तशह्हुद में पढ़ा जाता हैं। फिर तीसरी तक्बीर कहे, और यह दुआ पढ़े:

"اللهم اغفر لحينا وميتنا، وشاهدنا وغائبنا، وصغيرنا وكبيرنا، وذكرنا وأنثانا، اللهم من أحييته منا فأحيه على الإسلام، ومن توفيته منا فتوفه على الإيمان، اللهم لا تحرمنا أجره، ولا تضلنا بعده"

ऐ अल्लाह क्षमा प्रदान कर हमारे जिंदों और मृतकों को, उपस्थितों और अनुपस्थितों को, छोटे और बड़ों को, पुरुषों व महिलाओं को, ऐ अल्लाह हम में से जिसे तू जिंदा रखे, उसे इस्लाम पर जिंदा रखना, और जिसे मृत्यु दे उसे ईमान पर मृत्यु देना(अबूदाऊद:3201)। फिर यह दुआ पढ़े:

اللهم، اغفر له وارحمه وعافه واعف عنه، وأكرم نزله، ووسع مدخله، واغسله بالماء والثلج والبرد، ونقه من الخطايا كما نقيت الثوب الأبيض من الدنس، وأبدله دارا خيرا من داره، وأهلا خيرا من أهله وزوجا خيرا من زوجه، وأدخله الجنة وأعذه من عذاب القبر وعذاب النار"

ऐ अल्लाह इसे क्षमा कर दे, इस पर रहम फरमा, इसे आफियत में रख, इसे दरगुजर फरमा, इसकी बेहतरीन मेहमाननवाजी फरमा, इसकी कब्र

का विस्तार करदे, उसके गुनाहों को पानी,ओलों,और बर्फ से धो डाल, उसे गुनाहों से इस तरह साफ करदे जैसे सफेद कपड़े को मैल से पाक साफ किया जाता है, उसके दुनिया वाले घर से बेहतर घर, उसके परिवार से अच्छा परिवार, और उसकी जोड़ी से अच्छी जोड़ी प्रदान कर, उसको जन्नत में दाखिल कर दे, और कब्र के अजाब व जहन्नम के अजाब से बचा(मुस्लिम:963) फिर चौथी तक्बीर कहे, और दाहिने जानिब एक ही सलाम फेरे, और मुस्तहब यह है कि हर तक्बीर के साथ हाथ उठाये। अगर मैयत महिला है तो कहा जाए(اللهم اغفر لها...الخ)। और अगर जनाजा दो व्यक्ति का है तो कहा जाए(اللهم اغفر لهما...الخ)। और अगर जनाजा दो से ज्यादा व्यक्ति का है तो कहा जाए(اللهم اغفر لهم...الخ)। और अगर जनाजा बच्चे का हो तो उस दुआ के बदले यह कहे:

"اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطًا وَذُخْرًا لِوَالِدَيْهِ، وَشَفِيعًا مُجَابًا، اللَّهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِينَهُمَا، وَأَعْظِمْ بِهِ أُجُورَهُمَا، وَأَلْحِقْهُ بِصَالِحِ سَلَفِ الْمُؤْمِنِينَ، وَاجْعَلْهُ فِي كَفَالَةِ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ الصَّلاةُ وَالسَّلامُ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيمِ"

ऐ अल्लाह उसे बना दे,उसके माता-पिता के लिए, आगे पहूँचने वाला, नेकी का जखीरा, शिफारिश करने वाला, और जिसकी शिफारिश कबूल की गई हो। ऐ अल्लाह उसके द्वारा दोनों के मीजान को भारी कर दे, और उसके द्वारा दोनों की नेकी को बड़ा कर दे। और उसको मोमिनों के नेक पुर्वजों से मिला दे, और उसको इब्राहीम(عليه السلام)की किफालत में करदे, और उसको अपनी रहमत से जहन्नम के अजाब से बचा ले।

और सुन्नत यह है कि अगर पुरुष का जनाजा हो, तो इमाम उसके सिर के सामने,और अगर महिला का हो तो उसके बीच में खड़ा होगा, और अगर सामूहिक जनाजा हो, तो पुरुष का जनाजा इमाम के नज्दीक और महिला का आगे किब्ला की तरफ होगा। अगर साथ में बच्चे का जनाजा हो, तो उसे महिला के जनाजा से पहले रखा जाएगा, फिर औरत का फिर बच्ची का रखा जाएगा। और बच्चे का सिर पुरुष के सिर के बराबर होगा, और औरत का दरमियानी हिस्सा मर्द के सिर के बराबर में होगा।

इसी तरह बच्ची का सिर महिला के सिर के बराबर में होगा, और बच्ची का दरमियानी हिस्सा मर्द के सिर के बराबर में होगा। और तमाम नमाजी इमाम के पीछे खड़े होंगे, लेकिन अगर कोई इमाम के पीछे जगह ना पाये, तो वह इमाम के दाहिनी तरफ खड़ा हो सकता है।

आठवीं बात: मैयत को दफ्न करने का तरीका: हुक्म यह है कि कब्र को कमर तक की गहराई में खोदा जाए, और किब्ला की तरफ उसमें लहद (बुगली)हो, मैयत को उसके दाहिने पहलू पर लहद में रखा जाए, और कफन की गिरह खोल दिया जाए, और उसे निकाला ना लिया जाए, बल्कि उसी में छोड़ दिया जाए। और चेहरा ना खोला जाए, चाहे मैयत पुरुष हो या महिला। फिर उस पर कच्ची ईंट खड़ी की जाए, फिर मिट्टी से भर दिया जाए, ताकि खड़ा रहे, और मिट्टी उसमें दाखिल ना हो। अगर कच्ची ईंट उपलब्ध ना हो, तो दूसरी चीजें जैसे तख्ती, पत्थर, या लकड़ी से बंद कर दिया जाए, और उस पर मिट्टी डाल दी जाए,मुस्तहब यह है कि मैयत को कब्र में उतारते समय(بسم الله وعلى ملة رسول الله ﷺ)कहा जाए, और कब्र को एक बालिश्त तक ऊँची की जाए। अगर संभव हो तो कब्र पर छोटे पत्थर रख दिये जाएँ, और पानी का छिड़काऊ कर दिया जाए।

जनाजे में शरीक लोगों के लिए हुक्म है, कि वे मैयत को दफ्न करने के बाद उसकी कब्र के पास खड़े होकर उसके लिए दुआ करें, क्योंकि जब नबी(ﷺ) दफ्न करने से फारिग हो जाते थे, तो कब्र के पास खड़े हो जाते और कहते: अपने भाई के लिए क्षमा की प्रार्थना करो, और उसके साबित कदम रहने के लिए दुआ करो, क्योंकि अभी उससे पूछा जा रहा है।(अबूदाऊद:3221)

नौवीं बात: जिसने नमाजे जनाजा नहीं पढ़ी, उसके लिए हुक्म है कि दफ्न के बाद नमाज पढ़ ले, क्योंकि नबी(ﷺ)ने ऐसा किया है। यह तब होगा जब यह एक महीने के अंदर हो, अगर उससे ज्यादा अवधि गुजर जाए, तो कब्र पर जनाजा पढ़ना जायज नहीं, क्योंकि नबी(ﷺ)से साबित नहीं कि किसी कब्र पर एक महीना गुजर जाने के बाद नमाज-ए-जनाजा पढ़ी हो।

दसवीं बात: मैयत के परिवार वालों के लिए जायज नहीं कि वे लोगों के लिए खाना बनायें, जैसा कि महान सहाबी जरीर बिन अबदुल्लाह अल-बजली(ﷺ)फरमाते हैं कि: हम लोग मैयत को दफन करने के बाद उसके घर पर एकत्रित होने और खाना बनाने को नियाहा में शुमार करते थे।(अहमद:6905)
लेकिन मैयत के परिवार वालों का अपने लिए या अपने मेहमानों के लिए खाना बनाने में कोई हरज नहीं है। और मैयत के रिश्तेदारों व पड़ोसियों को चाहिए है कि उनके लिए खाना बनायें, क्योंकि नबी(ﷺ)को जब जाफर(ﷺ)के मुल्क-ए-शाम में शहीद होने की खबर पहूँची तो अपने परिवार वालों को हुक्म दिया कि जाफर(ﷺ)के परिवार वालों कि लिए खाना बनाएं, और फरमाया कि: उन पर ऐसी मुसीबत आई है जो उन्हें व्यस्त कर दिया है।(तिर्मिजी:998)
मृतक के परिवार पर कोई हरज नहीं कि वे अपने पड़ोसियों या दूसरों को उस भोजन को खाने के लिए बुलाए जो उनहें भेजा गया है, और उसके लिए शरीअत की तरफ से कोई निश्चित समय मुतैयन नहीं है।
ग्यारहवीं बात: महिला के लिए जायज नहीं कि किसी भी मैयत पर तीन दिन से ज्यादा सोग मनाये, सिवाय उस महिला के जिसके पती का देहांत हुआ हो,तो उस पर वाजिब है कि चार महीने और दस दिन सोग मनाये, लेकिन अगर वह गर्भवती है, तो बच्चा पैदा होने तक। क्योंकि यही नबी(ﷺ)से सही हदीस में साबित है। और पुरुष के लिए किसी पर भी सोग मनाना जायज नहीं, चाहे वह रिश्तेदार हो या और कोई।
बारहवीं बात: पुरुषों के लिए हुक्म है कि कभी-कभी कब्रों की जियारत कर लिया करें, कब्र वालों के लिए दुआ करने, दया का प्रार्थना करने, और मौत व उसके बाद को याद करने के उद्देश्य से। क्योंकि नबी(ﷺ)ने फरमाया: कब्रों की जियारत करो, वह तुम्हें आखिरत की याद दिलाएगी।(इब्ने माजा:1569)
नबी(ﷺ)अपने साथियों को सिखाते थे कि जब कब्रों की जियारत करें तो यह कहें:

" السلام عليكم أهل الديار من المؤمنين والمسلمين، وإنا إن شاء الله بكم لاحقون، نسأل الله لنا ولكم العافية، ويرحم الله المستقدمين منا والمستأخرين"(صحيح مسلم:975)

अनुवाद:आप सब पर सलामती हो, ऐ इस दियार में रहने वाले मोमिनो और मुसल्मानो,अगर अल्लाह ने चाहा तो हम भी आप से आ मिलने वाले हैं, हम आप सब के लिए और अपने लिए अल्लाह से आफियत चाहते हैं, अल्लाह हम में से पहले वालों और बाद वालों पर रहम फरमाये।

रही बात महिलाओं की तो उनके लिए कब्रों की जियारत का हुक्म नहीं है, क्योंकि नबी(ﷺ)ने कब्र की जियारत करने वालियों पर लानत भेजी है।(तिर्मिजी:320) और इसलिए भी कि उनकी जियारत से फितने का अंदेशा और सब्र खोने का डर रहता है। इसी तरह उनके लिए जायज नहीं कि जनाजा के पीछे चलकर कब्रिस्तान तक जाएँ, क्योंकि नबी(ﷺ)ने इस से मना फरमाया है। लेकिन अगर मस्जिद में नमाज-ए-जनाजा पढ़ी जाए तो उसमें शरीक होना पुरुषों व महिलाओं सब के लिए सुन्नत है।

هذا آخر ما تيسر جمعه، وصلى الله على نبينا محمد وآله وصحبه وسلم.

कब्र के जियारत की किस्में

शिर्क वाली जियारत: अगर कब्र वाले से कुछ माँगने की नीयत से जियारत किया हो तो यह शिर्क वाली जियारत है।

बिद्अत् वाली जियारत: अगर कब्रों के पास अल्लाह से दुआ करने की नीयत से जियारत किया हो तो यह बिद्अत वाली जियारत है।

शरई जियारत: आखिरत को याद करने की नीयत से जियारत किया हो, जियारत के लिए यात्रा ना किया हो, और मृतकों व खूद के लिए दुआ करने की नीयत रखा हो, और शरीअत विरोधी कोई कार्य ना किया हो।

गुजरे हूए पाठों से संबंधित प्रश्न

1. राष्ट्रीय नियम और इस्लामिक स्वभाव की हिफाजत करना मुसल्मान का अख्लाक होना चाहिए। (सही- गलत)
2. मेरा धर्म मुझे आदेश देता है कि मैं बुरे लोगों की संगत इख्तियार करूँ, और नेकों से दूर रहूँ। (सही- गलत)
3. इसलाम ने हमें सिखाया है कि अपने खादिमों और श्रमिकों के साथ अच्छा व्यवहार करें। (सही- गलत)
4. जो व्यक्ति दूसरों को जुबान और हाथ से तक्लीफ देता है मुझे उसकी संगत इख्तियार करनी चाहिए। (सही- गलत)
5. अगर मुझे कोई गाली दे तो मुझे जवाब में उसे गाली देना और आनंद लेना चाहिए। (सही- गलत)
6. इस्लाम ने मुझे सिखाया है कि जरूरत मंदों और कमजोरों की सहायता करूँ। (सही- गलत)
7. एक मुसल्मान का दूसरे मुसल्मान पर हक है कि उसकी बीमारी में उससे मुलाकात करे, और शिफा के लिए दूआ करे। (सही- गलत)
8. पड़ोसियों के भेदों तक पहूँचना मोमिनों के गुणों में से है। (सही- गलत)
9. अल्लाह के नज्दीक सबसे प्यारा व्यक्ति वह है ,जो लोगों के लिए अधिक लाभकारी हो। (सही- गलत)
10. घर से निकलने की दुआ है: (بِسْمِ اللهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللهِ خَرَجْنَا وَعَلَى رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا)। (सही- गलत)
11. जो मेरे छींक का जवाब देगा उसे कहूँगा(يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ)। (सही- गलत)
12. अजकार,मुसल्मान की हिफाजत करते हैं और उसे अल्लाह से करीब करते हैं। (सही- गलत)
13. मुसलमान भाई के लिए आपकी मुहब्बत की पहचान किया है?

---

14. जो चीजें ईमान की कमी पर दलालत करती हैं, उन्ही में से एक है, अपने मुसलमान भाई से हसद करना। (सही- गलत)
15. मुहब्बत पैदा होने के कारण क्या हैं?
---
16. मादक द्रव्यों में हराम वह चीज है जिसे शराब कहते हैं। (सही- गलत)
17. खाने पीने की चीजों में फूँक मारना मकरूह है। (सही- गलत)
18. खाने से फारिग होने के बाद और हाथ धोने से पहले उंगलियों का चाटना मुस्तहब है। (सही- गलत)
19. खाने पीने और पोशाक में बीच की राह इख्तियार करना सही तरीका है। (सही- गलत)
20. मैयत को गुस्ल देने, नमाजे जनाजा पढ़ाने, और दफ्न करने का सबसे ज्यादा हकदार ----------है, फिर----------फिर----------फिर----------
21. मैयत की तरफ से कर्ज की अदायगी: O वाजिब है। O सुन्नत है। O जायज है।
22. मैयत को दफन करने का हुक्म: O वाजिब है। O सुन्नत है। O फर्जे किफाया है।
23. मृत्युरोग में(لا إله إلا الله)की तल्कीन करना: O वाजिब है। O सुन्नत है। O हराम है।
24. मैयत को गुस्ल देने वाले लोगों के सिवा दूसरों का मौजूद रहना:
    O हराम है। O जायज है। O मकरूह है।
25. मैयत को कब्र में रखने के बाद कफ्न का बंधन खोल दिया जाएगा। (सही- गलत)
26. पति और पत्नी एक दूसरे को गुस्ल नहीं दे सकते, इसलिए कि देहांत के बाद निकाह टूट जाता है। (सही- गलत)
27. पुरुष व महिला के लिए जायज है कि उनको गुस्ल दे जो----------
28. जिसकी नमाजे जनाजा छूट गई वह----------पढ़ सकता है, और यह ----------की अवधि में होना चाहिए।
29. मैयत पर रोना हर हाल में जायज है। (सही- गलत)
30. मैयत को लहद(कब्र)में किब्ला रुख करके रखा जाएगा। (सही- गलत)

विषय सूचि

लेखक के मुकद्दमे की व्याख्या----------(2)
पहले पाठ की व्याख्या: सूरह फातिहा और छोटी सूरतें----------(4)
तैसीरुल करीम अर-रहमान का कुछ अंश----------(6)
मुकद्दमा और तफ्सीर से संबंधित कुछ प्रश्न----------(39)
दूसरे पाठ की व्याख्या: इसलाम के अरकान----------(51)
तीसरे पाठ की व्याख्या: ईमान के अरकान----------(59)
चौथे पाठ की व्याख्या: तौहीद व शिर्क के प्रकार ----------(64)
पाँचवीं पाठ की व्याख्या: इहसान----------(69)
तौहीद से संबंधित प्रश्न----------(70)
छठे पाठ की व्याख्या: नमाज की शरतें----------(74)
सातवें पाठ की व्याख्या: नमाज के अरकान----------(78)
आठवें पाठ की व्याख्या: नमाज के वाजिबात----------(80)
नौवें पाठ की व्याख्या: तशहहुद का बयान----------(81)
दसवीं पाठ की व्याख्या: नमाज की सुननतें----------(83)
गयारहवें पाठ की व्याख्या: नमाज को बातिल करने वाली चीजें----------(86)
सजदाए सुहू के अहकाम----------(88)
नमाज का तरीका तस्वीरों के द्वारा ----------(89)
नमाज और उसके अहकाम का सारांश----------(99)
नमाज से संबंधित प्रशन----------(102)
बारहवें पाठ की व्याख्या: वुजू की शर्तें----------(105)
तेरहवें पाठ की व्याख्या: वुजू के फरायेज----------(107)
चौदहवें पाठ की व्याख्या: वुजू को तोड़ने वाली चीजें----------(108)
वुजू का तरीका तस्वीरों के जरिए----------(110)

पवित्रता के संबंध में कुछ बातें----------(113)
पवित्रता के संबंध में कुछ प्रशन----------(117)
जकात के प्रावधानों से संबंधित कुछ बातें----------(120)
जकात से संबंधित कुछ प्रश्न----------(125)
रोजे से संबंधित कुछ बातें----------(128)
रोजे से संबंधित कुछ प्रश्न----------(135)
हज्ज व उमरा से संबंधित कुछ बातें----------(137)
हज्ज से संबंधित कुछ प्रश्न----------(146)
पंदरहवें पाठ की व्याख्या: नैतिक चरित्र से आरास्ता होना----------(148)
सोलहवें पाठ की व्याख्या: इसलामी आदाब को अपनाना----------(149)
सतरहवें पाठ की व्याख्या: शिर्क और गुनीहों से चेतावनी----------(152)
अठारहवें पाठ की व्याख्या: मैयत का कफन दफन व जनाजा----------(154)
इसलामी आदाब और जनाजे से संबंधित प्रश्न----------(161)
विषय सूचकांक----------(163)
सन्दर्भ पुस्तकों की सूची----------(165)

सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

1- पवित्र कुरआन, हफ्स की रिवायत के साथ, जो आसिम से किया है।

2- "सही बुखारी" लेखक मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुखारी मृत्युवर्ष (256हिज्री)

3- "सही मुस्लिम" लेखक मुस्लिम बिन हज्जाज अन-नेसापूरी,मृत्युवर्ष(261हिज्री)

4- "अस्-शरहुल मुमतेअ अला जादिल मुस्ताक्नेअ" लेखक शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन, मृत्युवर्ष (1421 हिज्री)।

5- "अल-कौलुल-मुफीद अला किताबित्-तौहीद" लेखक शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमिन, मृत्युवर्ष (1421 हिज्री)।

6- "तैसीर अल-करीम अर-रहमान फी तफ्सीरे कलामिल-मन्नान" लेखक शैख अब्दुर रहमान बिन नासिर अस-सादी, मृत्युवर्ष (1376 हिज्री)।

हिंदी अनुवाद

شرح متن
الدُّروس المهمَّة لعامَّة الأمَّة
आम जनता के लिए महत्वपूर्ण पाठ

लेखक: शैख इमाम अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज(رحمه الله)

व्याख्याकर्ता

शैख हैथम बिन मुहम्मद जमील सरहान(حفظه الله)

पूर्व शिक्षक अल-हरम शिक्षण संस्थान, मस्जिदे नबवी

अनुवादक

डॉ. मुजाहिदुल इस्लाम मदनी

Email: islamtorrent@gmail.com
Facebook: attassee.alelmi
Website: www.saarhan.net
Twitter: attasseelalelm1